(सर्व भूत हिते रताः)

परमार्थ बिन्दु



लेखक - आनन्द

सजिल्द दोनों भाग मूल्य १।)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(सर्व भूत हिते रताः)

परमार्थ बिन्दु



लेखक - आनन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सर्व भूत हितेरताः

"परमार्थ-विन्दु"

लेखक—

"आनन्द"

(मुमुक्षु आश्रम शाहजहाँपुर)

प्रथमबार
३०००

सम्वत् २००८ वि०

मूल्य ।=)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निवेदन

प्रातः स्मरणीय पूज्य श्री गुरुदेव एवं संत-महापुरुषों के उपदेशों तथा सद्ग्रन्थों के मनन से वास्तविक सुख-शान्तिप्रद जिन गूढ़ तत्वों की प्राप्ति हुई है, उन्हीं को प्रिय पाठकों के हितार्थ सरल एवं सुबोध भाषा में दृष्टान्तीय रोचक शैली द्वारा परमार्थ के प्रत्येक अङ्क में 'परमार्थ-विन्दु' के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा है। प्रेमी पाठकों के विशेष आग्रह पर सर्व साधारण के हित के लिये उन्हीं सूत्रों का संग्रह प्रस्तुत पुस्तक में कर दिया गया है।

मेरा विश्वास है कि जो सज्जन इन सूत्रों को श्रद्धा पूर्वक पढ़कर दैनिक व्यवहार में लायेंगे उनको सदा आनन्द (दुःख रहित सुख) की प्राप्ति अवश्य होगी।

'आनन्द'

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri



मनमोहन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परमार्थ बिन्दु-संग्रह

प्रथम भाग

१

विचार करो—सीज़न (Season) में प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने व्यवसाय में ऐसे संलग्न रहते हैं कि उन्हें सर्दी—गर्मी, तकलीफ-आराम, भूख-प्यास आदि किसी बात की सुधि नहीं रहती। जानते हो वे इतना कष्ट क्यों सहन करते हैं ?, इस लिये कि अभी सीज़न (Season) में थोड़ा कष्ट उठाकर भी जो कर लिया सो कर लिया; फिर बहुत अधिक कष्ट उठानेपर भी ऐसा अवसर कहाँ—फिर तो बैठकर खाना ही है। इसी प्रकार, याद रक्खो, यह मनुष्य योनि प्राप्त होजाना ही जीव के लिये एक प्रकार का सीज़न है। इस मनुष्य-योनि में ही यदि कुछ तनिक सा कष्ट उठाकर परम पुरुषार्थ द्वारा परमात्मा की प्राप्ति करली तो फिर सदैव के लिये आनन्द ही आनन्द है। यदि आलस्य प्रमाद वश शेष आयु में भी कुछ नहीं किया तो फिर अन्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

योनियों (सूकर, कूकर, चील, छिपकली, कीट--पतंग आदि) में कुछ भी नहीं कर सकेंगे। फिर पछताना होगा।

फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

२

विचार करो—कोई महात्मा कृपा करके हमें कुछ दिनों के लिये पारस की बटिया दे दे और हम उस बटिया से लोहा स्पर्श करवाकर स्वर्ण तो बनायें नहीं—परन्तु सिलपर मसाला पीसने के काम लेवें तो क्या यह हमारी मूर्खता नहीं ? अवश्य है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो — जो प्राणी इस देव दुर्लभ मनुष्य योनि को पाकर भी यदि भगवत्प्राप्ति तो करता नहीं पर सारी आयु भोगों की प्राप्ति में ही नष्ट कर रहा है वह मूर्ख नहीं तो और क्या ?

३

विचार करो—बच्चे के सामने एक १००) सौ रुपये का नोट रखो और पास ही बढ़िया रंगीन एक आने वाला चित्र रखो। बच्चा १००) सौ रुपये का नोट नहीं उठायेगा, वह उठायगा एक आने वाला रंगीन चित्र। बीस वर्ष बाद फिर उसके सामने वे ही दोनों वस्तुयें रक्खो—इस बार वह चित्र नहीं उठायगा वह उठायगा १००) का नोट। कारण जानते हो इसका ? इसका कारण है कि जब वह बच्चा था—तब वह अज्ञानी था—पदार्थों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

की रमणीयता में ही सुखी था परन्तु जब वह बड़ा हो गया तो उस में समझ आगई—अब वह केवल ज्ञानेन्द्रियों से नहीं देखता, बुद्धि के नेत्रों से भी देखता हैं। इसी प्रकार, याद रक्खो जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा रमणीय दीखने वाले पदार्थों में ही सुख मान रहा है वह अज्ञानी है पर जो ज्ञानेन्द्रियों से रमणीय दिखने वाले भोग पदार्थों में भी बुद्धि के नेत्रों द्वारा उचित अनुचित, सत्-असत् की जाँचकर सुख-दुःख देखता है वही ठीक देखता है।

४

विचार करो—कड़वी दवाई पीने से कुछ क्षण तक कष्ट तो अवश्य होता है पर परिणाम में रोगी का कई दिनों का ज्वर तो नष्ट हो ही जाता है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो यदि इस शरीर के रहते हुए कुछ काल तक कष्ट उठाकर साधन करलिया तो भगवत् प्राप्ति हो जायगी अन्यथा ८४ लाख योनियों में बारम्बार जन्म मृत्यु जरा व्याधि का दुःख अवश्य उठाना पड़ेगा।

५

विचार करो—नाव जब भँवर में पड़ जाती है तो क्या स्त्री, पुत्र, धन ऐश्वर्य, पद-अधिकार आदि कोई भी काम आता है? कोई नहीं आता, केवल तैरने की विद्या यदि हम जानते हैं तो हमारे प्राणों की रक्षा हो जायगी। इसी प्रकार यदि तुमने मृत्यु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के पहिले-पहिले इस भवसागर से तरने की विद्या अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर से प्रेम नहीं कर लिया तो, विश्वास रखो, अन्त समय तुम्हारा यह दिखावटी ठाठ, वेष-भूषा, चतुराई पंडिताई आदि सब कुछ भी काम न आयगी।

६

विचार करो—जब एक साधारण पुरुष की पत्नी से भी यदि कोई अन्य पुरुष प्रेम करना चाहता है तो उसका पति उस अन्य पुरुष पर कितना क्रुद्ध होता है? कई-कई तो मरने मारने पर तैयार हो जाते हैं। फिर भला सोचो तो सही उस सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान, पुरुषोत्तम प्रभु की पत्नी अर्थात् लक्ष्मी से ही जो प्रेम करना चाहता है, क्या भगवान् उन पर प्रसन्न होते होंगे? कदापि नहीं। विश्वास नहीं तो रावण का हाल पढ़ लो—वह भी तो केवल भगवान् की पत्नी से ही प्रेम करना चाहता था—सो क्या फल पाया? हनुमान जी ने लंका जलादी और *'रहा न कोउ कुल रोवन हारा'*। हाँ यदि लक्ष्मी को चाहते हो तो सबसे सरल उपाय है कि भगवान् को अपना लो, लक्ष्मी तो दौड़ी आयेगी उनके चरण दबाने को।

७

विचार करो—एक ही जलाशय में रहने वाला मेंढक कमल से कोई लाभ नहीं उठा पाता, पर दो मील दूर से आकर भौंरा उस कमल से खूब आनन्द लूटता है। कारण जानते हो?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कारण है भौंरे की कमल से अटूट श्रद्धा और दृढ़ प्रेम। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, जब तक किसी संत-महात्मा में अटूट श्रद्धा और दृढ़ प्रेम नहीं होगा तब तक तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता, चाहे वह सन्त-महात्मा दिन रात तुम्हारे समीप ही क्यों न बने रहें। यह सम्भव है कि दूर दूर से अन्य सज्जन आकर अपना उनसे मनोरथ सिद्ध करलें।

८

विचार करो—जूता पैर के लिये है या पैर जूते के लिये? यदि जूता छोटा पड़ जाय तो क्या पैर कटवाना चाहिये कि जूता बड़ा बनवाना चाहिये? इसी प्रकार याद रक्खो, स्त्री-पुत्र धन ऐश्वर्य, मान प्रतिष्ठा आदि ये सारे सांसारिक भोग तुम्हारे लिये हैं न कि तुम इन भोगों के लिये। अस्तु इन सांसारिक भोगों के लिये अपने परम कर्तव्य (अर्थात् भगवत् प्राप्ति) से च्युत हो जाना सरासर मूर्खता नहीं तो और क्या?

९

विचार करो—हरिद्वार ऋषीकेश तक गंगा जी में खूब जोरों से 'कल कल' की आवाज सुनाई देती है, पर हरिद्वार के आगे गंगासागर तक गंगा जी बिलकुल शान्त बहती है। जानते हो क्यों? इसलिये कि हरिद्वार तक उसके तह में कई रोड़े पत्थर भरे रहते हैं, आगे नहीं। इसी प्रकार, याद रक्खो, जब तक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हमारे हृदय में कामनायें रहेंगी तब तक तर्क वितर्क, अशान्ति उद्विग्नता, राग द्वेष, आदि रहेगा। जब सब कामनायें— सूक्ष्मातिसूक्ष्म कामना भी न रहेगी तब ही परम शान्ति की प्राप्ति होगी।

१०

विचार करो—यदि आशा लगाये बैठे हों कि "यह कार्य करके फिर निश्चिन्त होकर भजन सत्संग करेंगे" तो यह सरासर भूल है। जैसे तराजू में दस सेर मेंढक तोलना कठिन ही नहीं असम्भव है, क्योंकि जब तक पाँच मेंढक पलड़े में रखोगे तब तक उसमें से दस फुदक जाँयगे। इसी प्रकार माया के कार्य चाहो कि पूरे हो जायँ सो पूरे होना कठिन ही नहीं असम्भव है। लड़की का विवाह किया तो औरत बीमार पड़ गई—औरत ठीक हुई तो गाय खोगई—गाय मिली तो दीवार गिर गई आदि आदि एक न एक झंझट आगे से आगे लगा ही रहेगा। अतः भजन सत्संग करना अभी इसी समय से प्रारम्भ कर दो।

११

विचार करो—पुत्र यदि पिता को नित्य प्रणाम भी करे, उनके चरण भी दबावे, फिर थप्पड़ भी मार दे अथवा माँगने पर पानी का लोटा भर कर न दे तो क्या वह पिता उस पर प्रसन्न होगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार जो भगवान् के नाम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का जप भी करते हैं, प्रार्थना भी करते हैं, पाठ भी करते हैं, दान भी देते हैं आदि परन्तु साथ ही साथ भगवान् की आज्ञा का पालन भी नहीं करते (आज्ञा के लिये वेद शास्त्रों में अपना अपना कर्तव्य देखो)—तथा किसी भूत प्राणी को मन से, वचन से व तन से किसी प्रकार कष्ट पहुँचाते हैं क्या उन पर सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित भगवान् प्रसन्न होंगे ? कदापि नहीं भला इसी में है कि, "किसी को दुःख मत दो, बने तो सुख दो।"

१२

विचार करो—भजन सत्संग आवश्यक है या सांसारिक व्यवहार ! जिस प्रकार नाई यदि अपने उस्तरे से बाल ही बनाता रहे उसकी धार सिल्ली पर लगावे नहीं तो कुछ समय पश्चात् बाल बनाना कठिन हो जायगा। और नाई यदि उस्तरा की धार ही लगाता रहे बाल बनावें ही नहीं तो धार लगाना ही व्यर्थ है। और यदि धार लगाकर कटहल काटे तो फिर बाल बनाना तो दूर रहा, उस्तरा ही बेकार हो जायगा। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति सांसारिक व्यवहार ही करता रहे, भजन करे ही नहीं तो व्यवहार भी ठीक-ठीक नहीं कर पायगा। और भजन सत्संग ही करता रहे कर्त्तव्य कर्म की ओर ध्यान ही न दे तो ऐसे भजन से जनता-जनार्दन को क्या लाभ ? और यदि भजन सत्संग भी करे और साथ ही निषिद्ध कर्म भी करे (झूठ,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कपट, दम्भ, चोरी जारी आदि) तो ....??? कुछ तुम समझो कुछ हम समझें !

१३

विचार करो—बैंक में जो रुपया जमा कर रक्खा है, उन्हें प्राप्त करने के लिये क्या दिन-रात पुरुषार्थ करना चाहिये कि और अधिकाधिक रुपया बैंक में जमा कराने के लिये ? बैंक में तुम्हारे (एकाउन्ट) खाते में जो रुपया जमा है वह तो तुम्हें मिल ही जायगा। उसके लिए केवल थोड़े से पुरुषार्थ की आवश्यकता है कि चेक काट कर बैंक समय में भुनवा लो। (याद रहे बैंक खुलने के पहिले रुपया नहीं मिल सकेगा।) इसी प्रकार भोगों की प्राप्ति के लिये अधिक पुरुषार्थ करना व्यर्थ है। क्योंकि भोग तो प्रारब्ध वश प्राप्त होंगे ही पुरुषार्थ करो भजन, सत्संग स्वाध्याय आदि के लिये ताकि इस जन्म के पश्चात् फिर जन्म-मृत्यु के चक्कर में न पड़ना पड़े।

१४

विचार करो—औषधालय में सहस्त्रों औषधियाँ रखी हैं; परन्तु रोगी यदि स्वेच्छा से उनमें से कोई एक औषधि प्रयोग कर लेवे तो लाभ के स्थान पर क्या हानि होने की सम्भावना अधिक नहीं है ? यदि रोगी स्वस्थ होना चाहता है तो उसे योग्य वैद्य द्वारा निर्देश की हुई औषधि का ही प्रयोग करना चाहिये। इसी प्रकार सद्ग्रन्थों में परमार्थ प्राप्ति (सच्ची सुख शान्ति की प्राप्ति) के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अनेक साधन बताये गये हैं, परन्तु मनमुखी होकर साधन करने से लाभ की अपेक्षा हानि होनी संभव है। अतएव परमानन्द की प्राप्ति करा देने वाला वास्तविक साधन वही होगा जो सद्गुरु द्वारा निर्दिष्ट हो।

१५

विचार करो—भगवान् सूर्यनारायण के ठीक-ठीक उदय होने के पूर्व ही अंधेरा नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार विश्वास रखो, भगवान् के सम्मुख होने भर की देर है, सच्चे हृदय से शरण लेने के हेतु भगवान् के सम्मुख हुये कि सारे जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जायेंगे। भगवान् की कृपा तो ढूंढती फिरती है कोई पापी उनके सम्मुख आवे। कहा है:—

"रहमत पुकारती है गुनहगार कहाँ है ?"

१६

विचार करो—आँख मिचौनी खेल के सब बालक चोर-बालक के आगे-आगे दौड़ते हैं पर जो बालक प्रयत्न करके गोल (लक्ष्य) को छू लेता है चोर-बालक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, इसी प्रकार ,निश्चय रखो जब तक भगवत्-प्राप्ति नहीं कर लोगे तब तक इस माया के चक्कर में बेचैन ही रहोगे। भगवत-प्राप्ति कर लेने पर माया तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकेगी।

१७

विचार करो—कोयले का कालापन सौ मन साबुन से धोने पर भी दूर नहीं होता, जानते हो क्यों ? वह बिचारा अग्नि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के वियोग में काला है। कोयले से अग्नि का संयोग करा दो उसका काला पन हट जायगा, वह फौरन चमकने लग जायगा इसी प्रकार याद रखो जीव भी भगवान् के बियोग में दुःखी है, अशान्त है। जीव का भगवान् के साथ मिलाप कर दो, वह सदैव के लिये सुखी हो जायगा।

१८

बिचार करो—अपनी जननी सिंहनी की गोद में बैठा हुआ सिंह का बच्चा क्या कभी हाथियों के झुण्ड से घबराता है? कदापि नहीं। इसी प्रकार जिसने अपने आपको भगवान् की गोद में समर्पित कर दिया है, क्या उसे दुःख शोक भय आदि से घबड़ाना चाहिये? महान् से महान् दुःख, अपमान व शोक के कारण इकट्ठे आजाने पर भी यदि हृदय में किंचित मात्र भी विकार उठ जाय तो समझ लो अभी भगवान् के गोद को शरण ली नहीं; भगवान् को धोखा देने के लिये केवल मुँह ही मुँह से कह रहे हैं:—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव...........................

१६

विचार करो—चीटियों को बुलाने के लिये क्या निमन्त्रण पत्र भेजना पड़ता है? थोड़ी शक्कर फैला दो, सैकड़ों चीटियाँ स्वयं दौड़ी आयेंगी। इसी प्रकार, विश्वास रखो, भगवान् को अपनाने के लिये पदार्थों को जुटानेकी, अथवा ढंद-फंद की आवश्यकता नहीं, अन्तःकरण से सब वासनायें निकाल कर प्रेम से पुकार लो 'हे नाथ'; भगवान् तो दौड़े आयेंगे। सोचो तो सही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मरते समय उस यवन ने तो सूअर को देखकर 'हराम' शब्द उच्चारण किया था। परन्तु दयालु भगवान् ने 'ह' को सुना अनसुना करके शेष 'राम' शब्द के आधार पर ही उसको अपने ही धाम को भेज दिया। देखो उसकी अहैतुकी कृपा!

२०

विचार करो—सेठ अपनी बम्बई वाली दुकान का माल असबाब व रुपया अपनी कलकत्ते वाली दुकान पर भेजे तो क्या बम्बई वाली दुकान के मुनीम को इसके लिए रोना य शोक करना चाहिये? कदापि नहीं। यदि वह ऐसा करता है तो यह उसकी सरासर मूर्खता है। सेठ की खुशी है वह अपनी चीज को चाहे जहाँ रक्खे। इसी प्रकार जो व्यक्ति भगवान् की चीज को अपना मानकर भगवान् के माँगने पर देने से आना-कानी करता है अथवा मन मैला करता है, वह बेईमान है भक्त नहीं। भक्त को तो प्रभु के हर विधान में सदा संतुष्ट रहना चाहिये।

२१

विचार करो—जैसे एक बैरिस्टर और एक अशिक्षित व्यक्ति दोनों कानून के विरुद्ध कोई कार्य करें तो दोनों में विशेष दण्डनीय कौन होगा? बैरिस्टर। क्योंकि वह कानून से परिचित है। उसे विशेष दण्ड मिलना ही चाहिये। इसी प्रकार यदि एक साधारण मनुष्य ही नहीं, एक सत्संगी भक्त यदि भगवान् के नियम विरुद्ध आचरण करता है, कर्त्तव्य कर्म त्याग कर निषिद्ध कर्म करता है जैसे (झूठ, चोरी, छल, कपट, ब्लैक मार्केट आदि) तो क्या उसे विशेष दण्ड नहीं मिलेगा? अवश्य मिलेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

२२

विचार करो—सेठ जी का मुनीम जी को पत्र मिले कि ५०० बोरे चावल खरीद लो, और मुनीम जी ५०० बोरे चावल तो खरीदे नहीं लेकिन नित्य दिन भर उस पत्र का पाठ ही करते रहे कि "५०० बोरे चावल खरीदो," तो क्या सेठ जी उस पर प्रसन्न होंगे? कदापि नहीं। सेठ जी प्रसन्न होने की अपेक्षा बहुत नाराज़ होंगे। इसी प्रकार जो भगवान् के पत्र अर्थात् वेद, शास्त्र गीता तथा संतवाणी आदि का नित्य पाठ तो करते हैं परन्तु उनके अनुसार आचरण नहीं करते, उन व्यक्तियों पर क्या कभी भगवान् प्रसन्न होंगे? कभी नहीं। भगवान् तो प्रसन्न तब होंगे जब पाठ चाहे कम करें, परन्तु तदनुकूल आचरण अवश्य करें।

२३

विचार करो—सोया हुआ मनुष्य चेष्टा करने पर जगाया जा सकता है, किन्तु भला कोई जागता हुआ मनुष्य जो अपनी ही इच्छा से सोने का बहाना कर रहा हो, हजार प्रयत्न करने पर भी कहीं उठ सकता है? कदापि नहीं। इसी प्रकार जो विज्ञ होते हुये भी भगवत्प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ नहीं करते उनका कल्याण होना कठिन ही नहीं असम्भव है।

२४

विचार करो—इस्तीफा (Resignation) देना अच्छा या बरखास्त (Dismiss) किया जाना अच्छा? स्वयं इस्तीफा देना। इसी प्रकार, याद रक्खो, मृत्यु से पहिले-पहिले सांसारिक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वस्तुओं का त्याग नहीं किया तो उस समय महान दुःख होगा जब यह वस्तुएं तुमसे जबरदस्ती छीन ली जायेंगी, इसलिए भला इसी में है कि आज क्या, अभी इसी क्षण से ही शनैः शनैः माया से गाँठ छोड़ना प्रारम्भ कर दो।

२५

विचार करो—नाट्यशाला का पात्र (actor) रंग-मंच पर समयानुसार प्रगट में रोता भी है हँसता भी है परन्तु वास्तव में उस रोने-हँसने का उस पात्र के अन्तस्तल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि वह समझता है कि यह केवल 'नाटक' है इसी प्रकार जो इस संसार को स्वप्नवत् जानकर मर्यादा अनुकूल सभी कर्तव्य-कर्म करते हुए भी भीतर से सुखी दुखी नहीं होता, वही सच्चा कर्मयोगी है।

२६

विचार करो—जुते हुये खेत में यदि बीज डाला जाय तो शीघ्र अंकुरित हो जाता है परन्तु वही बीज यदि सीमेन्ट की सड़क पर डाला जाय तो वह कभी भी अंकुरित नहीं होगा। इसी प्रकार, याद रक्खो, यदि तुम्हारा अन्तःकरण सीमेन्ट रोड की नाई कठोर है कोमल नहीं, शुद्ध नहीं, तो महा पुरुष क्या ब्रह्मा जी के भी उपदेश का कोई लाभ नहीं होगा। यही कारण है कि आज हमारे भाई कई वर्षों से सत्संग भजन कर रहे हैं पर उनको कोई लाभ प्रतीत नहीं होता। अतः पहले सेवा, परोपकार, दान, तप आदि निष्काम कर्म द्वारा अपने अन्तःकरण को शुद्ध करना चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

२७

विचार करो—शरीर की सफाई के लिये जैसे नित्य प्रति प्रातः उठते ही दाँत, तालू, जिह्वा, आँख मुँह, बाल आदि पानी से धोना (शौच स्नान) आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है, इसी प्रकार याद रक्खो भीतरी सफाई (अन्तःकरण की) के लिए नित्य नियमित सत्संग करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

२८

विचार करो—खेत में घास बोयी नहीं जाती अपने आप उत्पन्न हो आती है—परन्तु गेहूँ, चना, धान आदि के लिये पुरुषार्थ करना पड़ता है। इसी प्रकार याद रक्खो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि तो अपने आप ही आजायेंगे परन्तु ज्ञान वैराग्य भक्ति, सत्संग-भजन आदि के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा।

२९

विचार करो—उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई देता इस कारण यदि सारा उल्लू समाज मिल कर यह प्रस्ताव पास करे कि सूर्य-वूर्य कोई है ही नहीं, तो क्या उनके कथनानुसार सूर्य का अस्तित्व मिट जायगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार जो ईश्वर को अपने अज्ञान, अल्पज्ञता के कारण मानते नहीं क्या उनके कथनानुसार ईश्वर का आस्तित्व नहीं रहेगा ? अवश्य रहेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

३०

विचार करो—पागल यदि बक रहा है, गाली दे रहा है निषिद्ध कर्म कर रहा है तो क्या उसके साथ लड़ना चाहिये ? वाद-विवाद बहस करनी चाहिये ? कदापि नहीं। इसी प्रकार याद रक्खो जो मनुष्य माया-मोह में लिपटे विषयाशक्ति सन्निपाती हैं उनसे वाद-विवाद बहस, झगड़ा आदि में व्यर्थ समय और शक्ति नहीं गँवाना चाहिये । उनके बकवाद की परवाह न करके अपने लक्ष्य पर दृढ़ता से बढ़ना चाहिये ।

३१

विचार करो—पिता की सभी क्रियाओं (यथा-बालक के हाथ में से चक्कू छीनना, कोई अंग पीड़ित हो जाने पर आपरेशन भी करवाना, बालक के रोते रहने पर भी स्नान करवा कर नये कपड़े पहिनाना आदि आदि) में बालक का हित ही हित भरा है, इसी प्रकार जब बिना भगवान् की आज्ञा के कोई पत्ता भी नहीं हिल सकता तो हमारे ऊपर कोई कष्ट कैसे आ सकता है। और जब उस पिता ही नहीं परम पिता की आज्ञा से प्राप्त हुए किसी विधान में हमें कष्ट भी प्रतीत होता हो तो विश्वास रक्खो उसमें अवश्य हमारा हित ही है। अपनी अल्पज्ञता के कारण उसे अभी समझ नहीं पाते—यदि सूक्ष्म बुद्धि से विचार करें तो अवश्य ही भगवान् की उस कृपालुता का ज्ञान हो जायगा ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

३२

विचार करो—यदि कोई सिनेमा के पर्दे पर भयंकर या घृणित दृश्य की जगह देशभक्ति या शिक्षाप्रद दृश्य देखना चाहे तो क्या उसे पर्दे का सुधार करना चाहिये अथवा फिल्म का? इसी प्रकार याद रक्खो, यदि इस शरीर पर दुःख की जगह सुख ही सुख चाहते हैं तो शरीर का सुधार नहीं बल्कि भावना का सुधार करना चाहिये।

३३

विचार करो—पतंगे और नदी दोनों का अन्त क्रमशः दीपक की लौ और समुद्र में होता है पर दोनों प्रकार के अन्त में भेद है। पतंगा दीपक की लौ में भस्म (नष्ट) होता है और नदी समुद्र की गोद में लय होती है। इसी प्रकार, विश्वास रखो आसुरी स्वभाव वाले (अर्थात् कामी, क्रोधी, लोभी, कपटी, चोर आदि) का तो नाश होगा और दैवी स्वभाव वाला (भक्त) भगवान् की गोद में लय होगा।

३४

जानते हो—जो पत्थर छेनी-हथौड़े की चोटें सहता है उसी की मन्दिर में पूजा होती है और जो चोटें सहन नहीं करता वह ठोकरें खाता है। इसी प्रकार, निश्चय रखो, जो विश्व की सेवा के लिये (अर्थात् अपने कर्त्तव्य पालन के लिये) कष्ट सहन करेगा वही पूजा जायगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

३५

विचार करो—माली की टोकरी में रखा ताजा गुलाब का फूल तथा कागज से बना गुलाब का फूल, दोनों को देखने पर रंग-रूप में तो कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता, पर वास्तव में गुलाब का फूल वही है जिसमें गुलाब की सी सुगन्ध आती हो, स्पर्श में अति कोमल हो तथा गुलाब के अन्य सभी गुण हों—और, वही भगवान् की पूजा में काम आता है। इसी प्रकार, याद रक्खो, केवल ऊपरी वेष-भूषा (पीला या लाल कपड़े, लम्बी जटा या लम्बे तिलक) से ही कोई 'ब्रह्मचारी' नहीं बन जाता; यथार्थ में सच्चा ब्रह्मचारी वही है जिसमें सत्य, सेवा इन्द्रिय-संयम आदि 'ब्रह्मचारी के गुण हों।

३६

विचार करो—सिंह जंगल का राजा होता है। वह निर्भय उस जंगल में अकेला ही घूमता फिरता है, उसकी गर्जना सुनते ही बड़े-बड़े शूरवीरों के छक्के छूट जाते हैं। शिकारी की गोली के भी वह सम्मुख चलता है पीछे नहीं हटता। जानते हो क्यों ? इसलिये कि वह जीवन में एक बार ही ब्रह्मचर्य खण्डन करता है। लेकिन, हाथी इतना विशाल शरीर रखते हुए भी कायर होता है, डर के कारण अकेला नहीं रहता—झुन्ड में रहता है। यहाँतक कि रात को सोते समय हाथियों के झुन्ड में से एक हाथी पहरा दिया करता है कि कहीं सिंह न आजाय और जहाँ सिंह की गर्जना सुनी कि सब हाथी तितर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बितर हो जाते हैं। क्यों ? इसलिये कि वह बड़े कामी होते हैं। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो जो ब्रह्मचर्य का पूर्णतया पालन करता है वह समस्त संसार के राजा की तरह सदैव निर्भय और मस्त रहता है। सहस्रों कामी पुरुष, चाहे उनका शरीर कितना विशालकाय क्यों न प्रतीत होता हो, ब्रह्मचारी से सदैव डरते रहते हैं।

३७

विचार करो—जिनकी आय १०००) मासिक हो, वह यदि १५००) मासिक खर्च करे तो क्या वह कभी धनवान बन सकता है ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, एक मन भोजन से बनने वाले दो तोला वीर्य को जो अधिक से अधिक एक माह में, एक वार से अधिक ब्रह्मचर्य-खण्डन द्वारा नष्ट करता है वह कभी भी बलवान, बुद्धिमान या विद्वान नहीं बन सकता।

३८

विचार करो—बेचारा बागवान महीनों मेहनत करके एक गाड़ी फूल तैयार कर पाता है जिससे कि केवल एक बोतल इत्र बनता है। उस एक बोतल इत्र की एक तोला रूह बनती है। यदि कोई उस एक तोला रूह को हँसते-हँसते किसी गंदी नाली में उड़ेल दे तो क्या कोई उसे बुद्धिमान कहेगा ? इसी प्रकार जरा सोचो तो सही, जो भोजन हम चालीस दिन में खाते हैं, पच जाने पर उसका एक सेर रक्त बनता है तथा उस एक सेर रक्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का दो तोला वीर्य बनता है। अब भला यदि कोई इस इतने मूल्यवान दो तोला वीर्य को क्षणिक इन्द्रिय-जन्य-सुख के लिये हँसते-हँसते ब्रह्मचर्य-खण्डन द्वारा नष्ट कर दे, तो क्या वह महामूर्ख नहीं ?

३६

विचार करो—भीतर यदि माल गला-सड़ा रद्दी हो और पैकिंग-पालिश खूब बढ़िया हो, तो क्या कोई जानकार उसका कुछ भी मूल्य देगा ? कुछ भी नहीं देगा। अनजान व्यक्ति भले ही पहली बार धोखा खाले। इसी प्रकार, याद रक्खो, ब्रह्मचर्य खण्डन द्वारा भीतर से खोखले बनकर यदि तुम प्राकृतिक सुन्दरता या तेज चाहो तो क्या तुम्हें मिलेगा ? कदापि नहीं। लोगों को चाहे तुम तेल-फुलेल, क्रीम-पाउडर, लाली-लिपस्टिक वा चड़क-भड़क द्वारा भले ही धोखा दे दो—उस घटघट-वासी भगवान् को इस ऊपरी तैल पाउडर की पैंकिंग-पालिश द्वारा धोका न दे सकोगे।

४०

विचार करो—बाजार में कोई वस्तु लेने जाओ तो तुम्हें उसका मूल्य देना पड़ता है इसी प्रकार निश्चय रखो, यदि तुम तेज, वल, बुद्धि या विद्या प्राप्त करना चाहते हो तो उसके लिये 'ब्रह्मचर्य पालन' करना ही पड़ेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

४१

विचार करो—शक्तिशाली राजा के रहते उसका देश धन-धान्य व सुख शान्ति, सम्पन्न तथा शत्रुओं से सुरक्षित रहता है परन्तु उसके निर्बल होते ही (अथवा न रहने पर) वही देश अनाथ, सुख-विहीन हो जाता है, बाहर से शत्रु भी आक्रमण कर देते हैं और भीतरी चोर-डाकू लूट-खसोट मचाने लग जाते हैं, इसी प्रकार शरीर के राजा वीर्य के निर्बल पड़ जाने पर (अथवा नष्ट हो जाने पर) शरीर, इन्द्रियाँ, मन प्राण व बुद्धि सभी शिथिल, सुख-विहीन पड़ जाते हैं, बाहर से रोग, भय आदि आक्रमण कर देते हैं और भीतर से काम-क्रोध-लोभ आदि लूट खसोट मचाने लग जाते हैं। अतः उस व्यक्ति का जीवन भार-स्वरूप बन जाता है। अग्नि मन्द हो जाती है—प्रमेह-स्वप्नदोष आदि रोग घेर लेते हैं, आंखों की रोशनी कमी हो जाती है—गाल पिचक जाते हैं—किसी कार्य में मन नहीं लगता है—जरा सा दिमाग़ी काम आपड़ने पर सिर में दर्द होने लग जाता है आदि

४२

विचार करो—यदि कोई स्त्री वाणी से तो अपने पति से यह कहे कि मैं आप से बहुत प्रेम करती हूँ पर सेवा बिल्कुल करे ही नहीं अथवा कोई पुत्र अपने पिता से कहे कि मैं हार्दिक श्रद्धा रखता हूँ और समय आने पर पानी का लोटा भी न भरे तो क्या उस पत्नी व पुत्र का प्रेम व श्रद्धा वास्तविक है ? कदापि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

४३

नहीं। वह तो केवल कथन मात्र है। इसी प्रकार, याद रखो, जो देश या विश्व के प्राणियों के हित के लिये अपना कर्त्तव्य समझ कर बिना किसी फल की इच्छा के सेवा नहीं करता वह वाणी या वेष-भूषा से भले ही भक्त बना फिरे—वास्तविक भक्त नहीं है अर्थात् बिना कर्म के भक्ति की कोई महत्ता नहीं है।

४४

विचार करो—चन्दन के पेड़ के पास जितने पेड़-पौधे होते हैं वे सभी चन्दन बन जाते हैं परन्तु बाँस और करील के पेड़ों की जड़ें चाहे चन्दन के पेड़ की जड़ से मिली हुई ही क्यों न हों वे चन्दन नहीं बनते—जानते हो क्यों ? इसीलिये कि इन पेड़ों में गाँठें होती हैं। इसी प्रकार, निश्चय रखो; संत-महात्माओं के संग में रहने वाले सब संत बन जाते हैं पर जिनके हृदय में छल-कपट, परदोष-दर्शन-अभिमान रूपी गाँठें हैं वे कभी संत नहीं बन सकते चाहे वे दिन-रात संत-महात्माओं के पास ही क्यों न रहते हों।

४५

विचार करो—एक गोली को हाथ से फेंक कर मारे और और एक गोली को बन्दूक में रखकर निशाना मारे तो निश्चय है कि बन्दूक में लगाकर जो गोली छोड़ी जायगी, व बहुत शक्ति और शीघ्रता से अपने लक्ष्य पर लगेगी, किन्तु हाथ से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

फेंकी हुई गोली में न तो कोई शक्ति ही होगी और न वह दूर जाकर लक्ष्य भेद ही कर सकेगी। इसी प्रकार, विश्वास रखो, जो मंत्र विश्वास रूपी बन्दूक में रखकर छोड़ा जायगा अर्थात् विश्वास सहित जपा जायगा, उस मंत्र में अनन्त शक्तियाँ होंगी और उससे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होगी। बिना विश्वास के जपते-जपते चाहे हजारियां माला के गुड़िया भी क्यों न घिस जायँ. सफलता प्राप्त नहीं होगी।

४६

विचार करो—जब तक बच्चा खिलौनों से हँसता-खेलता रहता है तब तक क्या उसकी माँ उसको गोद में लेकर दूध पिलाती है? कदापि नहीं। परन्तु जब वही बच्चा खिलौने-खिलौने फेंक-फांक कर रोने मचलने लग जाता है, तो क्या वही माँ सब काम छोड़ कर दौड़ कर उस बच्चे को गोद में नहीं ले लेती? अवश्य ले लेती है। इसी प्रकार, जब तब हम धन, मकान, कुटुम्ब आदि माया के खिलौनों में आसक्त रहेंगे तब तक भगवान् दर्शन नहीं देंगे, भले ही एक-दो खिलौने और दे देवें। जब इनसे मुँह मोड़ कर भगवान् के लिये अति व्याकुल हो जायँगे, तो विश्वास रक्खो, फिर भगवान् के दर्शन में पलभर की भी देरी न लगेगी।

४७

विचार करो—जब नाँव में पानी बढ़ने लगे तो, बढ़ते हुए पानी का तमाशा देखकर खुश होना चाहिये कि झट-पट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दोनों हाथों से पानी उलीचना चाहिये ? पानी उलीचना चाहिये। इसी प्रकार, याद रक्खो, किसी पदार्थ में ममत्व बढ़ने लगे तो उसे तुरन्त काट देना चाहिये न कि उसमें रस लेना चाहिये। यदि किसी पदार्थ या व्यक्ति में ममत्व खूब बढ़ गया तो उसके वियोग में खूब दुःख उठाना पड़ेगा।

४८

विचार करो—बिल्ली जब चूहे पर आक्रमण करती है तो क्या उसको नोटिस भेजती है ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, मौत अचानक आ जायगी, वह आने के पहिले नोटिस नहीं भेजेगी। बुद्धिमानी इसी में है कि मौत आने के पहले-पहले मरना सीखलें।

४९

विचार करो—घूरे पर पड़ी टूटी-फूटी कढ़ाई का यदि पारस से स्पर्श होजाय तो क्या वह लोहे से स्वर्ण नहीं बन जायगी ? अवश्य बन जायगी। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, दुराचारी अथवा मूर्ख भी यदि महात्माओं के सत्संग में रहेगा तो वह भी अवश्य साधु बन जायगा।

५०

विचार करो—हाथी घन्टों पानी में नहाता है, पर पानी से बाहर निकलते ही वह अपनी सूँड़ से रेत अपने ही शरीर पर फेंक कर, घन्टों के स्नान को व्यर्थ कर देता है। इसी प्रकार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जो नित्य महात्माओं के सत्संग में तो जाते हैं पर सत्संगसे बाहर हटते ही महात्माओं पर दोष-दृष्टि, अश्रद्धा निन्दा आदि करते हैं उनका सत्संग में आना व्यर्थ हो जाता है।

५१

विचार करो—क्या हम सिपाही बनकर कलेक्टर को वश में कर सकते हैं ? कदापि नहीं। यदि कलेक्टर को वश में करना है तो कमिश्नर या मंत्री बने। फिर देखना—विचारा कलेक्टर तो जी हजूर-जी हजूर करता हर वक्त हाजिर खड़ा रहेगा। इसी प्रकार, याद रक्खो, शरीर बनकर मन को वश में कदापि नहीं कर सकते है। यदि मन को वश में करना है तो आत्मा बन जाओ, बुद्धि से विचार करो, फिर देखना मन तो सेवक बन जायगा।

५२

विचार करो—यदि बच्चा अग्नि पकड़ना चाहे और माँ उसे वर्ज रक्खे तो भले ही बच्चा रोवे; क्या वर्ज रखने में माँ की कृपा नहीं ? इसी प्रकार, सोचो तो, जब भक्त विषय-भोगों की प्राप्ति में ही लग जाता है तब भगवान् उससे विषय-भोग छीन लेते हैं—भक्त रोता है पर क्या इस छीनने में भी भगवान् की कृपा नहीं ? अवश्य है। जिन-जिन पदार्थों में हमारी ममता आसक्ति बढ़ती जा रही है उन पदार्थों से वियोग हो जाय तो खूब प्रसन्न होना चाहिये कि भगवान ने हमारी ओर देख तो लिया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

५३

विचार करो—जो विद्यार्थी परीक्षा में प्रवेश होने के लिये प्रवेश पत्र भरेगा क्या उसके सामने प्रश्न-पत्र नहीं रखे जायँगे ? अवश्य रखे जायँगे। और जब प्रश्न-पत्र सामने आ ही गये (चाहे वे कठिन हों वा सरल) तब उस विद्यार्थी को शान्त चित्त हो विचार-पूर्वक उन प्रश्नों का उत्तर देना चाहिये या प्रश्न-पत्र को देखकर दुखी होना चाहिये ? इसी प्रकार जो व्यक्ति परमार्थ-पथ पर आरूढ़ होकर परमानन्द-पद की प्राप्ति करना चाहता है तब उसके सामने रोग, दुःख, प्रतिकूलता रूपी प्रश्न-पत्र आवेंगे ही उस समय क्या परमार्थ-पथिक को दुःखी होना चाहिये या शान्त चित्त होकर, विचार-पूर्वक उनको सहन करना चाहिये। अस्तु जो इन दुख कष्टादि को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार नहीं करता वह परमानन्द की प्राप्ति कभी नहीं कर सकेगा।

५४

बिचार करो—जब बच्चा कोई अपराध करता है तो माता दंड देने के निमित्त हाथ कितने जोर से उठाती है परन्तु जानते हो—क्या वह हाथ जब बच्चे के गाल के पास जाता है तब उतने ही जोर से चोट मारता है ? नहीं, कदापि नहीं—गाल पर बहुत धीरे से चोट लगती है। इसी प्रकार जरा सोचो तो, हम जितना अपराध करते हैं क्या भगवान् हमें उतना ही कठिन दंड देते हैं ? कदापि नहीं—वे माता से भी अधिक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कृपालु हैं। यदि वे भी उतना ही दंड देने लग जाय तो बेचारे मनुष्य का जीवित रहना भी दुस्तर हो जाय।

५५

विचार करों—जिस अग्नि से हम हलुवा, पूड़ी, खीर आदि बनाकर और फिर खाकर आनन्द प्राप्त करते हैं, वही अग्नि यदि सूटकेस पर रख दी जावे तो क्या वह हमारे बहु-मूल्य वस्त्रों को स्वाहा करके हमारे दुख का कारण नहीं बन जाती है ? अवश्य बन जाती है। इसी प्रकार याद रक्खो, धन-दौलत, स्त्री-पुरुष. आदि ये हमारे दुःख का कारण नहीं यह तो उनका दुरुपयोग मात्र ही है जो हमें दुःख देता है। यदि हम इन्हें भगवान् की धरोहर मानकर खूब पुरुषार्थ करके भगवान् की आज्ञानुसार जो कुछ भी प्राप्त हो उससे इनकी धर्मानुकूल सेवा करें तो यही हमें सुखदायक बन जायंगे और यदि इन्हें अपना मानकर, अथवा अपने पुरुषार्थ से ही उनका पालन-पोषण होता है ऐसी भावना रक्खेंगे तो वे ही दुःख का कारण बन जायेंगे। वास्तव में वस्तु का सदुपयोग अथवा दुरुपयोग ही हमें सुख अथवा दुःख देता है, वस्तु नहीं।

५६

बिचार करो—पानी का स्वाभाविक प्रवाह नीचे की ओर होता है। यदि हमें ऊपर की ओर पानी चढ़ाना है तो अत्यन्त प्रबल उपाय—इञ्जिन व मोटर का आयोजन करना पड़ता है। इसी प्रकार विश्वास रक्खो मन और इन्द्रियों की स्वाभाविक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गति विषय-भोगों की ओर है, भगवान् की ओर नहीं। यदि भगवत् प्राप्ति करना चाहते हैं तो इन्हें बलपूर्वक, दृढ़ता से, सत्संग-भजन, सेवा परोपकार आदि में लगाना पड़ेगा।

५७

विचार करो—बच्चा आरम्भ में पाठशाला को जबरदस्ती भेजा जाता है। उसका मन तो उस समय खेल खेलने में लगा रहता है—पढ़ने में उसकी रुचि नहीं होती—पाठशाला जाना उसको बड़ा खराब लगता है। वह मन ही मन बड़ा दुखी होता है तथा माता-पिता व गुरु जी को शत्रु रूप समझता है। पर क्या वह उसकी अज्ञानता नहीं? अवश्य है। क्योंकि कुछ दिनों बाद जब वही बालक पढ़कर किसी अच्छे पद पर पहुँच जाता है तब विचरता है कि यदि माता-पिता व अध्यापक मुझे ताड़ना न देते तो आज मैं भी घास छीलता होता। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, मन विषय-भोगों को छोड़ कर भजन सत्संग में स्वतः नहीं लगेगा—उसको जबरदस्ती लगाना पड़ेगा। तथा भजन सत्संग साधनादि में कष्ट दुःख बिघ्नादि आवें उनको भगवान् की कृपा समझकर सहन करना चाहिये। तभी हम कुछ काल पश्चात् भगवत्प्राप्ति रूप सिद्धि को प्राप्त हो सकेंगे।

५८

विचार करो—कोई पानी में तो उतरे नहीं और बाहर ही रेत में तैरना सीखना चाहे तो वह क्या कभी तैरना सीख

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सकेगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, सोचो तो सही, जो सत्संग, भजन, साधन आदि करे बिना ही तथा गुरू की शरण में जाये बिना ही, कोई भगवद् प्राप्ति चाहे तो क्या वह कभी सफल हो सकेगा ? कदापि नहीं।

५९

विचार करो—बच्चा तोतली भाषा में 'अट्टी' 'अट्टी' तथा 'अप्पा' 'अप्पा' चिल्लाता है तब माँ सब काम छोड़कर फौरन दौड़कर उसको रोटी और पानी दे देती है। हालाँकि 'अट्टी' व 'अप्पा' का अर्थ रोटी व पानी किसी शब्द कोष [Dictionary] में नहीं लिखा पर माँ शब्दों की शुद्धता पर ध्यान न देती हुई लक्ष्यार्थ समझकर रोटी पानी दे देती है। जानते हो क्य ? इसी लिये कि वह बच्चा केवल उस माँ के ही आश्रित है। इसी प्रकार, निश्चय रखो, जो भक्त केवल भगवान् के ही आश्रित हैं—भगवान् उनकी प्रार्थना के शब्दों व क्रियाओं की ओर नहीं देखते, वे तो भक्त की भावना की ओर देखते हैं। वे भक्त की टूटी फूटी परन्तु प्रेम भरी वाणी को सुनकर बड़े प्रसन्न होते हैं तथा उनको अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं।

६०

विचार करो—दीपक सब जगह प्रकाश कर देता है परन्तु उसके तले अन्धेरा ही बना रहता है उस अन्धेरे को दूर करने के लिये जानते हो हमें क्या करना चाहिये ? एक दो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दीपक और वहीं रख दें—आप देखेंगे कि दीपक एक दूसरे के तले का अन्धेरा मिटा देते हैं। इसी प्रकार साधक यदि अकेला रहेगा तो हो सकता है कि प्रमाद आलस्य आदि के कारण उसका साधन ढीला पड़ जाय। अतः यदि वह शीघ्र उन्नति चाहता है तो उसे साधकों के समूह में रहना चाहिये।

६१

विचार करो—यदि घोड़ा उछल-कूद अधिक करता हो—सवारी नहीं करने देता हो, तो जानते हो क्या करना चाहिये? उसको कुछ दिन भूखा रखना चाहिये। फिर हाथ में कोड़ा लेकर उस पर सवारी करो—घोड़ा सीधा-साधा आज्ञानुकूल चलेगा। इसी प्रकार, याद रखो, यदि मन वश में नहीं होता हो, खूब चञ्चलता करता हो तो उसको पंच विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध) से भूखा रखो—तथा संयम का कोड़ा अपना लो—बेचारा मन तो मदारी के बन्दर की भाँति आप की आज्ञानुसार नाचता फिरेगा।

६२

विचार करो—आरम्भ ही आरम्भ में तो सिगरेट का पीना बड़ा बुरा लगता है परन्तु उसी व्यक्ति को एक वर्ष के बाद सिगरेट पीने के अभ्यास को छोड़ना कितना कठिन हो जाता है? एक प्रकार से असम्भव सा ही हो जाता है। इसी प्रकार, सोचो त ,पशु पक्षी, कीट-पतंग आदि कई लाख जन्म-जन्मान्तरों में, जो विषयभोग-भोगने का दृढ़ स्वभाव पड़ गया है—क्या वह इस इतने अल्प पुरुषार्थ से छुट जायगा? कदापि नहीं। इसके लिये तो हमें दृढ़ पुरुषार्थ (भजन-सत्संग) करना पड़ेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

६३

विचार करो—कमरे में कूड़ा-करकट आदि तो नित्य अपने आप ही इकट्ठा हो जाता है परन्तु क्या दस-दस रुपये के नोट भी अपने आप इकट्ठे हो जाते हैं ? नहीं, कदापि नहीं। नोटों के लिये हमें प्रयास करना पड़ेगा। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, मन भोगों की ओर तो बिना प्रयास स्वतः ही लग जायगा परन्तु भजन-सत्संग में मन को पुरुषार्थ द्वारा लगाना पड़ेगा।

६४

विचार करो—यदि किसी को मिश्री कड़वी लगे अथवा नीम मीठा लगे तो समझना चाहिये कि वह रोगी है। उसको कोई औषधि का सेवन करना चाहिये—कब तक ? जब तक कि मिश्री मीठी तथा नीम कड़वा न लगने लग जाय। इसी प्रकार, विश्वास रखो, यदि किसी को भगवान्, भगवत् कथा, भजन तथा सत्संग आदि प्रिय नहीं लगें तथा भोग प्रिय लगें तो समझना चाहिये कि वह भव-रोग से ग्रसित है उसको तब तक भजन-सत्संग करना चाहिये जब तक भोग प्रिय लगते रहें।

६५

विचार करो—जो अपने पिता की सेवा करता है क्या वह पिता की सारी सम्पत्ति का स्वामी नहीं होता ? अवश्य होता है। पिता तो सदैव यही आशा लगाये रहता कि कितनी जल्दी हमारा पुत्र योग्य बने और कितनी जल्दी सारी सम्पत्ति का बोझा इस पर सौंपूं। इसी प्रकार, याद रक्खो, जो भगवान् की सेवा करता है वह निश्चय ही भगवान् की सम्पत्ति अर्थात

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वैकुण्ठ का अधिकारी हो जायगा। भगवान् तो चाहते हैं कि मनुष्य जो कि सब पुत्रों से श्रेष्ठ बुद्धिमान् पुत्र है, वह योग्य बने और उसे अपने धाम का अधिकारी बनाऊँ। याद रक्खो, भगवान् की उत्तमोत्तम सेवा भगवान् की आज्ञा का पालन है, शास्त्र व संत की आज्ञा भगवान् की आज्ञा है।

६६

विचार करो—जब तक ग्राहक किसी एकही दुकानदार से सौदा लेता रहता है तब तक वह उसे उधार देता रहता है, पर ज्योंही वह किसी अन्य दुकानदार से सौदा खरीदना आरम्भ कर देता है तो क्या वह दुकानदार उसको आगे माल देता है? कदापि नहीं। आगे सौदा देना तो दूर रहा—वह पुराना सब उधार वसूल करने लग जाता है। इसी प्रकार मनुष्य जब माया की दुकान छोड़कर भगवान् की ओर मुँह करता है तब माया कष्ट दुःख आदि भेजकर, उसके पापों का सारा भुगतान चुका लेती है। इसी लिये भक्त लोग प्रायः दुखी देखे जाते हैं।

६७

विचार करो—डाक्टर रोगी का आपरेशन करता है तब रोगी को बड़ा कष्ट होता है वह दुखी होता है, रोता है। परन्तु सोचो तो क्या आपरेशन करने में रोगी के ऊपर डाक्टर की महान् कृपा नहीं? अवश्य है। रोगी को बिचारना चाहिये कि आपरेशन में कुछ समय तक कष्ट तो अवश्य होगा पर फलतः रोग ठीक हो जायगा फिर सुख ही सुख होगा। इसी प्रकार, विश्वास रखो, भक्तों पर जो दुःख आते हैं उसमें भगवान् की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

महान् कृपा भरी हुई है। भक्त यह जानकर प्रसन्न होता है कि हमारे प्रभु ने हमें इस भवसागर के दुःख से शीघ्र निकालने के निमित्त यह कष्ट भेजा है।

६८

विचार करो—क्या चमारों की बस्ती में चमारों का दुर्गन्ध आती है ? कदापि नहीं। पर राजा दुर्गन्ध के मारे वहाँ खड़ा नहीं रह सकता। इसी प्रकार, निश्चय रखो, भोगी पुरुषों के यहाँ विरक्त साधु महात्मा को विषय भोगों की दुर्गन्ध जरूर आयेगी पर भोगी को नहीं।

६९

विचार करो—जब पिता अपनी लड़की का कन्यादान कर देता है तो उसके देख-भाल, पालन-पोषण की जिम्मेदारी पति पर हो जाती है। इसी प्रकार, विश्वास रखो, जो अपना सर्वस्व भगवान् को अर्पण कर देता है, उसकी देखभाल, आदि की जिम्मेदारी भगवान् स्वयं अपने ऊपर ले लेते हैं। भगवान् ने ऐसे भक्तों की देख-भाल, आदि जिम्मेदारी की प्रतिज्ञा की है—

"तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्"

(गीता ९। २२)

७०

विचार करो—सुख के समय चाहे माँ बच्चे को अलग भी रख दे पर दुःख के समय तो वह उसे अपनी गोद से अलग नहीं रख सकती। इसी प्रकार, विश्वास रखो, विपत्ति के समय भगवान् हमारे साथ अवश्य रहते हैं। हमें उनके सान्निध्य का अनुभव करना चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

७१

विचार करो—यदि कोई हमें एक खूब रकम भरी हुई तिजोरी भी दे देवे तथा साथ में उसकी चाबी भी; और फिर भी हम पैसे-पैसे के लिए हाथ फैलाते रहें—गरीबी का दुःख उठाते रहें; तो क्या यह हमारी मूर्खता नहीं ? अवश्य है। इसी प्रकार, याद रखो, भगवान् ने जब हमें कृपा करके सर्व शक्तियों का भण्डार मानव शरीर प्रदान कर दिया और फिर भी यदि हम तुच्छ वस्तुओं के लिये दूसरे के आगे हाथ फैलाते हैं—रोते चिल्लाते दुखी होते हैं तो क्या वह हमारी मूर्खता नहीं ? अवश्य है।

७२

विचार करो—खूब रकम भरी तिजोरी, चाबी सहित मिल जाने पर जानते हो हमें अपनी गरीबी का दुःख कैसे हटाना चाहिये ? चाबी उठाओ, तिजोरी में लगाओ—ताला खोलो—रकम निकालो और बस मौज उड़ाओ ! इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, सर्व शक्तियों के भण्डार श्री करूणा सागर सब के हृदय में स्थित हैं। मन की वृत्तियों को हृदय में स्थित भगवान् की ओर कर लो (अर्थात् अन्तर्मुखी कर लो) बस सर्व शक्तियों का भण्डार मिल जायगा। फिर मौज उड़ाओ—सदा आनन्द में रहो।

७३

विचार करो—यदि दुकान चलती न हो अर्थात् माल की बिक्री कम होती हो तो, क्या सेठ जी को हाथ पर हाथ धरे बैठा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रहना चाहिये कि दूसरा कोई धन्धा करना चाहिये ? अवश्य दूसरा धन्धा करना चाहिये । इसी प्रकार, जरा सोचो तो, जब हमारे पास कुछ काम नहीं हो तो हमें निरर्थक बातों में समय व्यर्थ नष्ट करना चाहिये कि भगवत् प्रीत्यर्थ कोई पारमार्थिक कार्य करना चाहिये । अवश्य भगवत् प्रीत्यर्थ पारमार्थिक कार्य करना चाहिये ।

आप कदाचित् यह शंका करेंगे कि फिर खायेंगे क्या ? तो—

सोचो तो जरा—साधारण से व्यक्ति की कोई सेवा करता है —उसके यहाँ मजदूरी करता है तो क्या वह उसकी मजदूरी रख लेता है ? कदापि नहीं । फिर क्या जब हम उस जगन्नियन्ता सम्राटों के सम्राट् दीनदयाल की सेवा-मजदूरी करें तो क्या वह हमारी मजदूरी रख लेगा ? कदापि नहीं विश्वास रक्खो—

जगत मजूरी देत है क्यों राखे भगवान् ।

७४

विचार करो—धर्मशाला में केवल तीन दिन तक ठहरने के लिये मुसाफिर को एक कमरा मिलता है जिसमें कि सुविधा के लिए मेज-कुर्सी पलंग-दर्पण आदि रक्खे होते हैं । यदि कोई इन पलंग-दर्पण आदि का आराम भोगते-भोगते, इनमें आसक्त होकर तीन दिन के बाद भी छोड़कर जाना न चाहे तो क्या उसे धर्मशाला से बाहर जबरदस्ती नहीं निकाला जाता ? अवश्य निकाला जाता है । इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, इस संसार में हमको एक निश्चित अवधि तक ही ठहरने की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अनुमति मिली है। आराम के लिये धन-वैभव, कुटुम्ब-परिवार आदि मिला है। यदि कोई इनके द्वारा प्राप्त आराम में आसक्त होकर नियत अवधि पर संसार सहित इनको छोड़ कर नहीं जाना चाहेगा तो क्या उसे इस संसार से जबरदस्ती नहीं निकाला जायगा। अवश्य निकाल दिया जायगा। भलाई इसी में है कि इन सुविधा के लिये प्राप्त वस्तुओं को सही-सलामत इस संसार रूपी धर्मशाला के स्वामी को प्रसन्नता पूर्वक सौंप दें, अन्यथा दुःख उठाना पड़ेगा।

७५

विचार करो—पूर्वजों की गुप्त बही में यदि यह लिखा मिल जाय कि "घर में चूल्हे के नीचे जमीन में एक गज पर एक अशर्फियों का घड़ा गड़ा है" तो उम्र भर उस बही की पूजा-अर्चा ही करते रहने से—अथवा "घर में··· ·······घड़ा गड़ा है" इस वचन का वारम्वार पाठ करने से अशर्फियों का घड़ा प्राप्त हो जायगा ? कदापि नहीं। घड़ा प्राप्त करना है तो घर में चूल्हे के नीचे जमीन में एक गज गहरा गड्हा खोदें—घड़ा निकालें और मौज करें। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, यदि हम रामायण-गीतादि सद्ग्रन्थों का उम्र भर सदैव पाठ, पूजा, अर्चा आदि ही करते रहे और उसमें लिखे अनुसार वचनों पर अमल नहीं करें तो परमात्मा की प्राप्ति कभी नहीं हो सकेगी। अतः संतों एवं सत्शास्त्रों के उपदेशों के अनुसार व्यावहारिक जीवन बनाने से ही परमानन्द की प्राप्ति हो सकेगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

७६

विचार करो—कुशल डाक्टर ने निदान करके रोगी को औषधि देदी, किन्तु यदि रोगी उसको जेब अथवा आलमारी में ही बन्द रक्खे, उसका सेवन न करे तो क्या रोगी कभी रोग-मुक्त हो सकता है ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, संत-महापुरुषों के सद्उपदेशों को श्रवण करके उन पर यदि कुछ भी अमल न किया—केवल सुनते ही रहे—तो सदा आनन्द की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकेगी।

७७

विचार करो—रोगी निदान करवाकर कुशल डाक्टर से औषधि ले भी आवे और सेवन भी कर लेवे परन्तु परहेज़ न रक्खे तो क्या वह रोगी कभी रोग से मुक्त हो सकेगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, याद रक्खो, संत महापुरुषों के उपदेशानुसार जप, तप, यज्ञ, दान, सत्संग-भजन आदि साधन भली-प्रकार, भी किया पर काम, क्रोध, लोभ. मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि छोड़े नहीं तो परमानन्द की प्राप्ति कभी नहीं होगी।

७८

विचार करो —मलेरिया से पीड़ित रोगी की मन इन्द्रियाँ कुनैन मिक्सचर को कड़वी होने के कारण पीना नहीं चाहतीं, परन्तु बुद्धि के इस निश्चय पर कि इसके पीने से रोग जाता रहेगा, जब वे इच्छा न होते हुए भी पी लेती हैं तो रोगी रोग से मुक्त हो जाता है। इसी प्रकार, याद रक्खो, अभ्यास-वैराग्य,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

साधन-भजनादि कर्त्तव्य-कर्म अरुचिकर होने पर भी परिणाम में परमानन्द की प्राप्ति के हेतु हैं ऐसा जानकर मन-इन्द्रियों को बरबस उनमें लगाना चाहिये।

७९

विचार करो—जिससे हमारा प्रेम है उसकी सारी क्रियाएँ अच्छी ही अच्छी जान पड़ती हैं चाहे वे दोषमय ही क्यों न हो, परन्तु जिससे हमारा शत्रुभाव है उसकी सारी क्रियाएँ गुणमयी होते हुए भी क्या बुरी नहीं जान पड़ती है ? अवश्य जान पड़ती है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, जिन्होंने मन-इन्द्रियों को मित्र मान रक्खा है, उनको विषय-भोग सुख रूप ही प्रतीत होंगे चाहे वे परिणाम में कितने ही दुःख रूप क्यों न हो। परन्तु जिन्होंने मन-इन्द्रियों को शत्रु जान लिया है उनको ये विषय-भोग हलाहल विष से भी अधिक दुःख रूप लगेंगे, चाहे वे भोग काल में कितने ही सुख रूप क्यों न हो।

८०

विचार करो—सराय में जबतक कोई स्थान खाली रहेगा तब तक नये मुसाफिर उसमें ठहरेंगे ही—चाहे वे भले साधु पुरुष हों अथवा चोर जुआरी। यदि सराय के प्रबन्धक चाहें कि उनकी सराय में बुरे पुरुष न टिकने पावे तो जानते हो उनको क्या करना चाहिये ? उनको सराय के सभी स्थानों में अच्छे भले पुरुषों को टिका लेना चाहिये। बस खाली स्थान न देखकर बुरे पुरुष अपने आप ही लौट जायेंगे। इसी प्रकार, याद रक्खो,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यदि तुम चाहते हो कि हमारे हृदय में काम, क्रोध, लोभ मोह, ईर्षा आदि बुरे विचार न रहने पावें, तो सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, साधु पुरुषों का सत्संग, सेवा, दर्शन, कीर्तन आदि शुभ कर्म, क्षमा सन्तोष आदि शुभ विचारों को अपनालो—बस बुरे स्वभाव अपने आप ही स्थान रिक्त न देखकर लौट जायेंगे।

८१

विचार करो—जिस वमन को अति घृणित जानकर मनुष्य त्याग देता है और उसकी ओर देखता तक नहीं, कुत्ता उसे बड़े प्रेम से खाता है—क्या यह उसकी मूढ़ता व पशुता नहीं ? अवश्य है। इसी प्रकार, जरा सोचो तो सही, जिन विषय-भोगों को संतजन अति घृणित जानकर त्याग देते हैं, उन्हीं विषय भोगों में जो लिपटे रहते हैं—वे मनुष्य होते हुए भी मूढ़ पशु नहीं तो और क्या हैं ?

८२

विचार करो—किसी का फाँसी का मुकदमा हो और यदि जज या राजा कह दे कि "तुम चिन्ता मत करो" तो कल्पना करो कि उसको कितनी प्रसन्नता होगी ? इसी प्रकार गीता में त्रिलोकीनाथ भगवान् जब स्वयं श्रीमुख से कह रहे हैं कि "मा शुचः" अर्थात् तुम कोई चिन्ता मत करो—

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मताः।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥

(गीता १६/५)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—फिर क्या हम लोगों को किसी प्रकार की चिन्ता करनी चाहिये ? भगवान् के बचनानुसार तो चिन्ता उनको होनी चाहिये जो "आसुरी प्रकृति" के हों और दैवी सम्पत्ति वाले को तो सदा आनन्द में ही रहना चाहिये ।

८३

विचार करो—हीरे, जवाहरात तथा स्वर्णादि आभूषणों से सजी हुई स्त्री बड़ी सुन्दर लगती है किन्तु वही स्त्री यदि नख से शिख तक अनेक अमूल्य आभूषणों से अलंकृत तो हो पर तन पर कोई वस्त्र न हो तो क्या वह अच्छी लगेगी ? कदापि नहीं । इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, प्रार्थना, पूजा, पाठ, जप, तप, कीर्तनादि करना सर्वश्रेष्ठ कर्म अवश्य है किन्तु यदि ये ही शुभ कर्म अन्तर्भावना तथा व्याकुलता रहित हों अथवा दम्भयुक्त हों तो विश्वास रक्खो भगवान् इनसे कदापि प्रसन्न नहीं होंगे ।

८४

विचार करो—नदी का पानी तो निरन्तर बहता ही रहेगा—बुद्धिमत्ता इसी में है कि उस पानी का सदुपयोग कर लिया जाय। इसी प्रकार इस देव दुर्लभ मानव-योनि की अमूल्य श्वास तो निरन्तर जा ही रही है, बुद्धिमत्ता इसी में है कि अन्तिम श्वास के पहले-पहले सेवा, परोपकार, सत्संग, भजन, आदि करके इस मनुष्य जन्म को सार्थक कर लें ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

८५

विचार करो—कर्जा देने वाला महाजन जो आसामी को कभी भी कर्जा लौटाने को कहे ही नहीं, वह अच्छा अथवा जो आसामी को बार बार तकाजा करके थोड़ा बहुत जमा करवाता रहे वह अच्छा ? देखो जिस आसामी को महाजन कर्जा लौटाने को कहता ही नहीं—उस आदमी को समझ लेना चाहिये कि उसकी तो सारी जायदाद ही कुर्क होने वाली है, पर जिससे बारम्बार तकाजा करके थोड़ा बहुत जमा करवाता जा रहा है—उसको उस महाजन की अपने ऊपर महान कृपा माननी चाहिये कि जायदाद भी कुर्क नहीं होगी और शनैः शनैः सारा कर्जा भी उतर जायगा। हाँ, बारम्बार तकाजे सुनते और रुपया जमा करवाते समय उस आसामी को थोड़ा बहुत अस्थायी क्षणिक कष्ट अवश्य होगा। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, जिन अभक्तों, नास्तिकों अथवा पापियों पर कभी कोई दुःख ही नहीं आता हो तो समझ लेना चाहिये कि उनका नाश शीघ्र है अर्थात् उनको नरकों को भोगकर पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि योनियों में सहस्रों वर्ष पर्यन्त दुःख ही दुःख भोगना है। पर जिन भगवद्भक्तों पर बारम्बार दुःख आते रहते हैं उनको पूर्ण विश्वास कर लेना चाहिये कि करुणासागर भगवान् की उनपर महान कृपा है कि संचित पाप रूपी ऋण भी थोड़ा-थोड़ा करके चुकाया जा रहा है और परलोक भी बनाया जारहा है। हां दुःख भोगते समय मन और इन्द्रियों को थोड़ा बहुत कष्ट अवश्य होगा, पर वह भी विचार द्वारा, भगवत् कृपा के सम्पादन द्वारा काटा जा सकता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

८७

विचार करो—कुम्हार के चलते हुए चाक पर रक्खी हुई सब वस्तुएँ घूमने लग जाती हैं परन्तु वे ही वस्तुएँ जब चाक पर से नीचे पृथ्वी पर रख दी जाती हैं तो वे स्थिर हो जाती हैं। इसी प्रकार, याद रक्खो, मन जब तक माया के संग लगा रहेगा तब तक वह चंचल व अशान्त ही रहेगा, पर जब वही परमात्मा का आश्रय ले लेगा तब वह शान्त, स्थिर हो जायगा। अस्तु, यदि ध्यान के समय मन अधिक चंचल रहता हो तो धीरे-धीरे माया का संग त्यागना चाहिये। माया क्या ?

"मैं और मोर तोर ते माया।"

८८

विचार करो—नदी को पार करने के लिये दो नावें तैयार हो—एक रंग-बिरंगे चित्रों वाली जिसमें बहुत ही मुलायम गद्दे बिछे हों, सुन्दर सुहागनियाँ सुरीले सुमधुर स्वर से गा रही हो—बढ़िया इत्र-सेंट की सुगन्ध आरही हो तथा षट्रस भोजन की तश्तरियाँ रखी हों अर्थात् पाँचो इन्द्रियों की तृप्ति के सामान उपलब्ध हों, परन्तु कमी केवल इतनी सी हो कि नाव के पेंदे में एक छेद हो। तथा दूसरी नाव में ये सब कुछ नहीं हो—बिलकुल सादे तख्तों की नाव हो, न रंग न गद्दे, न इत्र परन्तु छेद कोई भी नहीं हो, तो क्या कोई समझदार व्यक्ति उस बिलकुल सादी परन्तु बिना छेद वाली नाव को छोड़कर रंग-बिरंगी छेद वाली नाव पर सवार होकर नदी पार करेगा ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कदापि नहीं। स्पष्ट ही है कि रंग-बिरंगी छेद वाली नाव पर बैठ कर पार करने वाला थोड़ी देर तक चाहे मन इन्द्रियों की तृप्ति भले ही करता रहे परन्तु दूसरे क्षण ही छेद द्वारा नाव में पानी भरते ही वह नाव सहित डूब जायगा, और बिना छेद वाली सादी नाव पर सवार होने वालों के मन इन्द्रियों की तृप्ति तो नहीं होगी पर नदी पार अवश्य पहुंच जायेंगे। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, जो मनुष्य इन असत्य, सुखरूप तथा रमणीय भासने वाले माया के पदार्थों द्वारा मन और इन्द्रियों की तृप्ति में लगेगा उसका नाश अवश्य हो जायगा। परन्तु जो भक्ति-ज्ञान-वैराग्य, सत्संग-भजन आदि में (जो कि आदि में मन-इन्द्रियों को कष्टकर प्रतीत होते हैं) लगेगा, वह अन्त में इस भवसागर से बेखटके पार अवश्य हो जायगा।

८६

विचार करो—तबला, सारंगी, सितार आदि बाजों को जब तक एक स्वर में मिलाकर बजाया नहीं जाता तब तक संगीत का आनन्द नहीं मिलता। जानते हो संगीत का आनन्द तभी मिलता है जब कि तबला आदि ठोंक-पीटकर एक स्वर में मिला लिये जाते हैं। राहगीर भी उन मधुर स्वरों से मुग्ध हो मार्ग चलना भूलकर रुक जाते हैं। इसी प्रकार, याद रक्खो, वेद शास्त्रादि का अध्ययन कर लेने पर भी यदि हमने आपस में मन मिलाना अर्थात् प्रेम करना न सीखा तो हमें वास्तविक शान्ति की अनुभूति कदापि न होगी—चाहे ज्ञान-भक्ति की बातें

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हम खूब बघारलें। जानते हो मन आपस में कैसे मिलाया जाता है ? "अपने कर्त्तव्य का पालन करो तथा दूसरे के अधिकार की रक्षा करो"—बस मन मिलाने की यही कुञ्जी है। यही सर्वोत्तम आदर्श है। देखो! भूलकर भी अपने अधिकार तथा दूसरों के कर्त्तव्य की ओर न देखना—नहीं तो आनन्द तथा प्रेम के बदले दुःख ही—संघर्ष ही हाथ लगेगा।

८६

विचार करो—सन्निपात-ग्रस्त रोगी के गाली-गलौज से क्रुद्ध होकर यदि कोई डाक्टर भी बदले में गाली-गलौज अथवा मारपीट करे तो क्या यह उसकी बुद्धिमत्ता होगी ? कदापि नहीं। डाक्टर का कर्त्तव्य तो यह है कि सन्निपाती की युक्तिपूर्वक चिकित्सा करे। हाँ, यदि अन्य किसी युक्ति से वह रोगी औषधि का सेवन न करे तब पकड़कर उसे जबरदस्ती औषधि पिलादे। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, रजोगुणी व तमोगुणी व्यक्ति तो काम-क्रोध-लोभादि के वशीभूत होकर हमारे साथ दुर्व्यवहार करेंगे ही। यदि हम भी बदले में उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें तो क्या हमारी अज्ञानता नहीं ? अवश्य है। हमारा कर्त्तव्य तो यह है कि काम-क्रोध लोभादि से पीड़ित रजोगुणी तमोगुणी व्यक्तियों के साथ हित भावना रखते हुए यथोचित नीति के अनुसार करुणा और उपेक्षा का व्यवहार करें।

९०

विचार करो—असली मोती प्राप्त करने के लिये समुद्र की तह में गहरा गोता लगाना पड़ता है। समुद्र के ऊपर ही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ऊपर हाथ पैर पटकने से क्या कभी मोती प्राप्त हो सकता है। कदापि नहीं। इसी प्रकार, याद रक्खो, भगवत् प्राप्ति के लिये केवल ऊपरी वेष-भूषा, तिलक-माला, पाठ-पूजा आदि से काम नहीं चलेगा। उनकी प्राप्ति के लिये तो आवश्यकता है भावना की—प्रेम की—व्याकुलता की—दिखावे की नहीं।

९१

विचार करो—चंचल बुद्धि का बन्दर घर से जब वस्त्रादि उठाकर भाग जाता है तब यदि हम उसके पीछे डंडा लेकर दौड़ें, तो क्या वह वस्त्र हमें प्राप्त हो सकेगा? कदापि नहीं। वस्त्र प्राप्त करने के लिये तो हमें उस बन्दर के सामने एक रोटी का टुकड़ा डाल देना चाहिये। बस, टुकड़ा मिलते ही बन्दर प्रसन्नता पूर्वक वस्त्र छोड़ देगा। इसी प्रकार, ध्यान रक्खो, स्वार्थी विषयासक्त पुरुषों से भी यदि सुख-शान्ति की प्राप्ति चाहते हो तो उनका मन परख कर उनकी बात प्रेमपूर्वक सुनलो—मानलो तथा उनकी इच्छित मान-प्रतिष्ठा दे दो। निश्चय रक्खो, ऐसा करने से वे आप के पूर्ण सहयोगी बन जायेंगे। अरे सोचे तो! देदो—आदर चाहने वाले को आदर, मान चाहने वालो को मान। क्या तुम्हारे पास कुछ कमी है?

९२

विचार करो—पत्नी यदि पति की मूर्ति व तसवीर की तो आरती-पूजा करे, परन्तु साक्षात पति को लोटा भर पानी भी न दे—उसकी सेवा बिल्कुल न करे बल्कि अपनी क्रिया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

द्वारा कष्ट ही दे, तो क्या उसका पति कभी उससे प्रसन्न होगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, याद रक्खो, जो भगवान् की मूर्त्ति अथवा चित्र की तो आरती-पूजा करते हैं पर साक्षात् भगवान् जो समस्त भूत-प्राणियों के हृदयों में विराजमान हैं, उनकी सेवा बिलकुल नहीं करते, बल्कि उनको किसी भी प्रकार कष्ट पहुँचाते हैं तो क्या उन पर वे हृदयेश्वर भगवान् प्रसन्न होंगे ? कदापि नहीं। यदि हृदयेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हो तो, गीता-रामायण आदि ग्रन्थों का पठन-श्रवण चाहे कम ही करो परन्तु तदनुसार क्रियात्मक जीवन बनाओ—सद्व्यवहार का पालन करो—मर्यादानुसार चलो—तभी वास्तविक पूजा होगी और उसी पूजा से भगवान् प्रसन्न होंगे।

६३

विचार करो—ऊँट काँटे खाता है और उन्हें खाना पसंद भी करता है, पर जितना खाता है उतना ही काँटे उसके मुँह में चुभकर उसे कष्ट देते हैं, परन्तु वह काँटे खाना नहीं छोड़ता, खाता ही जाता है। इसी प्रकार माया में बद्ध जीव भी इस संसार में नाना प्रकार की यातनायें सहते हैं तो भी उसमें लगे ही रहते हैं। स्त्री मर जाती है तो फिर ब्याह करते हैं। पुत्र की मृत्यु पर दुःख से बहुत व्याकुल हो जाते हैं। परन्तु पीछे सब भूलकर फिर उसी जंजाल में रत हो जाते हैं।

६४

विचार करो—चिक (परदे) के भीतर का व्यक्ति बाहर के सब व्यक्तियों को देखता है लेकिन बाहर का कोई व्यक्ति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चिक के भीतर के व्यक्ति को नहीं देख पाता। इसी प्रकार भगवान् भी मायारूपी चिक के परदे से सबको देखते हैं पर जीव उसको कभी नहीं देख पाते, यदि जीव और भगवान् के बीच माया का परदा हट जावे तो जीव भगवान् के दर्शन प्राप्त कर लें।

९५

विचार करो—किसी कमरे में जिसमें रेडियो लगा हुआ हो, बड़ी बढ़िया बढ़िया मेज कुर्सियाँ तथा रुपयों की भरी तिजोरी भी रक्खी हो, तो भी उस कमरे में आनेवाला व्यक्ति हाथ नहीं जोड़ेगा सिर नहीं झुकायेगा। परन्तु यदि उस कमरे में ये सब नहीं हो और एक भगवान् की मूर्ति हो (मन्दिर हो) उस कमरे में घुमने वाला प्रत्येक व्यक्ति हाथ अवश्य जोड़ेगा—सिर झुकायेगा ही। इसी प्रकार जिस मनुष्य में सद्गुण (दैवी सम्पदा के गुण) विद्यमान होंगे उसके आगे सारा संसार सिर झुकायेगा ही—हाथ जोड़ेगा ही।

९६

विचार करो—रेत और चीनी मिल जाने पर कोई साधारण व्यक्ति उस मिश्रण को पृथक नहीं कर सकता, परन्तु चींटी क्षण भर में ही अनायास रेत से चीनी पृथक कर लेती है। इसी प्रकार कोई देहाभिमानी व्यक्ति प्रभु व माया को पृथक् नहीं कर सकता, परन्तु ज्ञानी भक्त तुरन्त माया को प्रभु से पृथक् कर देता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मानव जीवन को सफल बनाने वाली तथा अपार सुख शान्ति का सन्देश देने वाली पूज्यपाद श्री १०८ श्री स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज और श्री १०८ श्री स्वामी भजनानन्द जी महाराज रचित अनुपम पुस्तकें :—

१—सदाचार दो भाग		।)
२—दैवीजीवन सोपान		।)
३—ब्रह्मचर्य साधन		।)
४—भक्ति के नव साधन		।)
५—सुखद लोक यात्रा		।=)
६—साधन सुधा		।–)
७—नव महाव्रत		।=)
८—साधन प्रदीप		।)
९—हम दिग्विजयी कैसे हों		।।।)
१०—आदर्श गृहस्थाश्रम		।।।)
११—परमार्थ पथ		।।।=)
१२—परलोक की बातें	प्रथम सन्देश	।।)
१३—परलोक की बातें	द्वितीय सन्देश	।।)
१४—परमार्थ मणि माला	प्रथम भाग	।≡)
१५—परमार्थ मणि माला	द्वितीय भाग	।)
१६—परमार्थ मणि माला	तृतीय भाग	।)
१७—परमार्थ बिन्दु संग्रह		।=)
१८—रामराज्य की ओर		छप रही है।

प्रकाशन विभाग:—

पो० मुमुक्षु आश्रम, (शाहजहाँपुर)

Printed by:-- THE PARMARTH PRINTING PRESS.
P.O. MUMUKSHU ASHRAM (SHAHJAHANPUR)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(सर्व भूत हिते रताः)

परमार्थ बिन्दु



लेखक –
आनन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मानव जीवन को सफल बनाने वाली तथा अपार सुख शान्ति का सन्देश देने वाली पूज्यपाद श्री १०८ श्री स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज और श्री १०८ श्री स्वामी भजनानन्द जी महाराज रचित अनुपम पुस्तकें :—

१—सदाचार दो भाग		।)
२—दैवीजीवन सोपान		।)
३—ब्रह्मचर्य साधन		।)
४—भक्ति के नव साधन		।)
५—सुखद लोक यात्रा		।=-)
६—साधन सुधा		।–)
७—नव महाव्रत		।=)
८—साधन प्रदीप		।)
९—हम दिग्विजयी कैसे हों		।।।)
१०—आदर्श गृहस्थाश्रम		।।।)
११—परमार्थ पथ		।।।=)
१२—परलोक की बातें	प्रथम सन्देश	।।)
१३—परलोक की बातें	द्वितीय सन्देश	।।)
१४—परमार्थ मणि माला	प्रथम भाग	।≡)
१५—परमार्थ मणि माला	द्वितीय भाग	।)
१६—परमार्थ मणि माला	तृतीय भाग	।)
१७—परमार्थ बिन्दु संग्रह		।=)
१८—रामराज्य की ओर		छप रही है।

प्रकाशन विभाग:—

पो० मुमुक्षु आश्रम, (शाहजहाँपुर)

Printed by:-- THE PARMARTH PRINTING PRESS.
P.O. MUMUKSHU ASHRAM (SHAHJAHANPUR)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(सर्व भूत हिते रताः)

परमार्थ बिन्दु



लेखक -
आनन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

❋ सर्वभूतहितेरताः ❋

परमार्थ-बिन्दु

लेखक—

"आनन्द"

(मुमुक्षु-आश्रम, शाहजहाँपुर)

प्रथमबार ३००० } सम्वत् २०१३ वि० { मूल्य ॥=)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निवेदन

प्रातःस्मरणीय पूज्य श्री गुरुदेव एवं संत-महापुरुषों के उपदेशों तथा सद्ग्रन्थों के मनन से वास्तविक सुख शान्तिप्रद जिन गूढ़ तत्त्वों की प्राप्ति हुई है, उन्हीं को प्रिय पाठकों के हितार्थ सरल एवं सुबोध भाषा में दृष्टान्तीय रोचक शैली द्वारा परमार्थ के प्रत्येक अङ्क में 'परमार्थ-बिन्दु' के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा है। प्रेमी पाठकों के विशेष आग्रह पर सर्व साधारण के हित के लिये उन्हीं सूत्रों का संग्रह प्रस्तुत पुस्तक में कर दिया गया है।

"परमार्थ बिन्दु" के प्रथम भाग को पाठकों ने चाव से अपनाया। भक्तों का विशेष आग्रह था कि इसके आगे वाले बिन्दु भी परमार्थ-पथिकों को चिर शान्तिदायी मार्ग की ओर ले जाने में सहायक होंगे। उस आग्रह के फल-स्वरूप यह पुस्तक आपके कर कमलों में है। प्रेमी पाठकों को यदि इनसे स्फूर्तिमयी प्रेरणा मिली तो मैं अपनी यह सेवा सफल समझूंगा।

मेरा विश्वास है कि जो सज्जन इन सूत्रों को श्रद्धा पूर्वक पढ़कर दैनिक व्यवहार में लायेंगे उनको सदा आनन्द (दुःख रहित सुख) की प्राप्ति अवश्य होगी।

'आनन्द'

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परमार्थ बिन्दु-संग्रह

(द्वितीय भाग)

१

विचार करो—मलयागिरि पर्वत से जब सुगन्धिपूर्ण वायु प्रवाहित होती है तो जिन वृक्षों में 'सत्व' होता है वे सब चन्दन के वृक्ष बन जाते हैं; किन्तु जिन वृक्षों में 'सत्व' नहीं होता वे बबूल और बाँस के वृक्ष ज्यों के त्यों ही बने रहते हैं। सुवासित वायु के स्पर्श से भी उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार निश्चय करो—जब सत्संग रूपी मलया-गिरि से भगवत्प्रेम रूपी पवन प्रवाहित होता है तब जिनके हृदयों में पुण्य और भक्ति के बीज हैं वे तो पवित्र बन जाते हैं, प्रभु प्रेम की पावन मन्दाकिनी उनके अन्तःकरण को आप्लावित कर देती है, किन्तु जो निरुपयोगी अर्थात् माया के प्रपंच में रत हैं वे ज्यों के त्यों ही बने रहते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

२

विचार करो—वर्षा-काल में घनघोर वर्षा होने पर किसान जब देखता है कि उसका खेत पानी से लबालब भर गया है तब उसे बड़ी प्रसन्नता होती है, किन्तु भोर होने पर वह देखता है कि खेत में तो पानी की एक बूँद भी नहीं है। धरती के अनेकों छिद्रों द्वारा वह सब जल विलीन होगया। इसी प्रकार जो भक्त अपने मन में धन-वैभव, कीर्ति सुख आदि की कामना करता हुआ भगवान का भजन करता है उसकी वह पूजा कामना के अनेक छिद्रों द्वारा बह जाती है। वर्षों के लम्बे साधन-भजन के बाद भी उसे यही अनुभव होता है "मैं तो ज्यों का त्यों ही रहा, कुछ भी उन्नति नहीं हुई"।

३

विचार करो—मस्त हाथी जब खुल जाता है तो वृक्षों और झोपड़ियों को उखाड़ता, रौंदता सबके आतंक का कारण बन जाता है, किन्तु जब उसका महावत उसके मस्तक पर अंकुश की मार लगाता है तब वह शीघ्र ही शान्त होजाता है। इसी प्रकार निश्चय करो—हमारा अनियंत्रित मन भी उसी मस्त हाथी के समान है, जब हम उसे अवलम्ब-हीन, स्वच्छन्द छोड़ देते हैं तो संसार के निस्सार विचारों की ओर दौड़-दौड़ कर अपने और पराये सभी के दुखों का कारण बन जाता है; किन्तु जब सत्संग के अंकुश की मार मन पर पड़ती रहती है तो वह सदा शान्त रहकर अपने साथ अनेकों के सुख का कारण बन जाता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

४

विचार करो—घड़ा बनाते समय कुम्हार उसको बाहर से बड़ी बेरहमी से पीटता है। क्या वह उस घड़े को नष्ट करने के लिये पीटता है ? कदापि नहीं। वह तो घड़े का मूल्य बढ़ाने के लिये ही पीटता है। अज्ञानी तो उसके बाहर के पीटने वाले हाथ को ही देखते हैं; सहारा देने वाले भीतरी हाथ को कोई बिरले ही देख पाते हैं। इसी प्रकार, याद रक्खो, भक्तों पर कष्ट उनका मूल्य बढ़ाने के लिये, उनकी उन्नित के लिये ही आते हैं, अवनति के लिये नहीं। गहराई से सोचो तो, क्या जब-जब तुम पर दुःख आये तब-तब तुम्हारी उन्नित नहीं हुई ? अज्ञानी स्थूल दृष्टि से केवल भगवान के कष्ट रूपी बाहरी हाथ ही देखते हैं परन्तु ज्ञानी भक्त तो कष्ट में भी उन कृपालु प्रभु की असीम कृपा का वरदूहस्त अनुभव करते हैं।

५

विचार करो—जखमी अंग में जब मवाद पड़ जाती है तो डाक्टर चीड़ फाड़ कर, व दबा-दबू कर उसमें से सारी मवाद बाहर निकालता है। रोगी को बड़ा दर्द होता है। वह चिल्लाता है, परन्तु डाक्टर उसके चिल्लाने की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देता। क्या ऐसा करने में डाक्टर की कृपा नहीं ? अवश्य है। रोगी को विचार करना चाहिये कि यदि डाक्टर ऐसा नहीं करे, तो पूरा अंग सड़ जाय और कटवाना पड़े, इसी प्रकार विश्वास रक्खो, हमारे ऊपर जो दुःख आते हैं उसमें भी परम-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पिता परमात्मा की महान् कृपा भरी हुई है। हममें जब काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, आदि अधिक बढ़ जाते है तो इनसे हमारा अन्तःकरण शुद्ध करके अनन्त सुख की प्राप्ति करवाने के लिये ही वे हम पर दुःख भेजते हैं। भक्त को तो इस दुःख को भगवान का प्रसाद जान कर खूब प्रसन्न ही रहना चाहिये।

दुख नहीं, ईश्वर की दाया, भोग भुगाय छुड़ावे माया।

६

विचार करो—यदि किसी खेत में मिरची पैदा हुई तो स्पष्ट है कि उस खेत में मिरची ही बोई गई थी। कोई मिरची बोकर गन्ने की आशा करे तो क्या यह उसकी मूर्खता नहीं? अवश्य है। इसी प्रकार, निश्चय समझो, हमारे ऊपर जो दुःख आया है वह और कुछ नहीं, हमारे ही पूर्वकृत कर्मों का फल है। यदि हमने पुण्य कर्म ही किये होते तो सुख ही सुख मिलता। यदि हम बुरे कर्म करके अथवा दूसरों को दुःख देकर सुख प्राप्ति की आशा करते हैं तो यह हमारी सरासर मूर्खता नहीं तो और क्या ?

७

विचार करो— सिनेमा के परदे पर तलवार चलती दृष्टिगोचर होती मे, पानी की घनघोर वर्षा तथा बाढ़ नजर आतो है, अग्नि से (बम वर्षा से) गाँव के गाँव, खेत के खेत जलते दिखाई देते हैं, परन्तु खेल समाप्त होने पर परदा कहीं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कटा हुआ, भीगा हुआ या जला हुआ दिखाई पड़ता। इसी प्रकार, याद रक्खो, जिस व्यक्ति के हृदय पर सुख-दुख मान-अपमान, लाभ -हानि आदि का कुछ भी असर न होवे वही ज्ञानी है। जिसको भोगों में तनिक भी रस आता है वह ज्ञानी नहीं हो सकता, ज्ञान की बातें भले ही बघारले।

८

विचार करो—सेठ अपनी कलकत्ते वाली दुकान से कुछ माल असबाब व रुपया अपनी बम्बई या दिल्ली वाली दुकान पर भेजे तो क्या कलकत्ते वाली दुकान के मुनीम को इसके लिये रोना-धोना या किसी प्रकार का शोक करना चाहिये ? कदापि नहीं। यदि मुनीम शोक करता है तो यह उसकी सरासर मूर्खता है। सेठ की खुशी है अपनी चीज कहीं रक्खे।। इसी प्रकार, सोचो तो, जो व्यक्ति भगवान की चीज को अपनी मान कर भगवान द्वारा इधर से उधर कर देने पर उदास या रोते-धोते या उदास होते हैं अथवा किसी प्रकार अपना मन मैला कर लेते हैं, वे क्या भक्त हैं ? भक्त को तो भगवान के हर विधान में सदा प्रसन्न रहना चाहिये।

९

विचार करो—बिल्ली जब चूहे को पकड़ती है तो क्या वह पहिले से नोटिस भेजती है कि अमुक समय में तुमको दबोचा जायेगा। कदापि नहीं; इसी प्रकार निश्चय रक्खो, मृत्यु आने से पहले हमको सूचना नहीं भेजेगी कि अमुक दिन अमुक समय पर हमारा प्राणान्त होगा। इस लिये हमको हर समय सावधान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रहना चाहिये कि कहीं अचानक मौत न हो जावे और "हम न इधर के रहे न उधर के"—"न खुदा ही मिला न विसाले सनम" और पाप का बोझा लादे असहाय की भाँति चल दें।

१०

विचार करो—चूहे को जब बिल्ली अपने मुँह में दबोच लेती है तब उस चूहे तथा उसके साथी चूहों का क्या कोई वश चल सकता है ? कुछ वश नहीं चलता। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, हमको जब मृत्यु पकड़ लेगी तब हमारा तथा हमारे साथियों का कोई वश न चलेगा। भलाई इसी में है कि हम उस दिन के पहले पहले ही मृत्यु पति करुणा सागर भगवान् के चरण-कमलों से नाता जोड़ दें।

११

विचार करो—जो स्त्री पति की अहर्निश सेवा करे परन्तु बदले में कुछ न माँगे वह सच्ची पतिव्रता है अथवा जो समय-समय पर साड़ी, आभूषण आदि माँग ले वह पतिव्रता है ? जो न मागे वही न। इसी प्रकार, याद रक्खो, जो भगवान् का भजन तो साँगोंपाँग करे परन्तु, बदले में कभी कुछ माँगे नहीं वही सच्चा भक्त है और जो भजन करके बदले में भगवान् से कुछ भी मांगलेता है वह भक्त नहीं दूकानदार है।

१२

विचार करो—पथ्य काल में रोगी को तेल, गुड़, खटाई आदि का सेवन वर्जित होता है। यदि रोगी इसका पालन करता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है तो तुरन्त स्वस्थ हो जाता है परन्तु यदि वह इसका उलंघन करके तेल-गुड़ खटाई का सेवन करले तो क्या वह फिर से अधिक रोगी नहीं हो जायगा ? अवश्य हो जायगा। इसी प्रकार याद रक्खो, यह मनुष्य योनि जीव का पथ्य काल है। इस काल में मन-इन्द्रियों को संयमित करके भोगों से दूर रहते हुये भजन सतसंग रूपी औषधि का यदि हम सेवन करते रहें तो क्या निश्चय पूर्वक भव रोग से मुक्त नहीं हो जायँगे ? अवश्य हो जायँगे ।

१३

विचार करो—जिस शरीर को तुम अपना मानते हो और नित्य जिसके कारण सैकड़ों अधर्म करते हो, क्या उसी शरीर में रहने वाले जुयें उसे अपना नहीं मानते ? रात में खटमल, मच्छर, अपना समझ कर उससे अपना रक्त नहीं चूसते ? ऐसी दशा में क्या यथार्थ यह तुम्हारा ही है।

१४

विचार करो—यदि इस शरीर पर तुम्हारा पूर्ण अधिकार है तो रोगों को क्यों आने देते हो, असह्य पीड़ा व्यर्थ क्यों सहन करते हो ? फोड़ा फुन्सी क्यों होने देते हो ? क्या इसमें तुम्हारा बस है ? कि यह न आयें, यदि नहीं ! तो आजसे ही इसे अपना मत मानो, सभी अधर्मों से बच जाओगे।

१५

निश्चय करो—जब अपने शरीर पर ही जो हर समय तुम्हारे साथ रहता है तुम्हारा पूर्ण अधिकार नहीं है, तो इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शरीर से सम्बन्ध रखने वाले जिन्हें तुम अपना कहते हो. क्या यह तुम्हारे हो सकते हैं? यदि हां! तो इनकी (प्रारब्ध वश) आई हुई पीड़ा क्यों नहीं बाँट लेते? तुम देखते रहो और यह कष्ट पाते रहे, यहतो सरासर सबके साथ घोर अन्याय है। और यदि यह वास्तव में तुम्हारे नहीं हैं, तो व्यर्थ इन्हें अपना कह कर एक और चिन्ता मत बढ़ाओ।

१६

सोचो—जिस घर में तुम रहते हो उसे अपना कहते हो। परन्तु उसमें रहने वाले चूहे अपना कहते हैं चीटियाँ अपना कहती हैं, चिड़ियाँ, छिपकली, मक्खियाँ, मच्छर, अपना-अपना कहते हैं, ऐसी दशा में क्या यह घर केवल तुम्हारा ही है? यदि नहीं! तो व्यर्थ अपना कह कर क्यों एक व्याधा मोल लेते हो

१७

विचार करो—जिस घर को तुम अपना कहते हो, क्या इसका कोई प्रमाण दे सकते हो कि यह तुम्हारा ही है? यह तो एक धर्मशाला है। जिस प्रकार धर्मशाले में यात्री आता है और अपने कार्य क्रम के अनुसार ठहरता है और कार्य समाप्त करके चला जाता है, ठहरने की दशा में अवश्य वहाँ की प्रत्येक वस्तु से प्रेम करता है, परन्तु चले जाने पर उसकी याद तक नहीं करता। ठीक इसी प्रकार जिस घर को अब तुम अपना कहते हो, तुम्हारे पिता, पितामह, परपितामह इत्यादि कितने अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कार्यक्रमानुसार ठहरे और अपना-अपना कहते चले गये, पर क्या यह उन का था? और क्या अब यह तुम्हारा है! यदि है! तो जैसे अपनी वस्तु जिस पर अपना अधिकार होता है अपने साथ रक्खी जाती है उसी प्रकार उनको अपने साथ ले जाना चाहिए था, या अब तुम अपने अपने साथ ले जाने का प्रबन्ध करलो। और यदि नहीं। तो आज से ही इसे अपना मत कहो, बल्कि धर्मशाला समझ कर प्रेम का नाता रक्खो मोह छोड़ो।

१८

निश्चय करो—कि प्रेम और मोह में इतना ही अन्तर है जितना सोने और पीतल में, दोनों का रंग एक सा ही होता है पर अग्नि पर रखने से परीक्षा होती है, जो सोना होता है वह और चमक जाता है और पीतल काली पड़ जाती है। इसी प्रकार प्रेम सोना है और मोह पीतल, यदि किसी वस्तु के नष्ट होने पर जिसे तुम अपना कहते हो दुःख लग गया तो मोह अर्थात् पीतल, जिसका मूल्य चार रुपया सेर है और यदि दुःख नहीं हुआ और परमात्मा की धरोहर समझकर प्रसन्नता से लौटा दी, तो प्रेम अर्थात सोना है, जिसका मूल्य सेरों का नहीं होता बल्कि सौ रुपये तोला बिकता है। इसलिये आज से ही सभी वस्तुयें परमात्मा की धरोहर समझकर सभी से प्रेम करो, उनकी रक्षा करो, परन्तु मोह मत करो।

१९

विचार करो—मछली को जल से बाहर निकाल कर डाल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दें तो जानते हो उसका क्या हाल होगा? वह जल के बिना जीवित नहीं रह सकती—जब तक जल की प्राप्ति नहीं होती वह बराबर बुरी तरह छटपटाती रहेगी—- चाहे प्राण ही क्यों न निकल जाय! इसी को कहते हैं अनन्य भक्त। इसी प्रकार केवल माला, तिलक, अथवा वेष-भूषा से ही भगवान् की प्राप्ति नहीं हो सकती, प्राप्ति तो तभी होगी जब हम उनके बिना एक क्षण मात्र भी न रह सकेंगे। अतः हमारे हृदय में वास्तविक मछली की भाँति छटपटाहट व्याकुलता चाहिये। मन, इन्द्रियों के क्षणभंगुर भोगों के सुख में ही सन्तुष्ट मानव भगवत् प्राप्ति कैसे कर सकता है।

२०

विचार करो—खड़र-खड़र चलने वाले इक्के पर सवार होकर यदि कोई चाहे कि उसको हिलना डुलना न पड़े तो क्या यह सम्भव है? कदापि नहीं। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, इस संसार में रहकर यदि हम चाहें कि अनुकूलता-प्रतिकूलता, सुख-दुख न आवें—यह असम्भव है, यदि सुख-दुख नहीं चाहते हो तो संसार में जन्म लेना छोड़ दो। जानते हो संसार में जन्म न लेने के लिये क्या करना पड़ता है? चाहना का समूल नाश करने से ही जन्म मरण के चक्कर से बच सकते हो।

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ वे परवाह।
जिसको कछु न चाहिये सोई ही शाहनशाह॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

२१

विचार करो—पत्थर पर उन्नीस चोटें लगीं पर वह नहीं फूटा परन्तु वीसवीं चोट लगते ही फूट गया, तो क्या उन्नीस चोटें व्यर्थ गयीं ? कदापि नहीं। यथार्थ तो यह है कि वीसवीं चोट की सफलता उन्हीं पिछली उन्नीसों चोटों पर निर्भर थी। इसी प्रकार निराश नहीं होना चाहिये आपका नित्य-प्रति का अभ्यास चाहे वह स्वल्प ही क्यों न हो व्यर्थ नहीं जावेगा। विश्वास रक्खो साधन की सिद्धि इस नित्य-प्रति के अभ्यास पर ही निर्भर है।

२२

विचार करो—सिनेमा देखते समय, हाथी, घोड़े, नदी, पहाड़ आदि जो वास्तव में नहीं हैं प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं, परन्तु जिस परदे पर सिनेमा का दृश्य दिखाई पड़ता है, देखते समय उसकी विस्मृति रहती है। इसी प्रकार यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला संसार जिस अप्रत्यक्ष परमात्मा में दिखाई दे रहा है, वास्तव में वही सत्य है।

२३

विचार करो—सिनेमा के परदे पर दृश्य केवल अन्धेरे में ही दिखाई देते हैं—जहां थोड़ा सा भी प्रकाश (चाहे टार्च का ही हो) हुआ कि दृश्य का अभाव हो जाता है और सत्य वस्तु अर्थात परदा दिखाई देने लगता है, इसी प्रकार, याद रक्खो, जब तक मोह [अज्ञान] है तभी तक यह संसार सत्य प्रतीत होता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है। ज्ञान होते ही इस संसार का अभाव हो जायेगा और सत्य वस्तु परमात्मा के दर्शन अवश्य होंगे।

२४

विचार करो—कुत्ता रोटी का टुकड़ा खाने के पहले अपनी पूँछ हिलाकर अपनी भाषा में अपने स्वामी की स्तुति प्रार्थना करता है। इसी प्रकार यदि हम अपने स्वामी परम पिता परमात्मा की स्तुति प्रार्थना किये बिना भोजन कर लेते हैं तो क्या हम उस बुद्धि हीन पशु से भी गये बीते नहीं हैं? अवश्य हैं।

२५

विचार करो—मुनीम खाते में जमा खर्च लिखता है पर क्या वह अपनी मर्जी से लिखता है? क्या दस हजार का माल ले जाने वाले के खाते में नाम पन्द्रह हजार अथवा बीस हजार जमा करने वाले के खाते में दस हजार ही जमा कर सकता हैं? कदापि नहीं। वह तो उतना ही लिखेगा जितना वास्तव में जमा या खर्च किया जाता है। इसी प्रकार याद रक्खो, विधाता प्रारब्ध अपनी मर्जी से नहीं बनाता है, जीव मनुष्य-योनि में जैसा कर्म करता है वैसा ही विधाता उसके प्रारब्ध में लिख देता है।

२६

फिर विचार करो—मुनीम द्वारा खाते में जमा खर्च लिखे अनुसार जब आसामी से कर्ज़े के रूपये वसूल किये जायँ तब क्या आसामी को दुःखी होना चाहिए या प्रसन्न? अरे भाई दुःखी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होने की क्या बात ! पहले लिया है इस लिये तो खाते में नाम लिखा है थोड़ा-थोड़ा जितना भी वसूल किया जा रहा है, उतना कर्जा कम ही तो हो रहा है। इसी प्रकार सोचो जब विधाता ने हमारेकर्मों के अनुसार ही प्रारब्ध बनाया है। और हमारे उन्हीं पाप कर्मो के फल स्वरूप दुख आया है तो हमें दुखी क्यों होना चाहिये अजी, घबराओ नहीं इस दुःखद्वारा आप का पाप रुपी क़र्जा कम ही हो तो रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि दुःखी होने की ?

२७

विचार करो—घड़ी की चाभी ऐंठने में तो सिर्फ एक दो मिनटही लगते हैं, पर क्या उस घड़ी को एक दो मिनट ही 'टिक टिक' करना पड़ता है ? कदापि नहीं। उस एक दो मिनट की चाभी के फलस्वरुप बेचारी घड़ी को २४ घण्टे से अधिक समय तक 'टिक टिक' करना पड़ता है। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, यदि इस मनुष्य योनि के कुछ काल में यदि दुसरों को दुःख दिया तो उसके फल-स्वरुप उतने ही काल तक नहीं बल्कि ८४ लाख योनियों में वही दुःख भोगना पड़ेगा।

२८

विचार करो—क्या राजा कभी कहता फिरता है कि "मै राजा हूँ" "मै राजा हूँ"। कदापि नही। परन्तु क्या उसके तेज व भय से ही मंत्री कोतवाल आदि नौकर उसके आज्ञानुसार काम नही करते ? वे तो बेचारे हाथ जोड़े ताकते रहते हैं कि राजा साहब की क्या आज्ञा होती है कि आज्ञा निकलते ही फौरन तामील हो जाय। इसी प्रकार विस्वास रक्खो, "मै ब्रह्म हूँ—मैं ब्रह्म हूँ"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कहने की अवश्यकता नहीं है। इतने शक्तिमान् बन जाओ कि मन इन्द्रियाँ आदि सभी तुम्हारे वश में हो जाँय, तुम्हारी आज्ञा के पालन के लिये तुम्हारी ओर निरन्तर ताकती रहें। यदि मन इन्द्रियाँ तुम्हारी आज्ञा की नहीं बल्कि भोगो की बाट जोहती रहती हैं तो समझलो ब्रह्म नहीं भ्रम हो अभी खूब वैराग्य-अभ्यास बढ़ाओ। अन्तःकरण की मलीनता हटाने के लिये खूब सेवा करो।

२६

विचार करो—खेत में काँटेदार बबूल बेरी इत्यादि जम जावे तो एकान्त में बैठकर रोना चाहिये कि पुरुषार्थ द्वारा कुल्हाड़ी फावड़ा लेकर उन बबूलादि को जड़ सहित काट फेंक देना चाहिये ? अवश्य काट देना चाहिए, उनकी जगह आम बोकर फिर कांटो के बजाय मीठे-मीठे आम का स्वाद उठाओ इसी प्रकार याद रक्खो, बुरा प्रारब्ध होवे तो रोओ चिल्लाओ घबड़ाओ नहीं— दृढ़ पुरुषार्थ करो। सत्पुरूषो का संग सत्शास्त्रों का मनन निरन्तर सदभ्यास करो कि जिससे आगे तो आनन्द मिले।

३०

विचार करो—लाल शीशे का चश्मा लगाकर देखने से सभी पदार्थ लाल ही लाल तथा पीले शीशे के चश्मे से सब पीला ही पीला दीखने लग जाता है परन्तु क्या वह देखना ठीक है ? कदापि नहीं। ठीक तो तब दिखाई देगा जब चश्मा हटाकर बिना चश्मे यूं ही देखा जाय। इसी प्रकार, जानते हो, यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संसार भी इन्द्रियों के चश्मे द्वारा देखने से ही सत् मालूम होता है, बुद्धि के चश्मे द्वारा देखने से तो असत् मालूम होने लगता है। और यदि कहीं मन इन्द्रियों व बुद्धि के चश्मे को हटाकर इसे देखोगे तो इसका अभाव हो जायगा, ढूढ़ने पर भी यह दिखाई नहीं देगा।

३१

विचार करो—जानते हो पति के सब कुछ पर पत्नी का अधिकार कब होता है? जबकि वह अपना सब कुछ पति को अर्पण कर देती है। इसी प्रकार, याद रक्खो, अपना सब कुछ देने पर दे प्रियतम का सब कुछ मिल सकेगा।

३२

विचार करो— पत्नी का अपना सब कुछ पति को अर्पण करने पर पति के सब कुछ पर पति का अधिकार हो जाता है। परन्तु जानते हो उसे पति की प्राप्ति कब होती? जब वह अपने को पति के समर्पण कर दे। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, अपने सब कुछ देने पर प्रियतम का सब कुछ तो मिल जायगा परन्तु प्रियतम की प्राप्ति तो अपने को दे देने पर ही होगी।

३३

विचार करो—सूर्य के उदय होते ही क्या अन्धकार का अन्त नहीं होजाता है? अवश्य हो जाता है। इसी प्रकार घबराओ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं, व्याकुलता बढ़ाओ, उनके बिना चैन से न रहो, विरह उत्पन्न करो। विरह उत्पन्न होते ही सारे दोषों का अन्त होजायगा। दोषों के अन्त होते ही उनकी प्राप्ति तो अपने आप ही हो जाती है अर्थात् उनकी अप्राप्ति तो तब तक ही है जब तक कि विरह की कमी है।

३४

विचार करो—सुन्दर शरीर भी हो, तिस पर सुन्दर वस्त्र तथा सुन्दर आभूषण भी पहना हुआ हो किन्तु यदि शरीर में प्राण नहीं तो क्या वे सब वस्त्र-आभूषणादि बेकार नहीं ? बेकार अवश्य हैं। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, जप-तप, पाठ-पूजा कीर्तन प्रार्थना आदि सब कुछ करते हो परन्तु यदि भगवान् के प्रति श्रद्धा नहीं तो भगवत्-प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती।

३५

विचार करो—अनेक दोष युक्त कपूत-पूत भी जब पिता के चरणों में गिर जाता है तो क्या वे माता-पिता उसे क्षमा नहीं कर देते हैं ? फौरन कर देते हैं। इसी प्रकार अपने अवगुणों की ओर देखकर घबराओ नहीं। तुम हृदय से उनकी शरण में चले जाओ। वे पतित-पावन हैं, वे परम पिता हैं, वे तुम्हें फ़ौरन क्षमा करके अवश्य अपनी गोद में लेलेंगे।

३६

विचार करो—निद्रा क्यों आती है ? दिन भर काम करते-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करते बेचारा प्राणी थक जाता है। तब उसे अपनी गोद में विश्राम देने को निद्रा-देवी आती हैं कुछ के समय बाद वह नया जोश व होश लेकर पुनः काम में जुट जाता है। इसी प्रकार, जानते हो, "मृत्यु क्या है ?" जीवन की कुछ इच्छायें पूर्ण हो चुकी हैं, कुछ इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयत्न कर रहे हैं और कुछ इच्छायें जमा हैं। जब जीवन की क्रिया-शक्ति क्षीण हो जाती है और इच्छायें शेष रह जाती हैं, तब प्रकृति-माता नई क्रिया शक्ति प्रदान करने को कुछ काल के लिये अपने में विलीन कर लेती और फिर नवीन जीवन देती है। अस्तु जो इच्छायें शेष रह जाती हैं, उनकी पूर्ति के लिये मृत्यु एक अवस्था है और कुछ नहीं।

३७

विचार करो—बेचारा कोल्हू का बैल सुबह से चलना प्रारंभ करता है, दिन भर चलता है फिर रात्रि में विश्राम करके पुनः चलना आरम्भ कर देता है और यों ही चलते-चलते उसे दिन पर दिन, मास पर मास, वर्ष पर वर्ष बीत जाते हैं परन्तु जब कभी वह देखता है तो अपने को वहीं का वहीं पाता है जहाँ से चला था। इसी प्रकार याद रक्खो, बेचारा विषयासक्त प्राणी आनन्द की खोज में पंच विषयों (शब्द स्पर्श आदि) के दायरे में रहता है परन्तु आनन्द की प्राप्ति कर नहीं पाता। जब देखता है तब ही अपने को दुःख व चिन्ताओं के घेरे में ही पाता है। जानते हो उसे आनन्द की प्राप्ति कब हो सकेगी ? जब कि वह उस शब्दादि पंच-विषयों के चक्कर में चलना छोड़ कर चक्कर से बाहर चलना प्रारम्भ कर दे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सुबह होती है शाम होती है।
उम्र यूं ही तमाम होती है॥

३८

विचार करो—दाद खुजलाने में बड़ा मजा आता है इस मजे को न तो वेचारी वाणी ही वर्णन कर पाती है, न लेखनी ही लिख पाती। जिस पर दाद की कृपा है वही अनुभव कर सकता है। जी चाहता है निरन्तर खुजलाते ही रहें, क्योंकि खुजलाना बन्द करने पर बेचारे दाद के रोगी को कल नहीं पड़ती, इसी प्रकार विश्वास रक्खो, भगवद् भजन का आनन्द अनिर्वचनीय है, भगवद् भक्त ही इसका स्वयं अनुभव कर सकता है भगवद् भजन के बिना उससे एक क्षण भी रहा नहीं जाता। भजन में क्षण भर की बाधा भी उसे असह्य हो जाती है निश्चय रक्खो—जो भजन के बिना क्षण भर भी रह सकता है यह भगवद् भक्त नहीं हो सकता। उसे शुभ कर्मी कह सकते हैं!

३९

विचार करो—जब तक बच्चा खिलौने से हँसता खेलता रहता है तब तक क्या उसकी मां उसको गोद में लेकर दूध पिलाती है? कदापि नहीं। परन्तु जब वही बच्चा खिलौना फेककर केवल रोने मचलने ही लग जाता है, तो क्या वही मां सब छोड़कर दौड़कर उसे गोद में नहीं ले लेती? अवश्य ले लेती है। इस प्रकार निश्चय रक्खो, जब तक हम धन, मकान, कुटुम्ब, मान बड़ाई आदि में रस लेते रहेंगे तब तक भगवान् दर्शन नहीं देंगे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परन्तु जब इनसे मुँह मोड़कर भगवान् के लिये अति व्याकुल हो जायेंगे तो फिर भगवान दर्शन देने को मजबूर हो जावेंगे। वे पल भर भी नहीं रुक सकते।

४०

विचार करो—कोई महात्मा कृपा करके हमें कुछ दिनों के लिये पारस बटिया दे दे और हम उस बटिया से लोहा स्पर्श करवा कर स्वर्ण तो बनायें नहीं—परन्तु सिलपर मसाला पीसने के काम में लावें तो क्या यह हमारी मूर्खता नहीं ? अवश्य है। इसी प्रकार विश्वास रक्खो—जो प्राणी इस देव दुर्लभ मनुष्य योनि को पाकर भी यदि भगवत्प्राप्ति तो करता नहीं पर सारी आयु भोगों की प्राप्ति में ही नष्ट कर रहा है व मूर्ख नहीं तो और क्या ?

४१

विचार करो—बच्चे के सामने एक १००) सौ रुपये का नोट रक्खो और पास ही बढ़िया रङ्गीन एक आने वाला चित्र रक्खो। बच्चा १००) का नोट नही उठायेगा, वह उठायेगा एक आने वाला रंगीन चित्र। बीस वर्ष बाद फिर उसके सामने वे ही दोनों वस्तुयें रक्खो—इस बार वह चित्र नहीं उठायेगा, वह उठायेगा १००) का नोट। कारण जानते हो इसका ? इसका कारण है कि जब वह बच्चा था तब वह अज्ञानी था-पदार्थों की रमणीयता में ही सुखी था, प्ररन्तु, जब वह बड़ा हो गया तो उसमें समझ आ गई—वह अब केवल ज्ञानेन्द्रियों से नहीं देखता बुद्धी के नेत्रों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

से भी देखता है। इसी प्रकार याद रक्खो—जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा रमणीय दिखने वाले पदार्थों में भी बुद्धी के नेत्रों द्वारा उचित अनुचित सत् असत् की जाँचकर सुख दुःख देखता है वही ठीक देखता है।

४२

विचार करो—जब एक साधारण पुरुष की पत्नी से भी यदि कोई अन्य पुरुष प्रेम करना चाहता है तो उसका पति उस अन्य पुरुष पर कितना क्रुद्ध होता है ? कई कई तो मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं। फिर भला सोचो तो सही उस सर्व व्यापक सर्वशक्तिमान् पुरुषोत्तम प्रभू की पत्नी अर्थात् लक्ष्मी से ही जो प्रेम करना चाहता है, क्या भगवान उससे प्रसन्न होते होगे ? कदपि नहीं। विश्वास न हो तो रावण का हाल पढ़लो—वह तो केवल भगवान की पत्नी से ही प्रेम करना चाहता था, सो क्या फल पाया ? हनुमान जी ने लंका जला दी और—

'रहा न कोऊ कुल रोवन हारा'

हाँ यदि लक्ष्मी को चाहते हो तो सबसे सरल उपाय है कि भगवान् को अपना लो, लक्ष्मी तो दौड़ी आवेंगी उनके चरण दबा ने को।

४३

विचार करो—यदि आशा लगाये वैठे हो कि "यह कार्य करके फिर निश्चिन्त होकर भजन सत्सङ्ग करेंगे" तो यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सरासर भूल है । जैसे तराजू में दस सेर मेढ़क तौलना कठिन है क्योंकि जब तक पाँच मेढ़क पलड़े में रक्खोगे तब तक उसमें से दस फुदक जायँगे । इसी प्रकार माया के कार्य चाहो कि पूरे हो जाँय, सो पूरा करना कठिन ही नहीं असम्भव है! लड़की का विवाह किया तो औरत बीमार हो गई, औरत ठीक हुई तो गाय खो गई, गाय मिली तो दीवार गिर गई आदि आदि एक न एक झंझट आगे से आगे लगा ही रहेगा । अतः भजन सत्संग करना अभी इसी समय से प्रारम्भ कर दो।

४४

विचार करो—जो बीज जमीन में गाड़ दिया जाता है वह तो यथासमय अङ्कुरित होकर पुष्प-फल आदि दे देता है किन्तु जो बीज ज़मीन के ऊपर ही रक्खा रहेगा क्या वह पुष्प-फल आदि देगा ? कदापि नहीं। उसको या तो चिड़ियाँ ही चुग जायंगी या यूँ ही नष्ट हो जायगा। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, शास्त्र व संतों के उपदेश यदि हमने बुद्धि में निश्चय करके हृदय में धारण नहीं किये और केवल पढ़-सुन कर दूसरों को उपदेश देने के लिये वाणी आदि इन्द्रियों तक ही सीमित रक्खे तो वास्तविक लाभ अर्थात् परमानन्द की प्राप्ति नहीं होगी । मान-प्रतिष्ठा, भोग-पदार्थ भले ही मिल जायँ । वास्तविक लाभ तो तब होगा जब उन उपदेशों को हृदय में धारण करके तदनुसार आचरण करें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

४५

विचार करो—लखपती सेठ की दूकान में मनों अफीम भरी है परन्तु क्या वह उसका मनमाना प्रयोग कर सकता है? कदापि नहीं। वह अपने लिये तो उसका उतना ही उपभोग कर सकता है जितना कि गवर्नमेंट ने उसको परमिट दिया है। यदि वह उससे अधिक का उपभोग करले तो जानते हो उसकी क्या दशा होगी? दूकान जब्त और जेलखाना ऊपर से दक्षिणा में। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, इस संसार में हमारे पास भोगों की भले ही वाहुल्यता हो और हमें भोगने की सुलभता भी प्राप्त हो परन्तु यदि हमने बिना बड़ी सरकार अर्थात् भगवान् की आज्ञा के (जो कि वेद-शास्त्रविहित है) मनमाना भोगना प्रारम्भ कर दिया तो मनुष्य योनि तो छीन ही ली जायगी साथ ही कूकर-शूकर आदि ८४ लाख योनियों के जन्म मरणादि का दुःख उठाना पड़ेगा प्रसाद में।

४६

विचार करो—अग्नि की अपेक्षा अग्नि के संग से गर्म हुआ लोहा एक प्रकार से अधिक शक्तिमान होता है। अग्नि को तो बहुत से व्यक्ति (हुक्का चिलम पीने वाले) हाथ में, ले भी लेतें हैं परन्तु उस अग्नि द्वारा गर्म हुए लोहे को तो कोई स्पर्श भी नहीं कर सकता। जानते हो क्यों? क्योंकि लोहे ने अपने को अग्नि के समर्पण कर दिया है। इसी प्रकार, याद रक्खो—जो वस्तु भगवान नहीं दे सकते, भगवान् के प्रेमी भक्त वह वस्तु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भी दे देते हैं। इसीलिये भगवान् अपने निज के अपराधी को भले ही क्षमा करदें परन्तु अपने भक्त के अपराधी को किसी भी काल में क्षमा नहीं करते।

४७

विचार करो—तेरह दिन के लघन से उठे बीमार पुत्र को तो स्नेहमयी माता मूँग की दाल का पानी और अन्य स्वस्थ पुत्रों को चकाचक हलुआ, रबड़ी खाने को देती है, क्या इस बीमार बालक पर माता की कृपा कम है? कदापि नहीं इस निर्बल बालक पर तो विशेष कृपा है, क्योंकि यदि वह मूँग की दाल का पानी न देकर थोड़ा भी गरिष्ट भोजन खिला दे तो निश्चय समझो वह पुत्र पुनः अधिक बीमार हो जायगा—मृत्यु के दर्शन न हो जाएँ तो गनीमत है। इसी प्रकार, याद रक्खो संत महात्मा यदि दूसरों को तो भक्ति ज्ञान का उपदेश करते हों और हमको सेवाकार्य का आदेश देते हों तो क्या संत की हमारे ऊपर कम कृपा है? कदापि नहीं। क्योंकि यह नियम है बिना सेवा किये अन्तःकरण की शुद्धि होती नहीं, और बिना अन्तःकरण की शुद्धि के भक्ति, ज्ञान, वैराग्यादि हृदय में नहीं ठहर सकते। बिना सेवादि निष्काम कर्म किये यदि कहीं भक्तिज्ञान के स्थान पर शुष्क ज्ञानाभास होगया तो लेने के देने पड़ जायँगे।

४८

विचार करो—बच्चे की बनियान माता उतारती है तो वह रोता है। जानते हो क्यों? इस लिये कि वह यह नहीं जानता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कि माता उसे नया रेशमीन बनियान पहिनाने के लिये ही उसका गन्दा बनियान उतार रही है इसी प्रकार—याद रक्खो जो जाता है उसे जाने दो; रोओ मत, शोक मत करो, निश्चय ही तुम्हारी उन्नति के लिये ही भगवान् वह वस्तु तुमसे हटा रहे हैं।

४९

विचार करो—साइकिल यदि असावधानी के कारण किसी से टकरा जावे तो साइकिल चलाने वाले को सजा नहीं होती, परन्तु यदि मोटर बस किसी से टकरा जाय तो मोटर ड्राइवर को सजा अवश्य ही जायगी और लाइसेन्स जब्त कर लिया जायगा सो बट्टे में—जानते हो क्यों? इस लिये कि साइकिल की टक्कर से तो साइकिल चलाने वाले या एक दो व्यक्ति को ही चोट पहुँचेगी, लेकिन मोटर बस के टक्कर (Accident) से अनेकों का नुकसान हो जायगा। उस पर ज्यादा जुम्मेवारी है। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो—साधारण व्यक्तियों से यदि कुछ नीति विरुद्ध कार्य हो भी जाय तो उन्हीं की हानि होगी, परन्तु यदि किसी सम्पादक, उपदेशक, अध्यापक, नेता, अधिकारी, आदि किसी जिम्मेदार व्यक्ति से कोई नीति विरुद्ध कार्य हो जायेगा तो उसे प्रकृति (Nature) द्वारा कठोर दण्ड मिलेगा क्योंकि उसकी उस नीति विरुद्ध क्रिया से उसके पीछे चलने वाले समाज की बहुत हानि होती है।

५०

विचार करो—कन्नौज में इतर वालों की दुकान पर बैठने से ही अथवा इतर फरोश (गन्धी) के पेटी खोलते ही सुगन्धि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का आनन्द आने लगता है और यदि इतर कपड़ों में लगा लिया तो फिर कई दिन तक सुगन्धि का आनन्द लूटो। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, परमार्थ कल्याणादि आध्यात्मिक साहित्य माँगने मात्र से तो पुण्य होगा ही, और यदि कहीं एक दो लेख पढ़ कर इसके अनुसार आचरण कर लिया तब तो कई उलझनें सुलझ जायगी, दुःख सुख में परिवर्तित हो जायगा और हृदय में अपार शान्ति भर जायगी।

५१

विचार करो—सभी परीक्षार्थियों को कापी कलम, पर्चा और ढाई घण्टे का समय मिलता है कि उतने निश्चित समय में वह कापी में पर्चे का उत्तर लिख दे। परन्तु क्या उसको यह स्वतत्रंता नहीं कि वह उस समय तक लिखता रहे किवाँ बैठा रहे? पर्चे का उत्तर ही लिखे कि वहाँ यूं ही अन्ट संट लिख मारे? स्वतन्त्रता तो अवश्य है किन्तु उत्तीर्ण वही होगा जो पाठ्य पुस्तकों में लिखे अनुसार ही पर्चे का उत्तर देगा और उसी को सर्टीफिकेट भी मिलेगा। इसी प्रकार—याद रक्खो, यह संसार परीक्षा भवन है जिसमें हम सभी मनुष्य हैं परीक्षार्थी। इस संसार में परिस्थितियाँ तो आयेंगी ही; (अनुकूल हो किंवा प्रतिकूल) परन्तु हमको उनके हल करने की स्वतन्त्रता है। चाहे हम विचार पूर्वक शुद्ध धर्मानुसार व्यवहार करें अथवा मन इन्द्रियों के अनुकूल अशुद्ध व्यवहार करें। समय तो पूर्व निश्चित है जब कि यह मानव देह छोड़ना ही पड़ेगा। चाहे राजी खुशी से छोड़ो अथवा रोकर। हां निश्चित समय तक परिस्थितियों का उत्तर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यदि धर्मानुसार शुद्ध ही व्यवहार द्वारा दिया तो उत्तीर्ण कर दिए जाओगे अर्थात् पूर्ण सुख शान्ति वाला पद दे दिया जायगा, अन्यथा मन इन्द्रियों के अनुकूल अशुद्ध स्वार्थपूर्ण व्यवहार करने पर तो कुत्ता सुअर, चूहा छिपकली चींटी आदि चौरासी लाख योनियों में "पुनरपि मरणं पुनरपि जननं" का महा दुःख उठाना पड़ेगा।

५२

विचार करो—परीक्षा भवन में बैठने वाले परीक्षार्थी के सामने प्रश्न-पत्र (Examination question Papers) तो रक्खे जावेंगे ही, कठिन हो वा सरल। परन्तु यदि प्रश्न कठिन आये, तो क्या परीक्षार्थी को उन्हें देखकर उदास या दुखी होना चाहिये? अथवा शान्त चित्त होकर विचार पूर्वक उनको हल करना चाहिये? इसी प्रकार, सोचो तो—संसार में जब जन्म हो ही गया तो अनुकूलता प्रतिकूलता, आयेंगे ही—विचार शील को शान्तचित्त होकर विवेक पूर्वक उनको सहन करना तथा उसे भविष्य में न आने पावे इसके लिए पुरुषार्थ करना चाहिये, किंवा दुखी होकर रोना-चिल्लाना चाहिये? याद रक्खो—जो सहनशीलता एवं पुरुषार्थ का सहारा नही लेगा; उसका दुःख ब्रह्मा भी नही मिटा सकते।

५३

विचार करो—बाप-दादा की गुप्त नोटबुक (बही) में यदि यह लिखा मिल जाय कि "चूल्हे के नीचे जमीन में एक गज

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पर अशर्फियों का घड़ा गड़ा है"—तो क्या उम्र भर उस नोटबुक की पूजा-आर्चा अथवा बारम्बार 'चूल्हे के नीचे जमीन में... .. घड़ा गढ़ा है" इस वाक्य के पाठ से वह अशर्फियों का घड़ा प्राप्त हो जायगा ? कदापि नहीं। उस गुप्त धन को प्राप्त करना है तो फावड़ा उठाओ—चूल्हे के नीचे एक गज गहरा गडढ़ा खोदो —घड़ा निकालो और आनन्द लूटो। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, केवल गीता-रामायणादि सद्ग्रन्थों की ही उम्र भर पाठ-पूजा करते रहे और उसमें लिखे अनुसार वचनों पर अमल नहीं किया तो दुःख की निबृत्ति तथा परमानन्द की प्राप्ति कदापि नहीं होंगी। संतो व सत्शास्त्रों के उपदेशानुसार क्रियात्मक जीवन बनाने पर ही दुःख निवारण हो सकेगा।

५४

विचार करो—सेठ जी अपनी बम्बई वाली दुकान का माल दिल्ली वाली दुकान पर भेजें तो बम्बई वाली दुकान के मुनीम को क्या इसके लिये रोना-धोना या दुखी होना चाहिये? कदापि नहीं। यदि वह दुःखी होता है तो यह उसकी सरासर मूर्खता है। अरे भाई ! सेठ जी की खुशी है वह अपना माल चाहें जहाँ भेजें। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, जो व्यक्ति भगवान की वस्तु को अपना मानकर भगवान् के इधर से हटा कर उधर भेजने पर मन मैला करते हैं वा दु.खी होते हैं वे भक्त नहीं बेईमान हैं। भक्तों को तो अपने स्वामी प्रभु के हर विधान में सदा सन्तुष्ट रहना चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

५५

विचार करो—सिनेमा हाल में बैठकर यदि पर्दे पर के अश्लील एवं भयानक दृश्यों से अपना मन मैला नहीं करना चाहते हो तो जानते हो तुम्हें क्या करना चाहिये ? यातो(१) परदे को सुधारने का प्रयत्न करने के बजाय फिल्म का सुधार करो—अर्थात् सदाचार शिष्टाचार पूर्ण शिक्षाप्रद फिल्म चढ़ा लो। या(२) परदे की ओर से नजर हटाकर मशीनघर (Operator house) की ओर देखने लग जाओ। (३) टार्च का प्रकाश डालने से तो दृश्य ही गायब हो जायगा और दिखाई पड़ेगा केवल परदा। इसी प्रकार नोट करलो, यदि जीवन में रोग-शोक आदि दुःख नही चाहते हो तो संसार को सुधारने की व्यर्थ चेष्टा मत करो बल्कि या तो (१) अपने निजी कर्मों को सुधारो; या (२) संसार से मुँह मोड़ कर भगवान् की शरण ग्रहण करो। (३) ज्ञान से तो संसार का अभाव ही हो जायगा और रह जायगा केवल एक सर्वव्यापी परमात्मा ! फिर कौन दुःख ? कैसा दुःख ? और किसको दुःख ?

५६

विचार करो—एक मन दूध को मीठा बनाने के लिये तो कम से कम ५ सेर शक्कर की आवश्यकता है किन्तु समस्त दूध फाड़ देने के लिये एक तोला खटाई ही पर्याप्त नहीं है ? इसी प्रकार, याद रक्खो—बहुत दिनों के सत्संग भजन द्वारा शुद्ध किये हुये अन्तःकरण को क्षण भर का कुसंग मलिन बना देता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है। पतन के गहरे गर्त्त से बचने के लिये कुसंग से ही सावधान रहो।

५७

विचार करो—सपेरा साँप के जहरीले दाँत निकाल देता है फिर उससे निर्भय होकर मनमाना खेल करता है साँप उसे कोई कष्ट नहीं पहुँचा पाता। इसी प्रकार मन में से वासनायें निकाल डालो फिर संसार में रहो लोक व्यवहार करो, यह संसार दुखदायी न रहेगा।

५८

विचार करो—खेत में घास बोई नहीं जाती अपने आप उत्पन्न हो जाती है, परन्तु गेहूँ चना धान आदि अन्न पैदा करने के लिये तो पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। जोतना खोदना और बोना पड़ता है। इसी प्रकार याद रक्खो— काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, दम्भ, झूठ आदि तो अपने आप ही आजायँगे परन्तु ज्ञान; वैराग्य, सत्य, दया आदि सद्गुणों के लिये तो सत्संग भजन आदि परमपुरुषार्थ करना ही होगा।

५९

विचार करो—पुत्र पिता को नित्य प्रणाम भी करे उनके चरण भी दबावे लेकिन बाद में मारपीट भी कर दे अथवा लोटा भर पानी मांगने से न दे, तो क्या वह पिता उस पुत्र पर प्रसन्न होगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार जो भगवान के नाम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का जप भी करते हैं, प्रार्थना भी करते हैं दानादि भी देते हैं परन्तु भगवान् की आज्ञा (शास्त्रोक्त धर्म संगत-व्यवहार) का पालन नहीं करते। प्राणियों को तन मन या वचन से कष्ट पहुँचाते हैं इससे क्या सर्व-भूत हृदयस्थित प्रभु प्रसन्न होंगे? कदापि नहीं। भला इसी में है कि—किसी को दुःख मत दो बने तो सुख दो।'

६०

विचार करो—"ऊँट काँटे खाता है और खाना पसन्द करता है पर जितना खाता है उतने ही काँटे उसके मुँह में चुभ कर उसे कष्ट देते हैं। परन्तु वह काँटे खाना नहीं छोड़ता खाता ही जाता है। यही दशा बद्ध जीवों की है। वे इस संसार में नाना प्रकार की यातनायें सहते हैं तो भी उसी में लगे ही रहते हैं। स्त्री मर जाती है तो फिर व्याह करते हैं, पुत्र की मृत्यु पर दुःख से बहुत ही व्याकुल हो जाते हैं। परन्तु पीछे सब भूल कर फिर उसी जंजाल में रत हो जाते हैं।

६१

विचार करो—एक मास के नवीन पौधे को बकरी का बच्चा भी सरलता से नष्ट कर सकता है, किन्तु बीस वर्षों के पश्चात् जब वह पौधा बड़ा होकर वृक्ष बन जाता है तब बकरी क्या हाथी भी उसका विनाश नहीं कर सकता। इसी प्रकार नवीन साधक का पतन साधारण कुसंग से भी हो सकता है किन्तु निरन्तर साधन अभ्यास के द्वारा वही साधक जब सिद्ध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बन जाता है। तब उसको अपने स्थान से कोई च्युत नहीं कर सकता।

६२

विचार करो—अपनी जननी सिंहनी की गोद में बैठा हुआ सिंह का बच्चा क्या कभी हाथियों के झुन्ड से घबराता है ? कदापि नहीं। इसी प्रकार जिसने अपने आप को भगवान की गोद में समर्पित कर दिया है क्या उसे दुःख, शोक, भय आदि से घबराना चाहिए ? महान से महान दुःख अपमान उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकने, और यदि शोक, दुःख से हृदय किञ्चित भी विचलित हो गया तो समझ लो अभी भगवान की गोद प्राप्त नहीं हुई।

६३

विचार करो—बांस के उसी पोंगी की बांसुरी सुन्दर बनती है जिसके बीच में गांठ नहीं होती। वही बांसुरी अन्दर से स्वच्छ होने पर नीरस हृदय को भी मोहने वाली बन जाती है। इसी प्रकार जिस व्यक्ति के हृदय में छल, कपट रूपी गांठें नहीं पड़ी हैं तथा जिसका अन्तःकरण बांसुरी की तरह स्वच्छ है उसकी मधुर एवं करुण पुकार सुनकर भगवान् अवश्य ही उसकी ओर खिंच आवेंगे।

६४

विचार करो—शीतल सलिला सरिता तक पहुँचने के लिये पहले हमें रेत में चलना पड़ता है, रेत पार करने के बाद ही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उसमें डुबकियाँ लगाने को मिलती हैं, याद रक्खो इसी प्रकार सुख शान्ति के समुद्र भगवान् को पाने के लिये जलते हुये रेत के समान संयम नियम त्याग तपस्या आदि के कष्ट उठाने ही पड़ते हैं, यदि यह कष्ट झेलकर पार हो गये तो जानते हो क्या मिलेगा ? अपार सुख, अपार शान्ति और अवर्णनीय आनन्द ।

६५

विचार करो—बढ़ई लकड़ी को साफ और उपयोगी बनाने के लिये खराद चलाता है और यदि लकड़ी तो हटा दी जाय और बढ़ई खराद चलाता रहे तो क्या उसकी मूर्खता नहीं ? अवश्य है क्योंकि विना लकड़ी के ख ाद चलाना व्यर्थ है ! इसी प्रकार याद रक्खो मन पर मन्त्र रूपी खराद चलाकर उसे स्वच्छ और उपयोगी बनाना है यदि मन हटकर इधर उधर कूद फांद मचाता रहे और मन्त्र का उच्चारण जिह्वा करती रहे तो क्या मन शुद्ध और सुन्दर बन सकेगा ? कदापि नहीं विना मन लगाये तो मन्त्र जाप व्यर्थ सा ही है ।

६६

विचार करो—जानते हो माता कौन से बच्चे को अधिक प्यार करती है किसे हृदय से चिपटाती है ? जिसे कोई गोदी नहीं लेना चाहता, जो बीमार है, और जो माता की ओर बांह उठाकर रिरिया रहा है । जिसे सब घृणित दृष्टि से देखते हैं और जो बच्चा बड़े भाई या पिता के गोद में खेल रहा है जिसको अन्य लोग प्यार कर रहे हैं उसकी ओर से माता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निश्चिन्त रहती है उसे चिपटाये चिपटाये काम नहीं करती। इसी प्रकार याद रक्खो जो संसार से तिरस्कृत हो चुका है दुःख दारिद्रय के कारण घृणित है, जिसको कोई सहारा देना नहीं चाहता, उसी को भगवान् अपनाते हैं, उसे ही चिपटाये रहते हैं और जिसे संसार अपनाये है, जिसे मान, पूजा, वैभव, ऐश्वर्य प्राप्त हैं, भगवान उसकी याद भी नहीं करते।

६७

विचार करो—लेखक अपना लेख पूर्ण रूपेण शुद्ध करके सम्पादक के पास प्रकाशित होने को भेजता है, उसकी दृष्टि में अपने लेख में कोई भी त्रुटि नहीं होती, परन्तु सम्पादक क्या उसे वैसा ही प्रकाशित करा देता है? नहीं। वह उस लेख को बार बार पढ़कर काटता छांटता है, शुद्ध करता है। जब लेख सम्पादक की दृष्टि में ठीक जँच जाता है तब वह उसे अपने पत्र में स्थान देता है। इसी प्रकार याद रक्खो कोई भक्त अपने को भक्त एवं ज्ञानी कहने लगे तो उसके कहने मात्र से क्या भक्त तथा ज्ञानी का पद मिलता है? कदापि नहीं। भक्त व ज्ञानी तो वह तब होता है जब भगवान् उसे खूब कष्ट दे दे काट छांटकर अपने अनुकूल बना लेते हैं। संसार से तिरस्कार दिलाकर अपनी ओर मोड़ लेते हैं।

६८

क्या चमारों की बस्ती में चमारों को दुर्गन्धि आती है? कदापि नहीं। पर राजा दुर्गन्धि के मारे वहाँ खड़ा नहीं रह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सकता इसी प्रकार निश्चय रक्खो भोगी पुरुषों के यहाँ विरक्त साधु महात्माओं को विषय भोगी की दुर्गन्धि जरूर आयेगी, पर भोगों को वह गन्ध प्रतीत नहीं होगी।

६९

विचार करो—यदि घोड़ा उछल कूद अधिक करता हो, सवारी नहीं करने देता हो तो जानते हो क्या करना चाहिये ? उसको कुछ दिन भूखा रखना चाहिये फिर हाथ में कोड़ा लेकर उसपर सवारी करो—घोड़ा सीधा-साधा आज्ञानुकूल चलेगा। इसी प्रकार याद रक्खो, यदि मन वश में नहीं होता हो, खूब चंचलता करता हो तो उसको पंच विषयो (शब्द, स्पर्श, रुप, रस और गन्ध) से भूखा रक्खो तथा संयम का कोड़ा अपनालो—वेचारा मन तो मदारी के बन्दर की भाँति आप की आज्ञानुसार नाचता फिरेगा।

७०

विचर करो—धर्मशाला में केवल तीन दिन तक ठहरने के लिये मुसाफिर को एक कमरा मिलता है, जिसमें कि सुविधा के लिये मेज कुर्सी पलंग दर्पण रक्खे होते हैं। यदि कोई उन पलंग दर्पण आदि का आराम भोगते-भोगते इनमें आसक्त होकर तीन दिन के बाद भी छोड कर जाना न चाहे तो क्या उसे धर्मशाला से वाहर जबरदस्ती नहीं निकाला जायगा ? अवश्य निकाला जायगा। इसी प्रकार निश्चय रक्खो इस संसार में हमको एक निश्चित अवधि तक ही ठहरने की अनुमति मिली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है। आराम के लिये धन वैभव, कुटुम्ब, परिवार आदि मिला है। यदि कोई इनके द्वारा प्राप्त आराम में आसक्त होकर नियत अवधि पर संसार सहित उनको छोड़ कर नहीं जाना चाहेगा तो क्या इस संसार से उसे जबरदस्ती नहीं निकाला जायगा। अवश्य निकाल दिया जायगा। भलाई इसी में है कि इस सुविधा के लिये प्राप्त वस्तुओं को सही सलामत इस ससार रूपी धर्मशाला के स्वामी को प्रसन्नता पूर्वक सौंप दें। अन्यथा दुःख उठाना पड़ेगा।

७१

विचार करो—जब तक बच्चा खिलौनों से हंसता खेलता रहता है, तब तक क्या उसकी माँ उसको गोद में लेकर दूध पिलाती है ? कदापि नहीं। परन्तु जब बच्चा खिलौने विलौने फेंक फाँककर रोने मचलने लग जाता है तब क्या वही माँ सब काम छोड़ कर दौड़कर उस बच्चे को गोद में नहीं ले लेती है। इसी प्रकार जब तक हम धन, मकान, कुटुम्ब आदि माया के खिलौने में आसक्त रहेंगे तब तक भगवान् दर्शन नहीं देंगे। भले ही एक दो खिलौने और दे देंगे। जब इन से मुंह मोड़कर भगवान के लिये अति व्याकुल हो जावेंगे तो विश्वास रक्खो फिर भगवान् के दर्शन में पल भर की भी देरी न लगेगी।

७२

विचार करो—चन्दन के पेड़ के पास जितने पेड़ पौधे होते हैं वे सभी चन्दन बन जाते हैं। परन्तु बांस और करील के पेड़ों की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जड़ें चाहे चन्दन के पेड़ की जड़ से मिली हुई ही क्यों न हों चन्दन नहीं बनते—जानते हो क्यों ? क्योंकि इन पेड़ों में गांठें होती हैं। इसी प्रकार निश्चय रक्खो संत महात्माओं के संग में रहने वाले सब संत बन जाते हैं पर जिनके हृदय में छल, कपट, पर दोष दर्शन, अभिमान रूपी गांठें हैं वे कभी संत नहीं बन सकते चाहे वे दिन रात संत महात्माओं के पास ही क्यों न रहते हों।

७३

विचार कीजिये—किसी रहँट के द्वारा जब कुएँ से पानी निकाला जाता है तो उसमें शब्द होना स्वाभाविक है। उस समय यदि कोई घुड़सवार अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिये रहँट वाले से कहे कि इसकी खटखट बन्द कर दो तो मैं अपने घोड़े को पानी पिलाऊंगा क्योंकि शब्द से घोड़ा चौंकता है। क्या यह सम्भव है ? कदापि नहीं। क्योंकि रहँट बन्द होने से खटखट बन्द होगी, साथ ही पानी भी बन्द हो जायगा और घोड़ा प्यासा रह जायगा। घोड़े की प्यास बुझानी है। तो उस खटखट में ही पानी पिलाना पड़ेगा। इसी प्रकार निश्चय कीजिये कि जीवन की अन्तिम सांस तक प्रतिकूलता और जंजाल की खटखट तो लगी ही रहती है और इसी खटखट में रहकर ही आप को मानव-जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति कर लेनी अत्यावश्यक है।

७४

विचार कीजिये—किसी मैले कुचैले वस्त्र को साफ़ किये बिना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यदि उस पर रंग चढ़ाया जायगा तो लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। जैसे रंग की आशा थी वैसा रंग नहीं चढ़ा, समय नष्ट हुआ, कपड़ा और रंग भी व्यर्थ गया। रंगने से पहिले उस कपड़े को भली भाँति साफ कर लेना चाहिये तब उस पर यथारुचि रंग चढ़ जायगा। इसी प्रकार अशुद्ध कलुषित अन्तःकरण को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने से पूर्व निष्काम सेवा द्वारा पहिले अपने अन्तःकरण को शुद्ध बना लेना चाहिये क्योंकि शुद्ध अन्तःकरण में ही वह तत्वज्ञान ठहर सकता है।

७५

विचार कीजिये—दर्पण के सामने जैसी आकृति आती है वैसा ही प्रतिबिम्ब उसमें दृष्टिगोचर होता है। दर्पण के भीतर अच्छा या बुरा कुछ नहीं है। वह तो निर्लेप है। इसी प्रकार निश्चय कीजिये कि निखिल ब्रह्माण्ड नियन्ता जगदीश्वर निर्लेप है उसमें किसी प्रकार के गुण-दोष का आरोप नहीं हो सकता। अर्थात् मनुष्य स्वयं जैसा कार्य करता है वैसा ही भला या बुरा फल भोगता है।

७६

विचार कीजिए—जो मनुष्य जिस रंग का चश्मा अपनी आँखों पर लगा लेता है उसे दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक वस्तु अर्थात् जड़ चेतन सभी कुछ उसे उसी रंग का दिखलाई पड़ता है इसी प्रकार जिस मनुष्य के हृदय में जिस प्रकार की भावना उठती है उसी भावना के अनुसार ही उसे सारा संसार प्रतीत होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

७७

विचार कीजिये—अध्यापक यदि अपने विद्यार्थी को दण्ड देता है तो क्या उसकी विद्यार्थी से शत्रुता है ? नहीं। अध्यापक तो उसे विद्वान बनाने एवं उसके भावी जीवन को सुखमय बनाने के निमित ही ताड़ना करता है। इसी प्रकार निश्चय कीजिये हम पर जो संकट दुख शोकादि आते हैं उन सभी में मंगलमय प्रभु की मंगल भावना छिपी हुई है। अपने अविनाशी अंश जीव की हित-कामना से ही उन दयामय की अहैतुकी कृपा रूप संकटों का आना अनिवार्य है।

७८

विचार करो—खेत में धान तो बोने से उगेगा परन्तु क्या फालतू घास अपने आप बिना बोये ही नहीं उग जाती है ? अवश्य उग जाती है। चतुर किसान वही होता है जो सावधानी पूर्वक धान को छोड़कर घास-घास काट लेता है। इसी प्रकार याद रक्खो, हमारे अन्तःकरण में भक्ति ज्ञान के शुभ भाव तो पुरुषार्थ से उत्पन्न किये जायँ परन्तु काम-क्रोध -लोभादि अवगुण तो अपने आप हो जायँगे। बुद्धिमान वही है जो अपने अन्तः-करण से अवगुणों को तो सावधानी पूर्वक निकालता रहता है तथा सत्संग-भजन द्वारा भक्ति-ज्ञान का अभ्यास करता रहता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

७९

विचार करो—रोगी बच्चा कड़वी औषधि पीना नहीं चाहता वह रोता है चिल्लाता है परन्तु उसकी माँ हाथ-पैर पकड़ कर, मुँह को चम्मच से खोल कर जबरदस्ती उसे वह कड़वी औषधि पिला ही देती है। मन के प्रतिकूल होने के कारण चाहे वह बच्चा उस समय माँ को भले ही शत्रु समझे परन्तु क्या माँ की उसपर अत्यन्त कृपा व प्रेम नहीं? अवश्य है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, रोग-दुःख आदि प्रतिकूल परिस्थिति के आ जाने पर रोवो नहीं यह न समझो कि परमपिता परमेश्वर की कृपा नहीं है। वे तो उस रोग-दुःखादि प्रतिकूल परिस्थिति द्वारा आपको इस भव रोग से छुड़ाना चाहते हैं। यह उनकी परम कृपा है।

८०

विचार करो—पति पत्नी से यह कह दे कि "मुझे तो तुम जब साधारण वस्त्राभूषण पहन कर आती हो तब बड़ी अच्छी लगती हो और जब इन विभिन्न डिजायनदार साड़ी तथा आभूषणों से रंगीली-छबीली बनकर आती हो, बोलना तो दूर रहा—जी चाहता है उस समय तुम्हारी ओर देखूँ तक नहीं" तो फिर क्या उसकी पत्नी कभी बढ़िया डिजायनदार वस्त्र व आभूषणों की माँग करेगी? कदापि नहीं इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, जब तक हमारे हृदय में विलासिता का भाव है तभी तक यह माया हमको भिन्न-भिन्न प्रकार प्रलोभनों द्वारा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आकर्षित करती रहेगी। परन्तु जब हमें सांसारिक विषयों से अरुचि अर्थात् वैराग्य हो जायगा तब यह माया में फँसाने वाले विलासितामय भोग आपके सामने उपस्थित ही नहीं करेगी।

८१

विचार करो—मिट्टी के ऊपर बीज डाल दो तो क्या वह उगेगा ? कदापि नही, उसे तो चिड़ियाँ आदि पक्षी चुग जायँगे, उगेगा वही बीज जो जमीन में दबाया जायगा। इसी प्रकार, याद रक्खो, सन्त महात्माओं के वचन आदि संशय-युक्त अथवा अश्रद्धा से सुने तो लाभ नहीं होगा, लाभ तो तभी होगा जब विश्वास पूर्वक सुनकर उनको हृदय में धारण करोगे।

८२

विचार करो—वर्षा से भीगने के डर से भगवान से क्या यह प्रार्थना करना कि "हे भगवान् मैं भीग रहा हूँ—क्या यह बुद्धिमानी है ?" कदापि नहीं। बुद्धिमानी तो यह है जो शक्ति भगवान ने दे रक्खी है उसका सदुपयोग कर के एक छाता खरीद लेवें। इसी प्रकार, याद रक्खो, भगवान से यह प्रार्थना न करो कि "हे भगवान मेरे पास दुःख आवे ही नहीं, सुख ही सुख आवे" परन्तु अखण्ड पुरुषार्थ द्वारा शुभ कर्म ही करो अशुभ कर्म कदापि न करो और परमात्मा से यह प्रार्थना भले ही करो कि "हे भगवान मुझे सद्बुद्धि दो कि मुझसे शुभ कर्म ही हों—अशुभ न हों।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

८३

विचार करो—हवा का संग करने से धूलि आकाश में उड़कर लोगों के मस्तक पर आसीन होती हैं और वही धूलि नीच जल के संग से कीचड़ बन जानी है लोग उसमें पैर डालना पसन्द नहीं करते। इसी प्रकार, याद रक्खो, सत् पुरुषों का संग करोगे तो इस लोक में तो मान प्रतिष्ठा सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी ही, साथ ही परलोक भी सुधर जायगा; और यदि दुष्टों, नीच प्रकृति के प्राणियों के साथ किया तो यहाँ भी दुःख पाओगे और परलोक में भी नरक भोगकर कूकर-सूकर चूहा-छिपकली आदि योनियों में जन्म लेना पड़ेगा।

८४

विचार करो—रात्रि में जब तक दीपक (लालटेन) नहीं जलाया जाता तबतक पतंगे इधर-उधर दुबके बैठे रहते हैं मानो समाधिस्थ हों परन्तु ज्योंही दीपक जलाया त्योंही वे उस पर टूट पड़ते हैं। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, ये मन इन्द्रियाँ जब तक सामने विषय भोग नहीं होता तभी तक साधु बनी रहती हैं; परन्तु ज्योंही सामने विषय-भोग आया कि ये उन पर टूट पड़ती हैं। साधक वही है जो भोग उपस्थित होने पर भी उन्हें भोगे नहीं।

८५

विचार करो—कोई अफीम खाना तो छोड़े नहीं और चाहे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कि नशा न आवे तो क्या यह सम्भव है कदापि नहीं। जानते हो नशा न हो इसके लिये उसे क्या करना चाहिये ? बस केवल इतना ही कि वह अफ़ीम आदि मादक वस्तुओं का सेवन छोड़ दे। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, कोई शास्त्रोक्त निषिद्ध कर्म (पाप कर्म) तो छोड़े नहीं और चाहे कि दुःख न आवे तो यह कदापि सम्भव नहीं है। यदि चाहते हो कि दुःख आवे नहीं तो दूसरों को दुःख देना छोड़ दो—पाप करना छोड़ दो—शास्त्रोक्त शुभ कर्म करो।

८६

विचार करो—रूखा खाओ चाहे रसीला पेट तो सभी से भर ही जायगा किन्तु जानते हो रसीले स्निग्ध और मधुर पदार्थों में स्वाद विशेष होता है। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो भगवान् को काम से, द्वेष से, भय से, प्रेम से कैसे भी भजो संसार से मुक्त तो हो जाओगे, किन्तु विशेष रस की प्राप्ति तो प्रेम मार्ग में ही होगी।

८७

विचार करो—पित्त के रोगी को मिश्री कड़वी लगती है परन्तु जानते हो पित्त की औषधि भी तो मिश्री ही है। नित्य मिश्री के सेवन से पित्त विकार चला जाता है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, कथा सत्संग, भजन में मन न लगना तो स्वाभाविक ही है। परन्तु कथा-सत्संग-भजन में मन लगाने का साधन भी कथा-सत्संग, भजन ही है। इच्छा-अनिच्छा से लगे रहो—यही करते रहो—मन स्वयमेव लग जायगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

८८

विचार करो—कुत्तों के बीच में एक रोटी का टुकड़ा डाल दो। जानते हो क्या होगा ? रोटी का टुकड़ा ज्यों का त्यों पड़ा रहेगा और कुत्ते आपस में लड़ करके लहु लुहान हो जायेंगे। इसी प्रकार, सोचो तो, क्या वे कुत्तों के समान नीच नहीं, जो एक तुच्छ से भोग के लिये लड़ते हैं—मुकदमें में हजारों रुपये खर्च कर देते हैं।

८९

विचार करो—पत्थर का टुकड़ा जब तक मार्ग में किंवा पर्वत के किनारे पड़ा रहता है तभी तक ठोकरें खाता रहता है—लोग उसपर मल मूत्र त्याग करते हैं। परन्तु जब वही कारीगर के हाथ के हथोड़े खा-खाकर एक मूर्ति के रूप में गढ़ दिया जाता है तो जानते हो लोग उसी पत्थर के सम्मुख जा जाकर क्या करते हैं ? क्या उसे अब भी ठोकरें खानी पड़ती हैं ? कदापि नहीं अब दूर-दूर के लोग कोसों चलकर श्रद्धा सहित उसके दर्शन को आते हैं, उस पर फूल चढ़ाते हैं—माला पहनाते हैं, पूजा करते हैं, आरती उतारते हैं, और हाथ जोड़ते हैं दण्डवत् प्रणाम करते हैं। इसी प्रकार याद रक्खो ? इस मानव जीवन के कष्ट व दुःखों से घबड़ाओ नहीं—समझो कि सृष्टि का रचयिता कारीगर परम पिता परमात्मा तुम्हें मूर्ति बना रहा है। उसकी आज्ञानुसार विलासिता को त्याग कर खूब अभ्यास करो, पुरुषार्थ करो, दुर्गुणों को त्याग कर सद्गुणों को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

धारण करो फिर निश्चय पूर्वक सभी लोग तुम्हें आदर की दृष्टि से देखेंगे तुम्हारी पूजा करेंगे फूल चढ़ायेंगे नहीं तो याद रक्खो मार्ग के रोड़े की तरह ठोकरें खाओगे।

१०

सोचो तो—पौधों की टहनियाँ तभी तक ऊँची-ऊँची रहती हैं जब तक कि उन पर फल फूल नहीं होते। जब वे फल-फूलों से लद जातीं हैं तो क्या वे ऊँची की ऊँची ही बनी रहती हैं ? कदापि नहीं। वे झुक जातीं हैं। इसी प्रकार निश्चय रक्खो विद्या पढ़ने का फल यही होना चाहिये कि तुम्हारे हृदय में नम्रता आवे व्यवहार में सदाचार शिष्टाचार हो और तन मन धन माता-पिता देश धर्म तथा गुरुजनों एवं भगवान की सेवा में लगे। यदि नम्रता की जगह मद-अभिमान बढ़ता है, सदाचार शिष्टाचार की जगह विलासिता तथा दम्भ छल कपट होता है, और माता-पिता, देश-धर्म व गुरुजन भगवान् में श्रद्धाभक्ति की जगह अनुशासन हीनता, नास्तिकता, आपस में वैमनस्य, राग द्वेष, आदि बढ़ता है तो सोचो तो सही क्या इस प्रकार की विद्या पढ़ने से वे अच्छे नहीं जो निरक्षर होते हुए भी नीति-मर्यादानुसार सदाचार पूर्वक खेती-मजदूरी करते हैं।

११

समझो—जो कम्पनी ऊपर का पैकिंग तो बहुत बढ़िया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लगाती है परन्तु भीतर का माल नकली रद्दी सड़ा-गला देती है, क्या उसका कोई विश्वास करता है ? कदापि नहीं। विश्वास तो उस कम्पनी का होता है जो पैकिंग चाहे साधारण (केवल माल की रक्षा के लिये) ही लगाती है पर माल असली पूरा और बहुत बढ़िया देती है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो जैसे-तैसे करके अनेक सार्टीफिकेट भले ही इकट्ठे करलो कीमती कपड़े-जूता, तेल-साबुन आदि वेष-भूषा से शरीर को भले ही सजा लो, इधर-उधर देख दाखकर रट रटाकर गद्य व पद्य कितना ही सुन्दर लिख दो या सुना दो; परन्तु निश्चय रक्खो जब तक अपनी भावना, तथा चरित्र उच्च न बनाया तब तक ये उपर्युक्त सार्टिफिकेट, वेष-भूषा और गद्य-पद्य सब व्यर्थ नहीं तो और क्या ? किसी महापुरुष ने कहा भी है... ...

If wealth is gone nothing is gone and health is gone something is gone but character is gone every thing is gone.

१२

विचार करो—दीपावली के अवसर पर हलवाई शक्कर के अनेक प्रकार के खिलौने बनाता है बच्चे उन्हें बड़े चाव से खरीदते हैं कोई कहता है मुझे हाथी दो, कोई गाय, कोई सिपाही तो कोई राजा माँगता है जिसके पास राजा है वह सिपाही वाले से अपने को श्रेष्ठ मानता है तथा जिसके पास हाथी है वह गाय वाले से अपने को अधिक धनी मानता है और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मारे घमण्ड के फूला नहीं समाता–दूसरे की अवहेलना करता है; पर क्या यह उसकी मूर्खता नहीं ? अवश्य है। हलवाई की दृष्टि से देखो तो सब शक्कर ही शक्कर है—सब खिलौनों में बराबर ही शक्कर लगी है न कोई बड़ा न छोटा। वह जब चाहे उन्हें चासनी बना सकता है तथा फिर खिलौने भी। इस प्रकार, विश्वास रक्खो, जो इन मिथ्या नाम रूपात्मक पदार्थों व शरीरों को पाकर अभिमान करते हैं किंवा अपने को बड़ा समझते हैं वे अज्ञानी नहीं तो और क्या ? ज्ञानी वही है जो सब नाम रुपात्मक भूत प्राणियों में एक परमात्मा को देखे फिर—

"निज प्रभुमय देखहिं जगत का सन करैं विरोध"

९३

विचार करो—शरीर पर भीगा मलमल का कुर्त्ता चिपक जाता है तो उसको उतारने में बड़ा कष्ट होता है परन्तु सूखा बड़ी आसानी से उतर जाता है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, इस शरीर व शरीर सम्बन्धित पदार्थों या व्यक्तियों में आसक्ति हो गई तो शरीर छोड़ते समय अत्यन्त कष्ट होगा। और यदि किसी से आसक्ति न की तो मरते समय कोई कष्ट न होगा—और मरना भी वही श्रेष्ट है कि:—

जहाँ में जब तू आया था सभी हँसते तू रोता था।
बसर कर जिन्दगी ऐसी सभी रोवें तू हँसता जा ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१४

विचार करो—राजस्थान में स्त्रियाँ विवाह गनगौर आदि उत्सव के अवसर पर सर पर तीन-तीन पानी के कलश रक्खे, हाथ में जलते दीपक की आरती रक्खे हुये ढोल की ताल पर बड़ा सुन्दर नृत्य करती हैं परन्तु कलश गिरने की बात दूर रही कलश में से पानी की एक बूंद भी नहीं गिर पाती। अर्थात उनका शरीर तो सुन्दर नृत्य में, मन इन्द्रियाँ ढोल की ताल में, बुद्धि कलशों में लगी रहती है। इसी प्रकार कुशल मनुष्य वही है जो शरीर को संसार का अंश मानकर शुभ संकल्प से सभी भूत प्राणियों की [संसार की] सेवा एवं मन से भगवान् की उपासना तथा बुद्धि से परमात्मा का निश्चय करते हैं।

१५

विचार करो—कमरे में चूहा दिन-रात कलाबाजियाँ लगाता है बड़ा परेशान करता है परन्तु जानते हो उसकी कलाबाजियां कब बन्द होती है ? एक बिल्ली को कमरे में छोड़ दो बस अब तुम्हें ढूँढ़ने पर भी पता ही नहीं लगेगा कि चूहा कहाँ है। बेचारा सारी कलाबाजियां भूलकर किसी कोने में छुप जाता है। इसी प्रकार याद रक्खो कि यह मन तब तक उछल कूद मचाता रहेगा जब तक इसको 'मरने' का भय नहीं दिखाओगे। वैराग्य का पद सुनाते ही अथवा सत्संग में बैठते ही इसकी नानी मर जायगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१६

विचार करो—गौ के बछड़े व किलोनी दोनों रहते हैं बछड़ा तो सदैव दूध ही पीता है पर क्या किलौनी भी दूध ही पीती है, कदापि नहीं। दूध के पास रहती हुई भी वह रक्त ही चूसती है। इसी प्रकार, सोचो तो, सन्त महापुरुष के पास सज्जन और दुष्ट दोनों जाते हैं सज्जन तो उनसे भक्ति ज्ञान व वैराग्य आदि की बातें सीख आते हैं परन्तु दुष्ट उनके अवगुण ही नोट कर लाते हैं।

१७

विचार करो—माता कई घंटों से बच्चे को बुला रही है परन्तु बच्चा खिलौनों के साथ खेल में इतना मस्त है कि उसे माँ के पास जाना तो दूर रहा—उसकी याद भी भुला बैठा। माँ के द्वारा भेजा गया एक व्यक्ति उसके खिलौने छीन लेता है तो बच्चा रोता-चिल्लाता है बड़ा दुखी होता है परन्तु वहाँ अपना सहायक कोई नहीं पाता। जानते हो अब उसका सहायक कौन है ? वह किसके पास दौड़कर जायगा ? माँ के पास। वह माँ के पास रोता-चिल्लाता जाता है और शिकायत करता है कि किसी ने मेरे खिलौने छीन लिये। माँ उसे प्रेम से समझाती है "बेटा! तुम प्रातःकाल से खेल रहे थे, मैंने तुम्हें कितनी बार बुलाया परन्तु तुम तो इन खिलौनों के साथ खेलने में इतने मस्त हो गये कि मुझे भी भूल गये। इसीलिये तो मुझे उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

व्यक्ति को तुम्हारे खिलौने छीनने के लिये भेजना पड़ा।" ठीक इसी प्रकार, हम लोग जब इन धन-मकान, स्त्री पुत्र मान-प्रतिष्ठा आदि खिलौनों में मस्त होकर परम पिता परमेश्वर को भूल जाते हैं तो वे हमारी अनुकूलता छीन लेते हैं और हम बड़े दुःखी होते हैं। तब हम और कोई सहायक नहीं पाकर भगवान को याद करते हैं तथा उनकी शरण ग्रहण करते हैं। सोचो तो क्या खिलौने रूपी अनुकूलता (सुख) छीनने में भगवान की असीम कृपा नहीं ? अवश्य है परन्तु अज्ञानी समझ नहीं पाते।

१८

विचार करो—पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के कई मार्ग हैं। एक पथिक एक मार्ग से चढ़ता है— कुछ ऊपर चढ़ जाने पर देखता है कि दस व्यक्ति दूसरे मार्ग से चढ़ रहे हैं। वे दसों व्यक्ति कहते हैं कि पहला मार्ग गलत है तुम इस दूसरे मार्ग पर हमारे साथ आजाओ तभी ठीक-ठीक चोटी पर पहुँच पाओगे। बेचारा पहला पथिक असमञ्जस में पड़ जाता है और अधिक संख्या (Majority) देख कर पहला मार्ग छोड़कर दूसरे मार्ग द्वारा चढ़ना प्रारम्भ करता है। दूसरे मार्ग पर भी कुछ ऊपर चढ़ने पर देखता है कि तीसरे मार्ग से सैंकड़ों पथिक दूसरे मार्ग के पथिकों को पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि "तुम लोग गलत मार्ग पर हो। यह तीसरा मार्ग बिल्कुल ठीक है। तुम सब यदि चोटी पर पहुँचना चाहते हो तो इसी मार्ग पर चले आओ।" वह व्यक्ति अब फिर असमञ्जस में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पड़कर पथिकों की अधिकाधिक संख्या देखकर तीसरे मार्ग पर चला जाता है।

बेचारा पथिक कभी पहले मार्ग पर, कभी दूसरे मार्ग पर तथा कभी तीसरे पर चढ़ता उतरता अर्थात् भटकता है और कभी चोटी पर नहीं पहुँच पाता। एक अन्य महापुरुष जो चोटी पर चढ़ चुका है, इन पथिकों की ओर देख कर दयावश चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा है कि तुम किसी भी एक मार्ग पर चढ़ो, उसे छोड़ो नहीं, चोटी पर अवश्य पहुँच जाओगे। जानते हो वह भटका हुआ पथिक कैसे चोटी पर पहुँच सकेगा ? वह उस चोटी पर पहुँचे हुये महापुरुष की आज्ञानुसार (जो बीच मार्ग में हैं उनकी बकवाद न सुनता हुआ) किसी भी एक मार्ग पर चढ़ता हो जाय तो वह चोटी पर अवश्य पहुँच जायगा। इसी प्रकार आनन्द कन्द भगवान की प्राप्ति कराने वाले विभिन्न महापुरुष परमार्थ पथिकों की सरलता हेतु हित-भवाना पूर्वक अनेक मार्ग (साधन) बताते हैं। जो साधक किसी एक महापुरुष के बताये हुये साधन (मार्ग) पर चले तो निश्चय ही परमात्मा की प्राप्ति कर लेगा। जो दसरे महापुरुष द्वारा बताये गये साधन का खण्डन करके अपने साधन को श्रेष्ठ बताते हैं वे स्वयं भूले हुए हैं पहुँचे हुये नहीं। साधकों को उनके बहकावे में नहीं आना चाहिये और अपने ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के बताये हुये मार्ग पर ही चलना चाहिये।

९९

विचार करो—सुन्दर वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित टी० बी० के रोगी के बीमार फेफड़े साधारण केमरे द्वारा खींचे गये फोटो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

में भले ही न दिखाई दें; परन्तु क्या वे डाक्टर में केमरे (Xray मशीन) द्वारा खींचे गये फोटो में छिपे रह सकते हैं? कदापि नहीं। डाक्टर के केमरे के सामने चाहे तुम सुन्दर रेशमी वस्त्र पहने जाओ—चाहे साधारण खद्दर के, उसके लिये दोनों बराबर हैं—उसे तो फेफड़े स्वस्थ चाहिये। इसी प्रकार, याद रक्खो, इस तेल-साबुन पाउडर लिपस्टिक तथा फेशनेबुल डिजाइनदार वेष-भूषा से शरीर को सजाकर, या इधर-उधर देख-दाखकर रट-रटाकर कितने ही सुन्दर गद्य व पद्य लिखकर अथवा सुना कर भले ही अपने मन को धोखा दे दो अथवा दुनिया से मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर लो परन्तु, निश्चय रक्खो, सुख-शान्ति तो तभी प्राप्त होगी जब आप का चरित्र उच्च होगा।

१००

विचार करो—यों तो लोहा सेरों के भाव से बिकता है पर जब वही मशीन का पुर्जा बन जाता है तो एक-डेढ़ छटाक के पुर्जे की कीमत १००) हो जाती है। जानते हो क्यों? इसलिये कि उसे ऐसा पुर्जा बनने के लिये भट्टी की तपन, घन की चोटें तथा रेती की रगड़ आदि अनेक कष्ट सहन करने पड़े। यदि इस निर्माण काल में वह कष्ट सहन न करके बिखर जाता तो इसकी कीमत १००) क्या एक पैसा भी नहीं होती और मार्ग में पड़ा इधर से उधर ठोकरें खाता रहता। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, मानव शरीर के रहते-रहते यदि सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि दैवी गुणों के धारण तथा झूठ, चोरी, ईर्ष्या, दम्भ,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छल-कपट राग द्वेष, आदि दुर्गुणों के त्याग द्वारा अपना चरित्र निर्माण कर लिया तब इस संसार में तो श्रेय, धन यश बल आदि तो प्राप्त होगा ही साथ ही भगवत्प्राप्ति भी हो जायगी, अन्यथा निश्चय जानो, इधर के उधर ठोकरें खाते फिरोगे !

१०१

विचार करो—स्वाति नक्षत्र के वर्षा की बूंदें सीप के संग से मोती, केले के संग से कपूर, सर्प के संग से विष हो जाती हैं। इसी प्रकार खूब समझ लो कि यह मनुष्य संत के संग से संत, विद्वान के संग से विद्वान, लोभी के संग से लोभी, चोर के संग से चोर बन जाता है। अर्थात् बनना और बिगड़ना इसके हाथ में है। यदि बुरे सग का त्याग करके संत विद्वानों का संग करता रहे तो निश्चय ही इसका चरित्र निर्माण हो जायगा।

१०२

विचार करो—माली यदि किसी झुके हुये बड़े पेड़ को सीधा करना चाहे तो क्या वह उसे सीधा कर सकता है ? कदापि नहीं ! यदि वह किसी पेड़ को सीधा चाहता है तो उसे चाहिये कि जब तक वह पौधे रूप में है तभी तक उसे इधर-उधर झुकने न दे; वह यदि झुक जाय तो सहारा देकर सीधा कर दे, बस सीधा ही रहेगा। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, यदि तुम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चाहते हो कि मेरी सन्तान सदाचारी हो तो बचपनसे ही उनको सम्हालो—उन्हें बुरे मनुष्यों, बुरी पुस्तकों, बुरे दृश्यों (सिनेमा आदि) तथा बुरे खेलों से बचाओ तथा सत्पुरुषों के सत्संग में रक्खो। देखो! बच्चों में अनुकरण करने की शक्ति प्रबल होती है अतएव उन पर सबसे अधिक असर स्वयं माता-पिता के चरित्र का पड़ता है। इसलिये सबसे पहले तुम अपने निजी चरित्र को ठीक करो। समझे!

१०३

विचार करो—प्रारम्भ में बच्चे: को प्राइमरी पुस्तक में "कबूतर वाला 'क' खरगोश वाला 'ख' आदि की सहायता से अक्षर ज्ञान का अभ्यास करवाया जाता है। परन्तु जानते हो कबूतर व खरगोश का तात्पर्य केवल इतना ही होता है कि बच्चा उनकी सहायता से 'क' 'ख' को ठीक-ठीक पहिचान ले और फिर कभी किसी भी पुस्तक में उसी आकृति का अक्षर देखे तो फौरन कह दे कि यह 'क' है। यदि कोई बहुत काल तक सीखने के बाद भी 'कलम' 'कागज' 'कस्तूरी' 'काका' में 'क' को नहीं पहिचान सके तो क्या वह सीखा हुआ कहा जायगा? कदापि नहीं। इसी प्रकार याद रक्खो, किसी प्रतिमा में घट-घट वासी सर्व व्यापी परमात्मा के स्वरूप का बहुत काल तक अभ्यास करने के पश्चात् भी यदि कोई 'भक्त या ज्ञानी' का टाइटल धारी सभी प्राणियों के स्वरूप में परमात्मा को विद्यमान नहीं देखता और यदि वह किसी प्राणी को दुख पहुँचाता है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अथवा उससे इर्ष्या-द्वेष रखता है तो क्या वह नादान नहीं? अवश्य है।

१०४

विचार करो—यदि कोई व्यक्ति किसी बबूल के वृक्ष की जड़ में पहुँचने वाले पानी को तो रोके नहीं और उसके पत्ते डालियों व तना काटकर निश्चिन्त होकर बैठ जाय कि "अब तो बबूल नष्ट होगया अब काँटे चुभने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा" तो क्या उसका यह सोच बैठना दुरुस्त है? कदापि नहीं। यदि वह उस बबूल को नष्ट करके काँटों के कष्ट से बचना चाहे तो जानते हो उसे क्या करना चाहिये? पत्ते, डालियाँ और तना के काटने में व्यर्थ पुरुषार्थ करने के चक्कर में न पड़कर उसे उसकी जड़ काट देना चाहिये। बस! सारा बबूल अपने आप नष्ट हो जायगा। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, कोई घरबार त्यागकर किसी पहाड़ की कन्दरा में तो निवास करने लगे अथवा पृथक मकान या कमरे में आँख मूँदकर तो बैठ जाय, परन्तु मन में अनेक कामनाओं का चिन्तन करता रहे (चाहे वे कंचन कामनी या विषय भोगों की हों, चाहे मान बड़ाई, इर्ष्या व "मैं त्यागी हूँ" 'मैं भजनीक हूँ') तो यह वास्तविक एकान्त व भजन कदापि नहीं है। इससे दुख की निवृति नहीं होगी। जानते हो दुःखकी आत्यन्तिक निवृत्ति अथवा परमानन्द की प्राप्ति कब होगी? जब कि "मैं कर्त्ता हूँ" इस परिच्छिन्न भाव का त्याग होगा और अनेक (वृत्तियों) का अन्त एक (परमात्मा) में होगा चाहे घर में रहो चाहे बाहर चाहे एकान्त में रहो चाहे बहुतों में।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१०५

विचार करो—कुछ यूनिट्स बिजली का प्रकाश देने के बदले में बिजली विभाग (Electric Department) को अथवा कुछ मीटर्स (Meters) पानी बदले जल-वितरण विभाग (Water works Department) को हर महीने कुछ रुपयों का बिल चुकाना पड़ता है। इसके सिवाय यदि कभी किसी गड़बड़ी के कारण बिजली या पानी की सपलाई (Supply) बन्द होजाती है तो बड़े परेशान होते हैं—मिस्त्री व फिटर भेजने की बारम्बार मिन्नत करते हैं और ठीक हो जाने पर उसको हार्दिक धन्यवाद देकर उसके प्रति बड़ी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार, सोचो तो; जिस सर्व शक्तिमान (Almighty) परमात्मा की शक्ति (Nature) के नियम से सूर्य हमको बिना मूल्य प्रकाश देता है, इन्द्र हमको जल प्रदान करता है पवनदेव वायु सपलाई करके जीवन देता है-क्या उस सर्वशक्तिमान परमात्मा की प्रार्थना भी न करके आभारी (Thankful) न होना कृतघ्नता नहीं? अवश्यमेव। हाँ 'परमात्मा शब्द से किसी को द्वेष हो तो उस सर्वशक्तिमान चेतन सत्ता के लिये गाड, खुदा, नेचर आदि कुछ भी शब्द प्रयोग करले- इसमें कोई अड़चन नहीं।

१०६

विचार करो—रोगी पथ्य के दिनों में यदि डाक्टर या वैद्य द्वारा बताई वस्तुओं से परहेज न करे किन्तु कुपथ करले तो क्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उसे और कई दिनों के लिये चारपाई नहीं पकड़नी पड़ेगी ? अवश्यमेव ! साधारण रोगी की चिकित्सा तो सहज है परन्तु कुपथ के रोगी को रोगमुक्त करना अच्छे-अच्छे डाक्टरों के लिये भी बड़ा कठिन है। इसी प्रकार, याद रक्खो, यह मनुष्य योनि की प्राप्ति इस जीव के लिये पथ्य-काल है। अतः इसके होते-होते यदि यह जीव नीति मर्यादा अर्थात् धर्म के अनुसार अपना कर्त्तव्य पालन करता रहेगा तो यह निस्सन्देह ही भव-रोग से मुक्त हो जायगा। और कहीं यह दम्भ छल-कपट, झूठ-चोरी, मोह-लोभ, क्रोध-ईर्ष्या, मद-अभिमान आदि निषिद्ध आचरण करने लग गया तो निश्चय समझो, ईसे कई जन्मों तक नारकीय योनियों में पुनः पुनः कष्ट उठाना पड़ेगा। समझदारी इसी में है कि इस देव-दुर्लभ मानव देह का सदुपयोग करके परमानन्द पद की प्राप्ति करलें अन्यथा—

सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनि-धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाइ॥

१०७

विचार करो—वैश्या बढ़िया-बढ़िया ज्ञान-वैराग्य के पद गाकर सुनने वालों को रिझा लेती है परन्तु क्या उससे उसकी वा सुनने वालों को मुक्ति की प्राप्ति हो जायगी ? कदापि नहीं। उसको तो प्राप्ति होगी चाँदी के कुछ टुकड़ों की। जानते हो क्यों ? इसलिये कि "फल भावना के अनुसार मिलता है।" इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, यदि हमने कुछ गद्य-वा पद्य रट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रटाकर दिमाग की लाइब्रेरी में भर लिया और दूसरे व्यक्तियों को खूब लच्छेदार भाषा में सुना भी दिया—(भावना यह रही कि 'मेरा वक्तव्य बड़ा अच्छा रहे')—तो विश्वास रक्खो संसार से क्षणिक मानप्रतिष्ठा या धन-सम्पत्ति भलेही मिल जाय, भक्ति-मुक्ति की प्राप्ति कदापि नहीं होगी। भक्ति-मुक्ति तो तब ही मिलेगी जब वह उपदेश दूसरों के बजाय अपनी मन-इन्द्रियों कोही दिया जाय और वे मान लें।

१०८

विचार करो—गर्मी के मौसम में लू तो चलेगी ही चाहे हम रोयें वा हँसे, परन्तु क्या उस लू के कष्ट से दुखी होकर रोना बुद्धिमानी है? कदापि नहीं ! जानते हो लू के कष्ट से बचने के लिये क्या करना बुद्धिमानी है। कमरे के दरवाजों व खिड़कियों पर चट से खस की टट्टी लगाकर पट्ट से बैठ जाओ कमरे के भीतर। बस बाहर कितनी ही लू चले तुम्हें उसका कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा—तुम्हारे लिये तो वही शिमला-मंसूरी बन जायगा। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, इस देह के रहते कष्ट रोग, प्रतिकूलता, विघ्न तो आयेंगे ही—इनके संयोग होने पर रोना या दुखी होना अज्ञानता है। यदि दुखी नहीं होना चाहते तो जानते हो क्या करना चाहिये? बस भगवान् के चरणों की शरण व ज्ञान-विवेक रूपी खस की टट्टी का आश्रय ग्रहण करलो। फिर निश्चय रक्खो, ऐटम बम, उद्‌जन बम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

या सृष्टि का प्रलय ही क्यों न होने लगे, तुम्हें दुःख नहीं व्यापेगा।

१०९

विचार करो—एक अच्छा तैराक कोसों तैर लेता है परन्तु यदि उसकी छाती पर एक ५ मन का पत्थर बाँध दिया जाय तो क्या वह तैर सकेगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, याद रक्खो, यदि हम खूब जप-तप पाठ-पूजा आदि करते हैं अथवा यदि हमने विद्याध्ययन करके बी०ए०, एम०ए० या शास्त्री, आचार्य की डिग्री भलेही प्राप्त करली है परन्तु यदि हमारे स्वभाव में सरलता व नम्रता न आकर दम्भ व अभिमान का किंचित भी अंकुर विद्यमान है तो हमारा कल्याण कदापि न होगा।

११०

विचार करो—साबुन से कपड़ों का मैल अवश्य ही छूट जाता है परन्तु यदि साबुन रगड़ते समय चौकी से कपड़ा हट जाय और कोई साबुन की पूरी बट्टी ही रगड़ दे तो क्या कपड़ा साफ होगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, सोचो तो, आप शरीर से तो खूब भजन सत्संग करते हैं परन्तु आपका मन कहीं और ही कांचन-कामनी अथवा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिये युक्तियाँ सोच रहा है तो निश्चय समझो, यह वास्तविक भजन-सत्संग नहीं हुआ—इससे भगवान की प्राप्ति नहीं होगी। हाँ, यह अवश्य कह सकते हैं कि बुरे कर्मों से अच्छा है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१११

विचार करो—किसी बढ़िया से बढ़िया डाक्टर से अपने रोग-निवारण का नुस्खा जान लेने से अथवा नुस्खे वाली दवाई खरीद कर आलमारी या जेब में सुरक्षित रख लेने मात्र से क्या रोग हट जायगा ? कदापि नहीं । रोग से मुक्ति तो तभी मिलेगी जब हम उस औषधि का सेवन करेंगे । इसी प्रकार निश्चय रक्खो संत महात्माओं के उपदेश से अथवा सत्-शास्त्रों के स्वाध्याय से आत्मज्ञान अथवा भक्ति-मुक्ति की बात जानली या रटकर दिमाग की लाइब्रेरी में जमा कर ली और अवसर पाने पर दूसरों को रोचक भाषा में सुनाकर रिझा भी लिया तो इससे भव-रोग से छुटकारा कदापि नहीं मिलेगा, न भक्ति-मुक्ति ही प्राप्त होगी। भक्ति-मुक्ति तो तभी मिलेगी जब आप उन उपदेशों पर अमल करेंगे—अपने मन और इन्द्रियों द्वारा तदनुसार आचरण होने लगेगा । जानना अच्छा है, परन्तु जानने से मानना बहुत ही अच्छा है ।

११२

विचार करो—"कुछ ही स्टेशनों तक यात्रा करना है" यह जानते हुये भी यदि कोई रेलगाड़ी का मुसाफिर डिब्बे के अन्य यात्रियों से लड़ाई-झगड़ा करके हृदय को ईर्ष्या-द्वेष आदि अव-गुणों से कलुषित करले तो क्या वह अज्ञानी नहीं ? अवश्य है । इसी प्रकार सोचो तो, इस मानव-देह के थोड़े से आयु काल में तथा उसमें भी समय समय पर बहुत अल्प-काल के लिये

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रारब्धानुसार किसी व्यक्ति या समाज के संग हो जाने पर यदि हम दूसरों से प्रेम की जगह कलह करके इर्ष्या-द्वेष मद-मत्सर व अभिमान आदि से अपना हृदय कलुषित कर लेते हैं तो क्या हम बुद्धिहीन नहीं ? अवश्य हैं।

११३

विचार करो—मदारी के जादू के लड्डू-पेड़ों व रुपयों के बदले में क्या कोई समझदार व्यक्ति अपनी जेब से सच्चे रुपये दे देगा ? कदापि नहीं। क्योंकि वह जानता है कि पेड़े या रुपये सच्चे नहीं, नकली हैं—मिथ्या हैं। यदि सच्चे होते तो यह मदारी दो-दो पैसे के लिये दर्शकों के समाने पल्ला क्यों पसारता। इसी प्रकार, याद रक्खो, इन संसारी विषय भोगों के बदले में अपनी आयु का एक श्वास भी खो देना मूर्खता नहीं तो और क्या ? अतः हमको इस देव-दुर्लभ मानव-जीवन का प्रत्येक श्वास परमात्मा के भजन अथवा सेवा-परोपकार में लगाना चाहिये।

११४

विचार करो—मलयागिरि के सुवासित चन्दन-वृक्ष के आस-पास के बहुत से वृक्ष भी चन्दन ही बन जाते हैं किन्तु बाँस और करील के वृक्ष ज्यों के त्यों बने रहते हैं, चाहे उनकी जड़ें चन्दन के वृक्ष से ही क्यों न मिली रहें—जानते हो क्यों ? क्योंकि इन पेड़ों में गाँठें होती हैं। इसी प्रकार निश्चय करो कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सन्त-महापुरुषों का सत्संग करने वाले भी सन्त ही बन जाते हैं किन्तु जिनके कलुषित हृदय में ईर्ष्या, द्वेष, मद, मत्सर और परदोष-दर्शन आदि की अभेद्य गांठें पड़ी हैं वे कदापि सन्त नहीं बन सकते चाहे वे अहर्निश सन्त-महात्माओं के निकट सम्पर्क में ही क्यों न बने रहें।

११५

विचार करो—पुण्यसलिला पतितपावनी भगवती गंगा के दर्शन मात्र से मानव के पाप-ताप शान्त हो जाते हैं और उसमें स्नान करने वालों की तो शुभ गति होती ही है किन्तु सहस्रों वर्षों से गंगा जी के जल में पड़े हुए पत्थर तो ज्यों के त्यों ही बने रहते हैं—इसी प्रकार निश्चय करो कि भावशून्य और अभिमानी जन भी सत्संग सुरसरी के बीच अहर्निश रहकर भी ज्यों के त्यों ही बने रहते हैं।

११६

विचार करो—अपने पास-पास के अन्धकार का नाश करने वाला दीपक अपने नीचे अँधेरा छिपाये रहता है उसके नीचे का अन्धकार दूर करने के लिये यदि दो चार दीपक और जला दिए जायँ तो एक दूसरे का प्रकाश सबके अन्धकार को दूर कर देगा। इसी प्रकार यदि अकेला साधक एकान्त में साधन करेगा तो वह स्वयं अपना अन्धकार दूर नहीं कर सकता, सम्भव है प्रमाद और आलस्य के वशीभूत होकर वह साधन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

से भ्रष्ट होजाय, इसलिये प्रत्येक साधक को साधकों के समूह में ही रहना चाहिये। अकेला तो सिद्ध ही रह सकता है।

११७

विचार करो—किसी घोड़े के मुँह में यदि तीन लगामें लगाकर उसे तीन व्यक्तियों के सुपुर्द कर दिया जाय तो वह घोड़ा किधर जायगा ? उसकी क्या दशा होगी ? इसी प्रकार यदि कोई साधक अपने साधन का निश्चय कई पथ-प्रदर्शकों से करवाना चाहे तो खींचातानी में पड़कर कभी सफल नहीं हो सकेगा। जिस प्रकार घोड़े के लिये एक ही लगाम की आवश्यकता है इसी प्रकार साधक को भी अपना एक ही पथ-प्रदर्शक चुन लेना चाहिये।

११८

विचार करो—मार्ग में पड़ा पत्थर पथिकों की ठोकरें खाता है किन्तु उसी का सजातीय दूसरा पत्थर किसी चतुर शिल्पी द्वारा छेनी, हथौड़े की चोट खाकर जब देवता की मूर्ति बन जाता है तो संसार उसकी पूजा करने लगता है। इस प्रकार दुःख और कष्टों से घबड़ाकर जो शिल्पी रूपी सद्गुरु की शरण से भागता है वह तो मार्ग में पड़े पत्थर के समान है और जो उनकी मार में छिपा प्यार देख लेता है वही एक दिन साधक से सिद्ध बन जाता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

११९

विचार करो—पानी का स्वाभाविक प्रवाह नीचे की ओर होता है। यदि हमें ऊपर की ओर पानी चढ़ाना है तो अत्यन्त प्रवल उपाय—इञ्जिन व मोटर का आयोजन करना पड़ता है। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, मन और इन्द्रियों की स्वाभाविक गति विषय भोगों की ओर है, भगवान् की ओर नहीं। यदि भगवद्-प्राप्ति करना चाहते हैं तो इन्हें बल पूर्वक दृढ़ता से, सत्संग-भजन सेवा-परोपकार आदि में लगाना पड़ेगा।

१२०

विचार करो—कुम्हार मिट्टी के घड़े को बनाते समय उसे लकड़ी की थापी से पीटता है और साथ ही एक हाथ घड़े के भीतर भी लगाये रहता है। पीटने वाला ऊपर का थापी वाला हाथ तो सबको दिखाई पड़ता है लेकिन भीतर वाला सहारे का हाथ दिखाई नहीं पड़ता। इसी प्रकार निश्चय कीजिये हम पर जो दुःख और संकट आते हैं वे यद्यपि स्पष्ट दीखते हैं, उनके दर्द और तकलीफों की गहरी अनुभूति भी होती है किन्तु इनके पीछे छिपी हुई मंगलमय प्रभु की असीम करुणामयी कृपा को हमारी भौतिक आँखें देखने में असमर्थ हैं। वास्तव में तो उनकी मार में भी प्यार समाया रहता है।

१२१

विचार करो—डाक्टर जब किसी के घाव या फोड़े का आपरेशन करता है तो रोगी उसे अपना शत्रु समझकर गालियाँ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बकता है लेकिन अच्छा होने पर उसी डाक्टर को धन्यवाद देकर कहता है कि आपकी कृपा से जहरबाद होने से बच गया, आपने मेरे प्राणों की रक्षा की इत्यादि। इसी प्रकार जब हम पर संकट और मुसीबतों की बाढ़ आजाय तो निश्चय करना चाहिये कि यह लीला हमारे अन्तःकरण की शुद्धि के निमित प्रभु की प्रेरणा से हो रही है। दुःखों की अग्नि में तपकर हमारे मन-बुद्धि जब शुद्ध सतोगुणी बन जायँगे तब हम स्पष्ट रूप से देखेंगे कि उस समय के अमुक दुःख के परिणाम स्वरूप आज हमें इस आनन्द की अनुभूति हो रही है।

१२२

विचार कीजिये—छोटे-छोटे अबोध बालक जब बर्र, ततैया या दीपक की लौ को पकड़ने के लिये लपकते हैं तो माता उनका हाथ खींचकर दूर ले जाती है कि मेरे लाल को इनके स्पर्श से तकलीफ न होने पावे। इसी प्रकार निश्चय कीजिये कि भगवान भी अपने प्रिय भक्तों को माया की मादकता से दूर रखने के लिये सदैव एक न एक अभाव का संयोग बनाये रखते हैं।

१२३

विचार कीजिये—खिलाड़ी बालक को, माता-पिता स्कूल भेजने के लिये जब जोर-जबरदस्ती करते हैं तो वह मन ही मन उन्हें अपना शत्रु समझता है क्योंकि वे उसे खेल से हटाकर गुरू के पास भेज देते हैं। बालक की मन बुद्धि को तीव्र बनाने के लिये गुरू जब ताड़ना करते हैं तब उन्हें तो वह बालक यम-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

राज की भाँति ही समझता है। किन्तु जब वही बालक बड़ा होकर पढ़-लिखकर किसी योग्य बन जाता है तब कहता है कि मेरे माता-पिता यदि बाल्यकाल में पकड़-पकड़ा कर स्कूल न भेजते और गुरू जी ताड़ना न करते तो आज मैं इस योग्य नहीं बन पाता। इसी प्रकार निश्चय करना चाहिये कि—हमारे असली माता पिता और गुरू रूपी भगवान् की करुणामयी प्रेरणा से ही हमारे सामने दुःख-अपमान और अनेक प्रकार की आपत्तियाँ इसीलिये आती हैं कि इनको सहन करके हम ऐसी बुद्धि प्राप्त करलें जिनके द्वारा नकली और असली के पारखी बनकर अपने वास्तविक लक्ष्य की परख करके उसी ओर चलते जायँ।

१२४

विचार कीजिये—सोना और पीतल अथवा काँच और हीरा दूर से देखने में एक जैसे ही जान पड़ते हैं लेकिन उनकी असली पहचान तो आग में तपाने पर या घन से पीटने पर ही होती है। आग में तपने पर सोना दमकने लगता है और पीतल काली पड़ जाती है और घन से पीटने पर काँच चकनाचूर हो जाता है किन्तु हीरा ज्यों का त्यों रहता है। इसी प्रकार निश्चय करना चाहिए कि स्वर्ण अथवा हीरे के समान अपना मूल्य बढ़ाने के लिये हमें विघ्न-बाधाओं और प्रतिकूलताओं की अग्नि में तप कर कुन्दन सा दमकना है और आपत्तियों के घन चलने पर हीरे सा कठोर बना रहना है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१२५

विचार करो—वर्षा काल में सूखे हुये तालाब और पोखरे जल से लबालब भर जाते हैं। सूखी हुई नदियों और नालों में जल की वेगवती धारा और गहराई तो आश्चर्य की बात बन जाती है, किन्तु इसके विपरीत ऊंचे-ऊंचे टीलों और मरुभूमि में अति वृष्टि का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता वे तो ज्यों के त्यों ही बने रहते हैं। ठीक इसी प्रकार निश्चय करना चाहिये कि जिनके अन्तःकरण मिथ्याभिमान में ऊंचे टीलों के समान बन गये हैं अथवा श्रद्धा और विश्वास के नितान्त अभाव से जिन का हृदय मरुभूमि सरीखा बन चुका है उन्हें सन्त-महापुरुषों की उपदेशामृत-वर्षा में अहर्निश रहने पर भी किंचित लाभ नहीं होता वे ज्यों के त्यों ही बने रहते हैं।

१२६

विचार करो—सर्व साधारण की सुविधा के लिये गवर्नमेंट जब किसी लम्बी नहर के निर्माण की योजना निश्चित कर देती है तो उस निर्दिष्ट मार्ग के कंकड़-पत्थर झाड़ झंखाड़ और ऊँचे-नीचे टीलों को साफ करवा कर एक निश्चित लम्बाई और गहराई तक खुदाई करता है तब उसमें किसी नदी के द्वारा छोड़े हुए जल के प्रयोग से जनता को स्थाई सुख होता है इसी प्रकार निश्चय करना चाहिये कि यदि हम स्वयं सुखी बनकर दूसरों को भी सुखी बनाना चाहते हैं तो पहले हमें अपने हृदय की कलुष कालिमा और अभिमान को हटाने का प्रबल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुरुषार्थ—त्याग और तपोमय जीवन बनाकर करना होगा और फिर अन्तःकरण की शुद्धि हो जाने पर जब संत-कृपा से, अन्तःप्रवाहिनी आनन्दमयी भगवद्भक्ति रूपिणी सरिता उद्भूत हो जायगी तो अपने साथ-साथ अनेकों के आनन्द का कारण बन जायगी।

१२७

विचार करो—वर्षाऋतु में सर्वत्र हरियाली छा जाती है। सूखी हुई खेतियाँ लहराने लगती हैं। सर्वत्र एक अनोखा और लुभावना वातावरण बन जाता है। तीखी गर्मी और लू से झुलसे हुये सन्तप्त प्राणी आनन्द मनाते हैं किन्तु ऐसी सुखमयी स्थिति में भी अकौआ और जवासा बिल्कुल झुलस कर सूख जाते हैं। जानते हो, ऐसा क्यों होता है? इसलिये कि उन्हें यह स्थिति सह्य नहीं होती उन्हें तो गर्म लू के झोंके और भीषण गर्मी ही अनुकूल पड़ती हैं। ठीक इसी प्रकार निश्चय करना चाहिये कि सन्त महापुरुषों की अहैतुकी कृपा से जब कभी सत्संग-सुधा की त्रिविध तापहारिणी वर्षा होती है तो उस मंगलमय स्थिति में भी परछिद्रान्वेषी अनेक काल्पनिक आलोचनाओं से जनता में भ्रामक प्रचार करके स्वयं ही कल्पित द्वेषाग्नि में दग्ध होते हैं।

१२८

विचार करो—सर्वत्र भीषण वर्षा होने पर जब सरिताओं में बाढ़ आ जाती है तब उनके तटवर्ती जन-समुदाय को अनेक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कष्टों का सामना करना पड़ता है। किन्तु जहाँ-जहाँ पहिले से ही सुदृढ़ बाँध बने होते हैं, वहाँ के निवासियों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती। अतएव जो बुद्धिमान हैं वे वर्षारम्भ से पूर्व ही उन संदिग्ध स्थानों को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर पहुँच, अपनी तथा अपने परिवार की रक्षा कर लेते हैं। इसी प्रकार निश्चय करना चाहिये कि सांसारिक दुःखों की बाढ़ से बचने के लिये सत्संग रूपी बाँध के किनारे, साधक-समुदाय में रहने वालों को स्वप्न में भी भौतिक दुःखों की अनुभूति नहीं होने पाती।

१२९

विचार करो—एक चींटी को बहुत थोड़ी सी शक्कर मिलने पर वह सब अकेली नहीं खातीं; वह अनेक चींटियों को बुलाकर प्रेम से मिल बाँटकर खाती हैं। परन्तु यदि एक कुत्ते का एक विशालकाय हाथी का मुर्दा भी मिल जाय तो क्या वह अन्य कुत्तों को बुलाकर, मिल बाँटकर मांस खायगा ? कदापि नहीं। अन्य कुत्तों को बुलाना तो दूर रहा, यदि कोई अन्य कुत्ता पास के मार्ग से भी जा रहा होगा तो उस अनेक कुत्तों के लिये कई दिनों तक पर्याप्त मांस को खाना छोड़कर पहले उस जाने वाले कुत्ते पर गुर्रायगा—लड़ेगा। इसी प्रकार, याद रक्खो, जो पुरुष कर्मानुसार प्राप्त अल्प भोग पदार्थों को भी अन्य प्राणियों में यथा योग्य मिल बाँटकर खाते हैं वे ही सज्जन मनुष्य कहलाने योग्य हैं; परन्तु जो नीति वा अनीति जैसे-तैसे बहुत से पदार्थ संग्रह करके भी—अन्य प्राणियों में यथायोग्य मिल-बाँटकर भोगना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दूर रहा—उनके साथ इर्ष्या-द्वेष लड़ाई-झगड़ा, मुकद्मा आदि करते रहते हैं वे कुत्तों से भी गये बीते मनुष्य रूप में असुर नहीं तो और क्या ?

१३०

विचार करो—समतल भूमि पर खड़े होकर मैदान की ओर देखने से दूर-दूर तक कहीं छोटी-छोटी घास, कहीं पौधे और कहीं लम्बे-लम्बे वृक्ष दिखलाई देते हैं परन्तु पास ही के ऊँचे पहाड़ या मीनार पर खड़े होने पर क्या वह घास पौधे और वृक्ष ऊँचे नीचे दिखाई देंगे ? कदापि नहीं। पहाड़ व मीनार पर से सब हरे-हरे समतल ही दिखाई देंगे। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, जब तक देह व इन्द्रियों की दृष्टि से देखोगे तब तक संसार में ब्राह्मण-शूद्र, राजा-रंक, हाथी-चींटी आदि ऊंच-नीच दिखाई देंगे परन्तु जब ज्ञान दृष्टि से देखोगे तो संसार में कोई ऊँच-नीच नहीं दिखाई देगा केवल परमात्मा ही परमात्मा दिखाई देगा।

१३१

विचार करो—कोई स्त्री अपने पति के फोटू (जो कि विवाह के समय में लिया गया था) की तो पूजा ऊँचे सिंहासन पर रखकर पुष्प चढ़ाकर तथा आरती उतार कर करे—परन्तु जब साक्षात पति दूसरी वेष-भूषा पहनकर आवे तो यथायोग्य सम्मान भी न करे, निर्बल असहाय होने पर सेवा करनें के स्थान पर वाणी व क्रिया द्वारा दुखी बना दे तो क्या यह उसकी वास्तविक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पूजा हुई ? कदापि नहीं। वास्तविक पूजा तो तब ही होगी जब साक्षात् पति के आजाने पर (चाहे वे विवाह के वेष से अतिरिक्त अन्य किसी वेष में आवे) फोटो की पूजा आरती छोड़कर साक्षात् पति की सेवा-पूजा व सहायता करें तब ही उसका पति उससे प्रसन्न होगा। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, भगवान् की प्रतिमाओं की तो पूजा धूप-दीप नैवेद्य, आरती स्तुति करना परन्तु दीन दुखियों, असहायों के रूप (वेष) में उपस्थित होने पर उसी घटघट-वासी परमात्मा की सेवा-सहायता न करके वाणी अथवा कर्म द्वारा उन्हें दुखी करते रहना—यह वास्तविक पूजा नहीं हुई। इससे भगवान कभी प्रसन्न नहीं होंगे। भगवान् तभी प्रसन्न होंगे जब कि इन चलते-फिरते मन्दिरों में विराजमान भगवान की सेवा-पूजा मुख्य होगी। (भगवान की प्रतिमाओं की पूजा करना बुरा नहीं है उत्तम साधन है)।

१३२

विचार करो—यदि किसी निर्धन मनुष्य की पत्नी से कोई प्रेम करना चाहे तो क्या वह निर्धन व्यक्ति चुपचाप सहन कर लेगा ? कदापि नहीं। अपनी शक्ति रहते वह उस दुष्ट को पूरा दण्ड देगा। इसी प्रकार, सोचो तो, सर्वशक्तिमान प्रभु की पत्नी लक्ष्मी से जो अनुचित प्रेम करने का प्रयत्न करते हैं क्या उनको दैवी दण्ड नहीं मिलेगा ? अवश्य मिलेगा। उदाहरण के लिये, रावण प्रभु-पत्नी सीता को अपना बनाने के लिये उठा ले गया तो जानते हो क्या परिणाम हुआ ? लंका जला दी गई—रावण का परिवार सहित नाश हुआ यहाँ तक की—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

"रहा न कोउ कुल रोवनहारा"

अतः यदि लक्ष्मी का निवास अपने घर में चाहते हो तो मालूम है क्या करना चाहिये ? लक्ष्मी पति नारायण को अपने यहाँ बसा लो–बस पतिव्रता लक्ष्मी जी को मजबूर होकर आपके यहाँ निवास करना पड़ेगा।

१३३

विचार करो—बच्चे का कोई अंग सूज जाने पर माँ स्वयं डाक्टर के द्वारा उस अंग की चीर-फाड़ (Operation) कराती है और वह बच्चा मन ही मन माँ को कोसता है। परन्तु सोचो तो क्या यह उसकी मूर्खता नहीं ? क्या इस आपरेशन करवाने में माँ की अपार कृपा नहीं अवश्य है। यदि उस अंग का आपरेशन नहीं करवाया जायगा तो जानते हो क्या हाल होगा ? सूजे अंग में भरी हुई पीप के कारण बच्चे को एक सेकेण्ड भी चैन नहीं मिलेगा सो तो नहीं ही मिलेगा परन्तु कुछ समय के बाद उस अंग को सड़ जाने के कारण कटवा भी देना पड़ेगा। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, जब हमारे पर दुःख आवे तो उससे दुखी होना बुद्धिमानी नहीं—क्योंकि वह दुःख नहीं वास्तव में परम सुहृद परम-परमात्मा की कृपा है—हमारे हृदय में रोग हुआ है जिसका अपरेशन है। यदि आपरेशन नहीं हो तो हमें निश्चय ही उस आपरेशन से कई गुना अधिक दुःख नरक तथा पशु पक्षी कीट-पतंग, पेड़-पौधे आदि मनुष्येतर योनियों में भोगना पड़े और फिर अपने गये जीवन की ओर तो देखो—क्या दुःख के बाद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपकी उन्नति नहीं हुई ? क्या दुःख में स्वाभाविक ही भगवान् का स्मरण नहीं हुआ ? वास्तव में यह दुःख की दया ही है जो हमको दुःखहारी दया-सिन्धु परमपिता से मिला देती है, कहा भी है—

सुख के माथे सिल पड़ो जो नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुःख की जो पल-पल राम रटाय ॥

१३४

विचार करो—बादशाह और गुलाम दोनों पुरुष हैं परन्तु जानते हो बादशाह किसको कहते हैं और गुलाम किसको ? बेगम को जो जीत जाय सो बादशाह और जो बेगम से हार जाय सो गुलाम, इसी प्रकार याद रक्खो, जो मन इन्द्रियों को वश में करले वही मानव वास्तविक मानव है और जो मन-इन्द्रियों के वश में है वह मानव-देह होते हुये भी दानव (पशु) है। भर्तृहरि महाराज ने कहा भी है कि "आहार निद्रा भय मैथुन" की दृष्टि से तो मानव और दानव समान हैं परन्तु जिसका जीवन धर्ममय है, जो स्वभाव से मन-इन्द्रियों के वश में नहीं है वही मानव है—अन्यथा इस मानव देह का दुरुपयोग है।

१३५

विचार करो—सर्दी और गर्मी के मौसम तो समयानुसार आवेंगे ही चाहे हम सुखी हों अथवा दुखी। परन्तु क्या दुखी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होने से मौसम बदल जायगा ? कदापि नहीं। अतः भलाई इसी में है कि यदि हम कड़ाके की सर्दी से दुखी होना नहीं चाहते तो गर्म कपड़े पहिन लें, कम्बल ओढ़ लें। और यदि आग जला कर तापने बैठ जायेंगे तो हमारे साथ औरों की भी सर्दी उड़ जायगी। इसी प्रकार, याद रक्खो, संसार में देह रहते देश-काल व परिस्थिति के अनुसार अनुकूलताएँ व प्रतिकूलताएँ तो आवेंगी ही। प्रतिकूलता आने पर दुखी होकर रोने चिल्लाने से प्रतिकूलता मिट थोड़े ही जायगी ? अतः समझदारी इसी में है कि यदि हम दुखी नहीं होना चाहते तो भगवान् की शरण ग्रहण करलें अथवा सद्विवेक को काम में लें। 'स्वरूप' के ज्ञान की धारणा होजाने पर तो दुःख-सुख सब मिट कर सदा आनन्द ही आनन्द हो जायगा। और अपने यहाँ सत्संग स्थापित कर लेने पर अपने साथ साथ औरों का भी सद्विवेक जागृत हो जायगा जिससे सबको दुःख नहीं व्यापेगा।

१३६

विचार करो—एक धनवान पिता की आज्ञाकारी सुशील सन्तान उसकी सम्पत्ति की उत्तराधिकारी होती ही है। परन्तु यदि वह अपने पिता जी की आज्ञा का पालन न करके अपनी मनमानी करने लगे तो क्या पिता उसे अपनी सम्पत्ति के अधिकारों से वंचित नहीं कर देगा ? अवश्य ही। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, हमारा परमपिता परमात्मा भी यही चाहता है कि उसकी सन्तानों में श्रेष्ठ मानव उसकी आज्ञा का पालन करे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थात् दैवी सम्पत्ति के सद्गुणों को धारण करके मानव सच्चा मानव बने। यदि वह अपनी मनमानी अथात् आसुरी सम्पत्ति के अवगुणों में फँस कर भगवान् की आज्ञा का उलंघन करता है तो उसे सम्पत्ति के उत्तराधिकार से तो बंचित होना ही पड़ता है साथ ही सूकर-कूकर कीट-पतंगादि नीच योनियों में जन्म लेकर दुःख भोगना पड़ता।

१३७

विचार करो—बालक जब तक हँसता खेलता या अपने साथियों में भटकता रहता है तब तक तो उसकी मैया भी उससे निश्चिन्त होकर घर के कामों में लगी रहती है; किन्तु खेल खिलौनों को फेंक-फाँक कर जब वह अपनी माता की गोद के लिये रोने ही लगे तो क्या वह ममतामयी माता अपने हृदय धन से दूर रह सकेगी। कदापि नहीं। तब तो वह तुरन्त उसे अपनी गोद में ले लेगी। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, इस दुःखालय ससार से तप्त होकर जब हम अन्तरात्मा से व्याकुलता पूर्वक दुःखहारी हरि को पुकारेंगे तो वे करुणासिन्धु हमें अपनी चिरशान्तिदायिनी गोद अवश्य प्रदान करेंगे।

१३८

विचार करो—नन्हा बालक यदि जलती दीप शिखा या अग्नि या बर्र-ततैया को पकड़ना चाहे तो उसकी जन्मदात्री माता बरबस रोकती है और यदि वह नहीं मानता तो भयभीत करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के लिये ताड़ना भी करती है। माता की ताड़ना में बालक भले ही अपने मन में बुरा माने परन्तु क्या इसमें हितकामना नहीं छिपी हुई है? अवश्यमेव। इसी प्रकार विश्वास रक्खो, जब कोई साधक अपने पथ से भ्रष्ट होकर विषय भोगों के कंटकाकीर्ण मार्ग में बहक जाता है तो दयामय प्रभु अपने प्रिय भक्त के हित के लिये उसके सुख साधन और भोग पदार्थ छीन लेते हैं। परन्तु सोचो तो, क्या भगवान की इस निठुराई में उनकी असीम करुणा नहीं छिपी है? अवश्यमेव। जिन-जिन पदार्थों में हमारी ममता और आसक्ति बढ़ती जारही है उनसे वियोग कराके वे हमारी ममता और आसक्ति छुड़वादें तो हमें दुखी होना चाहिये अथवा प्रसन्न? हमें तो आनन्दमग्न होकर भगवान् की अहैतुकी कृपा का सम्पादन करना चाहिये।

१३९

विचार करो—पौधों की टहनियाँ तभी तक ऊंची-ऊंची रहती हैं जब तक कि उन पर फल-फूल नहीं होते। जब वे फल फूलों से लद जाती हैं तो क्या वे ऊंची की ऊँची बनी रहती हैं? कदापि नहीं, वे झुक जाती हैं। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, विद्या पढ़ने का यही फल है कि तुम्हारे जीवन में नम्रता आवे, व्यवहार में सदाचार शिष्टाचार हो, और शरीर, वाणी, मन एवं धन सभी राष्ट्र, धर्म, गुरुजनों एवं घट-घट वासी भगवान् की सेवा में लग जायं। यदि नम्रता की जगह मद, अभिमान बढ़ता है, सदाचार-शिष्टाचार की जगह विलासिता, अनुशासन-हीनता तथा दम्भ, छल, कपट होता है, माता-पिता, देश-धर्म

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गुरुजन और भगवान में श्रद्धा-भक्ति की जगह नास्तिकता, उच्छृङ्खलता, आपस में वैमनस्य, राग-द्वेष आदि बढ़ता है तो सोचो तो सही, यह विद्या हुई कि अविद्या ? क्या इस प्रकार की विद्या पढ़ने वालों से वे अच्छे नहीं जो बेपढ़े होते हुए भी नीति मर्यादानुसार सदाचारपूर्वक खेती अथवा मजदूरी करते हैं ?

१४०

विचार करो—पत्थर पर उन्नीस चोटें मारीं पर वह टूटा नहीं; परन्तु बीसवीं चोट लगते ही टूट कर कई टुकड़े होगये, तो क्या वे पूर्व की उन्नीस चोटें व्यर्थ गयीं ? कदापि नहीं। वास्तव में बीसवीं चोट की सफलता उन्हीं उन्नीस चोटों पर निर्भर थी। इसी प्रकार, निराश मत होना, तुम्हारा नित्य का साधन चाहे अल्प ही क्यों न हो वह व्यर्थ नहीं जावेगा— यथार्थ में साधन की सिद्धि तो इसी नित्य प्रति के साधन पर ही निर्भर है परन्तु ध्यान रहे कि साधन का लक्ष्य हो भगवत्-प्राप्ति।

१४१

विचार करो—क्या राजा कभी यह कहता फिरता है कि 'मैं राजा हूँ, मैं राजा हूँ ?' कदापि नहीं। परन्तु क्या उसके तेज व भय से ही मन्त्री, कोतवाल आदि नौकर उसकी इच्छानुसार काम करने में तनिक भी लापरवाही करते हैं ? वे तो बेचारे हाथ जोड़े ताकते रहते हैं कि राजा साहब की कब क्या आज्ञा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होती है जो फौरन तामील की जाय। इसी प्रकार, याद रक्खो, "मैं ब्रह्म हूँ मैं ब्रह्म हूँ" कहने की आवश्यकता नहीं है इन महावाक्यों की धारणा करके इतने शक्तिमान बनजाओ कि मन-इन्द्रियाँ आदि सभी तुम्हारे वश में हो जायं और निरन्तर तुम्हारी आज्ञापालन में तत्पर रहें। यदि मन इन्द्रियाँ तुम्हारी आज्ञा की जगह भोगों की बाट जोहती रहती हैं तो समझ लो 'ब्रह्म' नहीं 'भ्रम' है। अभी खूब वैराग्य-अभ्यास बढ़ाओ – अन्तःकरण शुद्ध करने के लिये खूब निस्वार्थ सेवा करो।

१४२

विचार करो—पतिव्रता स्त्री क्या दिनरात अपने पति का स्मरण करती रहती है? नहीं नहीं। पतिव्रता स्त्री वह है जो अपने पति की प्रसन्नता के लिये सभी कार्य करे, यथा बच्चे का पालन-पोषण करे तो पति की प्रसन्नता के लिये, सास-ससुर की सेवा करे तो पति की प्रसन्नता के लिये, तथा भोजन पानी सफाई आदि घर का काम-काज करे तो पति की प्रसन्नता के लिये; आदि। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो, वास्तविक भक्त वह ही नहीं है जो दिन-रात जप-तप, पाठ-पूजा, ध्यान-आरती आदि ही करता है परन्तु वह है जो भगवान द्वारा दिये हुए स्त्री-पुत्र आदि तथा समस्त भूत प्राणियों की सेवा आदि कर्त्तव्यों का पालन तो करता है परन्तु करता है केवल अपने स्वामी-प्रियतम भगवान् की प्रसन्नता के लिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१४३

विचार करो—बुखार उतरने के बाद पथ्यकाल में रोगी को केवल मूँग की दाल का पानी दिया जाता है। उस पथ्यकाल में यदि कोई रोगी जिह्वा के क्षणिक स्वादवश गरमागरम जलेबी, कचौड़ी या आम की खटाई आदि खा ले; तो क्या वह रोग पुनः भयंकर रूप नहीं धारण कर लेगा ? अवश्यमेव। अतः यदि वह रोगी पूर्ण स्वस्थ होना चाहे तो जानते हैं उसे क्या करना चाहिये? जिह्वा के क्षणिक सुख देने वाले पदार्थों का परित्याग और योग्य डाक्टर-वैद्य के आदेशानुसार औषधि का सेवन। बस वह निश्चय ही रोग-मुक्त हो जायगा। इसी प्रकार, निश्चय रक्खो कूकर-शूकर आदि अनेक मनुष्येतर योनियों में दुःख उठाने के पश्चात यह मानव योनि जीव का पथ्यकाल है। मानव को विषय-भोग, भोग काल में भले ही रमणीय और सुखदायक प्रतीत होते हों, परन्तु परिणाम में अत्यन्त दुःखदायक होते हैं। अतः यदि सुख-शान्ति चाहते हो तो इन विषय-भोगों से वैराग्य करो तथा परमानन्द स्वरूप अविनाशी प्रभु की प्राप्ति का साधन करो ध्यान रहे साधन मनमाना न हो—वरन योग्य ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु का बताया हुआ हो।

१४४

विचार करो—केवल एम० बी० बी०एस० (M. B. B. S.) का सार्टीफ़िकेट अथवा डाक्टरी लम्बा कोट (Apron) व आला (Stethescope) पहिन लेने से ही कोई वास्तविक डाक्टर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं कहलाया जा सकता—वास्तविक डाक्टर तो वही होता है जो अपनी सेवा से रोगियों को रोगमुक्त कर देता है। इसी प्रकार याद रक्खो, केवल वेश-भूषा अथवा .टाइटिल व नामधारी हो जाने से ही आप भक्त अथवा ज्ञानी नहीं हो जाते; भक्त या ज्ञानी तो तभी बनोगे जब आपका जीवन प्रेममय व तत्त्वज्ञानमय बन जावेगा और तभी आप को वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

१४५

विचार करो—सिनेमा-हाल में बैठकर यदि आप पर्दे पर आने वाले भयंकर दृश्यों से दुखी होना नहीं चाहते तो जानते हैं आपको क्या करना चाहिये ?(१) परदे पर के दृश्य का सुधार करने का व्यर्थ पुरुषार्थ न करके फ़िल्म का सुधार करो अर्थात् बढ़िया सदाचार पूर्ण शिक्षाप्रद व भक्तिमयी फिल्म चढ़ालो अथवा (२) परदे की ओर से मुंह मोड़कर मशीनघर (Operator house) की ओर देखने लग जाओ और (३) परदे पर टार्च का प्रकाश डालने से तो वह भयंकर दृश्य दिखाई ही नहीं पड़ेगा; इसी प्रकार नोट कर लो, यदि जीवन में दुःख व अशान्ति से बचना चाहते हो तो (१) संसार को सुधारने का व्यर्थ पुरुषार्थ न करके अपने निजी कर्मों व भावनाओं का सुधार करो, अथवा (२) संसार की आसक्ति त्याग कर कृपासिंधु प्रभु की शरण ग्रहण कर लो—(वाणी मात्र से नहीं, अपने जीवन द्वारा) और (३) तत्त्वज्ञान से तो संसार का ही अभाव हो जायगा तथा रह जायगा केवल एक सर्वव्यापी परमात्मा ! फिर कौन दुःख,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कैसा दुःख, और किसको दुःख ? सर्वत्र शान्ति सदा शान्ति—सदा आनन्द।

१४६

विचार करो—खेत में जैसा बीज डाला जाता है, वैसा ही वृक्ष व फल-फूल प्राप्त होता है। क्या कभी ऐसा भी हो सकता है कि बीज तो बोये जायँ कड़वी मिर्च के और फल प्राप्त हो जायँ मीठे मीठे आम के ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, याद रक्खो, हमें सुख-दुःख, शान्ति अशान्ति आदि की प्राप्ति अपनी भावनानुसार ही होती है। यदि हमारे हृदय में यह शुभ भावना होगी कि सभी लोग सुखी हो जायँ तो हमें भी शुभ व मंगल की ही प्राप्ति होगी और यदि यह अशुभ भावना होगी कि दूसरों का सुख छीनकर सब हमारे पास आ जाय तो निश्चय है कि दुःख व चिन्ता ही हाथ लगेगी। अस्तु सुखी होना चाहते हो तो अशुभ भावनाओं का तत्काल त्याग कर दो।

१४७

विचार करो—यदि ड्राइवर शान्त और स्वस्थ हो तो वह ऊबड़-खाबड़ मार्ग में भी मोटर को ४०-५० मील प्रति घंटा की चाल से आसानी से ले जा सकता है परन्तु यदि वह खूब नशे में हो, ऊंघता हो या चंचल हो, तो बढ़िया सीमेंट रोड पर मोटर चलाते हुये भी क्या वह दुर्घटना (Accident) से बच सकेगा ? कदापि नहीं। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो; शरीर से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

काम न करने पर भी यदि आपका मन चंचल और अस्थिर है तो आपका जीवन अशान्त व दुःख पूर्ण बन जायगा। अतः मन को स्थिर व शान्त रक्खो, फिर दिन भर शारीरिक कार्य करते रहो खूब पुरुषार्थ करते रहो–जीवन सुख शान्तिमय बन जायगा।

१४८

विचार करो—कोई पिता घर में अपनी विवाह योग्य युवती कन्या को देख-देखकर तभी तक बड़ा दुःखी व चिन्तातुर रहता है, जब तक उसका विवाह नहीं कर देता। विवाह कर देने पर अर्थात् कन्या को योग्य वर के हाथ में सौंप देने के पश्चात् जब वही कन्या घर में आती है तो क्या उसे किसी प्रकार का दुःख होता है ? कदापि नहीं। इसी प्रकार निश्चय रक्खो, जब तक अपने सब कुछ को सर्वगुण-सम्पन्न, सर्वसमर्थ परमेश्वर को समर्पण नहीं कर दोगे; तब तक दुःख व चिन्ताएं मिट नहीं सकतीं और यदि अपना सब कुछ उनको समर्पण करने के पश्चात् उनका जानकर उनकी आज्ञानुसार (धर्मानुकूल) उन्हीं का सब कुछ प्रयोग भी करते रहे तो आपको दुःख या चिन्ता कदापि नहीं व्याप सकतीं। अतः अब विलम्ब केहि काज, सौंप दो 'उनको अपना सब कुछ' और बजाओ चैन की वंशी।

१४९

विचार करो—टेलीफोन का जब तक नम्बर नहीं मिला हुआ होता है, तब तक तुम चाहे कितना ही हेलो ! हेलो !! करते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रहो, क्या आपस में बातचीत हो सकती है ? कदापि नहीं। नम्बर मिल जाने पर चिल्लाकर बोलने की आवश्यकता नहीं रहती—धीमी आवाज से भी बात होजाती है। इसी प्रकार, विश्वास रक्खो, घट-घट वासी परब्रह्म परमात्मा से बातचीत करना चाहो तो उनके प्रति अनन्य प्रेम उत्पन्न कर लो, बस फिर जोर-जोर से चिल्लाने की आवश्यकता नहीं रहेगी—ज्यों ही आँखें मूंदकर ध्यान किया कि नम्बर जुड़ जायगा और बातचीत चालू हो जायगी। जानते हो, अनन्य प्रेम कब होगा ? जब अपनी चाह मिटाकर उनके अतिरिक्त अन्य किसी की ओर ताकना बन्द कर दोगे।

१२७

विचार करो—औषधि उसे कहते हैं जो रोग युक्त शरीर को रोग-मुक्त अर्थात् स्वस्थ बनादे—जो औषधि रोगी को अधिक रोगी अथवा प्राण-हीन बनादे उसका नाम औषधि क्योंकर हो सकता है ? उसे तो विष ही कहना चाहिये। इसी प्रकार, सोचो तो, शिक्षा का तात्पर्य है विद्यार्थी को सदाचारी, सद्गुणी, विवेकी, ब्रह्मचारी, आज्ञाकारी, सेवा-भावी, नम्र. सहनशील, सत्यवादी, सर्वप्रेमी निराभिमानी, मन-इन्द्रियों का शासक, बलवान, बुद्धिमान, क्षमावान, दयावान व परोपकारी बना देना। जिस शिक्षा से विद्यार्थी दुर्गुणी, कदाचारी, अज्ञानी, क्रोधी, कामी, मोही, ईर्षालु, झगड़ालू अनुशासनहीन, मिथ्यावादी, अभिमानी, कटुभाषी, हिंसक, उद्दंड, स्वच्छन्द, पर-अपकारी तथा वासनाओं का गुलाम बन जाता हो, वह शिक्षा, शिक्षा क्योंकर हुई—वह तो निश्चय ही अविद्या हुई।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विद्यार्थियो तुम्मारा नाम 'विद्यार्थी' तभी सार्थक होगा जब तुम उपरोक्त दुर्गुणों का परित्याग कर सद्गुणी बनोगे और तभी तुम महान कहलाओगे।

१५१

विचार करो—घृत के पीपे प्राप्त कर लेने कठिन नहीं, कठिन है उनको खा लेना तथा पचा लेना। इसी प्रकार, याद रक्खो, बहुत सी पुस्तकें (सत्-साहित्य) संग्रह कर लेना कठिन नहीं है, कठिन है उनको पढ़ लेना और पढ़ लेने से भी कठिन है उनमें से दो-चार विचारों के अनुकूल अपना जीवन बना लेना। पढ़ लेने का सदुपयोग तभी होगा जब तुम्हारा अमली जीवन श्रेष्ठ बन जायगा अर्थात् जीवन सादा, भवनाएँ शुद्ध, चरित्र महान् तथा विचार उच्च हो जायँगे।

१५२

विचार करो—मदारी द्वारा बनाये हुए जादू के रुपये दिखने व गिनने में सत्य प्रतीत होते हैं परन्तु क्या कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति उन मदारी के १००) रुपयों के बदले में १) रुपया भी देने को तैयार हो सकता है ? कदापि नहीं। क्योंकि वह जानता है कि ये सब जादू के रुपये हैं—प्रतीति मात्र हैं, सच्चे नहीं। इसी प्रकार विश्वास रक्खो संसारिक मन-इन्द्रियों के भोग, भले ही रमणीय, सुखरूप तथा सत्य प्रतीत होते हों, वे वास्तव में मिथ्या-माया रूप ही हैं। इन माया के भोगों के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लिये जो अपने अमूल्य श्वासों को खो रहे हैं वे निश्चय ही अज्ञानी हैं।

१५३

विचार करो—बिल्ली अपने मुँह में चूहे को भी पकड़ती है और अपने नन्हें बच्चे को भी। परन्तु जानते हो दोनों को पकड़ने में कितना अन्तर है? जब वह अपने बच्चे को पकड़ती है तो क्या उसके एक भी दाँत लग पाता है? कदापि नहीं। और जब वह चूहे को पकड़ती है तो क्या उसके प्राण नहीं निकल जाते? अवश्यमेव। इसी प्रकार, याद रक्खो, मृत्युकाल में धर्मात्मा-भक्तों को तो ऐसा लगता है मानो वे अपने काल-स्वरूप भगवान पिता की गोद में बैठे हैं परन्तु पापी लोग अपने आप को यमराज के फाँस में यातना भोगते हुए अनुभव करते हैं। अतः अन्तकाल के दुःख से बचना चाहते हो तो पाप व पापियों का संग छोड़ो नहीं तो—

"अन्त समय पछिताओगे जब यम पकरैंगे बाँह"

१५४

विचार करो—स्वर्गाश्रम (ऋषीकेश) जाने वाले व्यक्ति वहाँ की गर्म दुपहरी में जब गंगाजी के तट पर पहुँच जाते हैं तो उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव होता है कि वह गर्म हवा अब गंगा-जल के स्पर्श से शीतल बन गई है। और उस समय यदि कोई गंगा जी में घुस कर गोते लगावे तो उसी समय उसका तन-मन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शीतलता से भरपूर होजायगा। इसी प्रकार निश्चय करो कि भगवती गंगा के पुनीत तट की भाँति तो वे संत सद्गुरु हैं जिनके पावन चरणों का सान्निध्य पाकर संतप्त प्राणी शान्ति का अनुभव करता है और यदि वह उनकी उपदेशामृत रूपी पुण्य-सलिला में आकण्ठ मग्न हो जाय अर्थात् अपने जीवन में उनके उपदेशों की धारणा करले तब तो फिर यह दुःखालय संसार भी उसके लिए आनन्द का धाम बन जायगा।

१५५

विचार करो—मिट्टी तो कपड़ों को गन्दा करती है, किन्तु धोबी, कपड़ों को धोने से पहिले उन्हें मिट्टी (रेहुआ) में ही सानता है। देखने वाला तो यही कहेगा कि यह धोबी मूर्ख है. इसने कपड़ों को और भी गन्दा कर डाला। किन्तु जब कुछ देर बाद वह धोबी उन कपड़ों को पाटे पर पटकता है तो वही कपड़े स्वच्छ और उजले बन जाते हैं। उसी मिट्टी (रेहुआ) के संसर्ग से वह मैले कपड़े उजले बन गये। इसी प्रकार निश्चय करो—निष्काम, कर्मयोगी अथवा परहित-निरत संतों के व्यवहार-कार्य भी उसी रेहुआ मिट्टी के समान है जिसके प्रभाव से वह अपने साथ-साथ अनेकों के अन्तःकरणों को शुद्ध बनाकर भगवान् की ओर लगा देते हैं। सेवा, परोपकार, दान आदि की भावनाओं द्वारा सत्संग-प्रेमियों और भक्तों के जीवन को परमार्थमय बनाते हुये उनके हृदयों को एक प्रकार से "परमार्थ-निकेत" ही बना देते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१५६

विचार करो—ग्रीष्म-काल में, जब हलवाई की भट्टी से निकली हुई उष्ण वायु की भाँति, दाहक लू के तीव्र झोंकों से शरीर झुलसने लगता है तब धनी व्यक्ति अपने कमरे में खस की टट्टियां लगाकर उस समय भी शीतलता का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार निश्चय करो कि अपने अन्तःकरण में अध्यात्म-वाद रूपी खस की टट्टी लगा लेने से माया की प्रचंड दाहकता और ज्वालामयी जलन भी उससे टकरा कर आप के लिये शीतल बन जायगी। अर्थात् तब घोर प्रतिकूलता में भी आप को भगवत्कृपा की प्रत्यक्ष झाँकी मिलने लगेगी।

१५७

विचार करो—पाप-ताप नाशिनी, कल-कल नादिनी गंगा-तट के वासी, गंगा जी की महिमा उस रूप में अनुभव नहीं कर पाते जैसी सहस्रों मील की दूरी से आने वाला गङ्गा मैया का भावुक भक्त करता है। इसीलिये ऐसे भक्तों को ही प्रायः इच्छित फल की प्राप्ति हो जाती है; किन्तु तट-वासी; वैसी भावना न रहने के कारण वंचित रह जाते हैं। इसमें क्या गंगा जी का दोष है ? कदापि नहीं। गुण-दोष तो अपनी भावना में ही सन्नि-हित हैं। इसी प्रकार निश्चय करो कि संत-सद्गुरु के श्रीचरणों का सान्निध्य पाकर भी जिनकी भगवद्भावना नहीं है उन्हें वह अनुभूति कदापि नहीं हो सकती जो उनसे सहस्रों मीलों की दूरी पर रहने वाले भावुक गुरु-भक्त को सदैव होती रहती है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१५८

विचार करो—वर्षा की घनघोर झड़ी में जब प्रकृति सरस बन जाती है और हरियाली चारो ओर सर्वत्र छा जाती है, तब ग्रीष्म की ज्वाला से क्लान्त मनुष्य, पशु और पक्षी आनन्द की मस्ती में झूमने लगते हैं किन्तु आक और जवासा के पौदे वर्षा में झुलस कर नष्ट हो जाते हैं। उनपर तो पावस-ऋतु का प्रभाव उल्टा ही पड़ता है। ठीक इसी प्रकार निश्चय करो सन्त महापुरुषों के उपदेशों की पीयूषमयी अमृत-वर्षा से परिप्लावित, शुद्ध और भावुक अन्तःकरण तो सच्चिदानन्द की मस्ती में झूमने लगता है अर्थात अपने गन्तव्य लक्ष्य को जानकर उस ओर अग्रसर होता है किन्तु जिनके अन्तःकरण विषय वासनाओं से कलुषित हैं उन पर सन्तों के उपदेशों का भी उल्टा प्रभाव पड़ता है। अर्थात वे उनके उपदेशों की विपरीत आलोचनाओं से, पाप के बोझ को बढ़ाकर अपना लोक और परलोक स्वयं ही नष्ट कर डालते हैं।

१५९

विचार करो—जब लगातार वर्षा की झड़ी लग जाती है, तब सभी पशु, पक्षी और मनुष्य अपने कोटरों तथा निवास में आराम से बैठकर वर्षा बन्द होने की बाट देखते हैं। किन्तु मूर्ख बन्दर, पानी और शीत से ठिठुर कर इधर-उधर शरीर रक्षा करने की असफल चेष्टा करता है। उस समय उसे ग्लानि और दुःख होता है कि यदि औरों की तरह मैंने भी अपने रहने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का स्थान बनाया होता तो आज ऐसी मुसीबत क्यों झेलनी पड़ती ? जब वर्षा-ऋतु समाप्त हो जाती है तब पुनः इस बात को भूल जाता है और प्रति वर्ष दुःख झेलते हुये भी उसे चेत नहीं आता। ठीक इसी प्रकार निश्चय करो कि यदि अपने भावी दुःखों से सदैव केलिये मुक्त होना है तो समय से पहिले ही सावधान होकर परलोक का सुधार कर लेना चाहिये अन्यथा "पुनरपि जननं पुनरपि मरणं" की दुखद चक्की में अनन्त काल तक पिसना पड़ेगा।

१६०

विचार करो—छोटे-छोटे नन्हें-मुन्ने बालक को जब विद्यारंभ कराया जाता है तो उसे मिठाई और खिलौने का लोभ दे देकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विद्या में रुचि करा दी जाती है। यदि वह ठीक ढंग से विद्याध्ययन करता है ती उसके अभिभावक प्रसन्न भी होते हैं और मिठाई खिलौने भी देते हैं। किन्तु यदि वही बालक आगे चलकर कुसंगति के प्रभाव से, पढ़ने से जी चुराता है, इधर-उधर भागा-भागा फिरता है तो फिर उसके माता-पिता कठिन ताड़ना भी करते हैं। तब वह भयभीत होकर पढ़ने लिखने में मन लगाता है। माता-पिता उसकी ताड़ना इसलिये करते हैं कि हमारा बालक शिक्षित होकर संसार की ठोकरों से बचा रहे। ठीक इसी प्रकार सकाम साधक का मन प्रारम्भ में तो पूजा पाठ में खूब लगा रहता है किन्तु आगे चलकर प्रायः उधर से भागने लगता है। उस समय सावधान होकर सन्त-संग का सहारा लेकर मन को "जन्म-मृत्यु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जरा और व्याधि" के भयंकर कष्टों से भयभीत करते हुये, बर-बस भगवत्भजन में लगाने का निश्चय करना चाहिये। अन्यथा एक अशिक्षित मानव की भाँति हमारा यह भगवद्-विमुख मन, जन्म-जन्मान्तरों में, अनन्त काल तक ठोकरें ही खाता रहेगा।

१६१

विचात करो—नगर से अनेक प्रकार का सामान खरीदकर उसे एक बड़ी गठरी में एक ग्रामीण भाई ने बाँधा। गाँव से वह अपनी घोड़ी पर चढ़ कर आया था। उसने सोचा घोड़े पर अधिक बोझ न पड़े, इसलिये गठरी को सर पर रखकर घोड़े पर बैठा। मार्ग में लोगों ने पूछा सर पर बोझ क्यों रक्खे हो? वह बोला—"घोड़ी पर अधिक बोझ न होजाय इसलिये" उसकी मूर्खता पर दर्शक खिलखिला कर हँस पड़े—ठीक इसी प्रकार हम भी उसी मूर्ख के समान अपने मन और मष्तिष्क पर सहस्रों चिन्ताओं का भार लादे रहते हैं, सोचते हैं कि अमुक काम को यदि मैं नहीं करूंगा तो कैसे होगा? इत्यादि। वास्तव में तो हमें यह निश्चय करना चाहिये कि जिस प्रभु ने गर्भ में हमारी रक्षा की थी, आज भी कर रहा है, आगे भी सदैव करता रहेगा। हमारा समस्त भार तो उसी दयामय की कृपा पर आधारित है। तो फिर उस मूर्ख सवार की तरह अपने सिर पर चिन्ताओं का भार लाद कर व्यर्थ ही अपनी गर्दन क्यों तोड़ते रहते हैं! जिसे अखिल ब्रह्माण्ड की चिन्ता है उसी के चरणों में अपनी समस्त चिन्ताएँ अर्पित कर बन्धन से मुक्त हो जाने की चेष्टा करनी चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विचार करो—अच्छे तैराक भी बरसात की चढ़ी-बढ़ी नदी में जब तैरते हैं तो अपनी छाती पर तूँबा बाँध लेते हैं, जिससे उन्हें डूबने का भय नहीं रहता। इसी प्रकार हम अपने साधन में चाहे जितना आगे बढ़ चुके हों, संसार हमें चाहे सिद्ध ही क्यों न समझने लगा हो। यदि हमारे अन्तःकरण में निरभिमानता और भगवत्कृपा सम्पादन रूपी दो तूंबे बंधे रहने का दृढ़ निश्चय रहेगा तो फिर इनके सहारे से अवश्य ही हम डूबने के भय से मुक्त होकर भव-सागर से उस पार पहुँच जायगे।

१६२

विचार करो—चार छः मास का अबोध शिशु यह नहीं जानता कि उसकी मैया ने उसके सुख के निमित्त किस समय कहाँ और कैसे प्रबन्ध कर रक्खे हैं? ठीक समय पर उसे दूध मिलता है ठीक समय पर उसे स्वीटर, मोजे, बनियान पहनने को मिल जाते हैं। बालक तो चारपाई पर या माता की गोद में मल-मूत्र करने के अतिरिक्त और कुछ जानता नहीं। ठीक इसी प्रकार निश्चय करना चाहिये कि सीमित बुद्धि होने के कारण हम भी उस दयामय प्रभु के अबोध शिशु हैं। उनकी महती और अहैतुकी कृपा से ही संसार-यात्रा चल रही है। हमारे कर्त्तव्य और भविष्य की चिन्ता उसी करुणासागर को है उसकी प्रेरक शक्ति से ही निमित्त बनकर हमारे द्वारा शुभ कार्य बन जाते हैं। अपनी कोई निजी शक्ति नहीं है। बालक जैसे माता की गोद में मल-मूत्र करता है तो भी माता उसको प्यार ही करती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है । इसी प्रकार पाप-पंक में आकंठ फंसे होने पर भी वे दयामय प्रभु अपनी पाप-ताप हारिणी दृष्टि हम पर बनाये रहते हैं ।

१६३

विचार करो—शीरे की मिठास में आसक्त वर्र (ततैया) यदि किनारे पर बैठकर उसका रसस्वादन कर ले तो कोई हानि नहीं, किन्तु जब वह उस में घुस कर, शीरे में अपने पंख भी डुबा लेती है, तो फिर अपनी जान से भी हाथ धो बैठती है । इसी प्रकार निश्चय करो कि यह मानव देहधारी जीव यदि माया के भोगों में लिप्त न होकर शास्त्रानुमोदित भोगों का ही भोग करे तो कदापि उसकी दुर्गति नहीं हो सकती ।

१६४

विचार करो—चतुर और स्वस्थ सारथी लगाम के सहारे से, गाड़ी में जुते घोड़ों को भीड़ से पूर्ण राजमार्ग पर सावधानी से चलाता हुआ गन्तव्य स्थान पर पहुँच कर सुख की साँस लेता है । इसी प्रकार निश्चय करो—सतोगुणी बुद्धि रूपी लगाम से अपने मन और इन्द्रियों के घोड़ों को इस संसार में सावधानी से चलाने वाला मानव देहधारी जीव अपनी आत्मा को परमात्मा तक पहुँचा कर आनन्दमय होजाता है ।

१६५

विचार करो—धूम्र की उत्पत्ति अग्नि से ही होती है । जब वही धुआँ बादल बन कर बरसता है तब अपनी जन्मदात्री अग्नि को ही बुझा देता है । इसी प्रकार निश्चय करो—अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

से ही उत्पन्न होने वाली आसुरी वृत्तियाँ विषयों की अनुकूलता पाकर अपने को ही नष्ट कर डालती हैं।

१६६

विचार करो--धनी-मानी जन अपनी सुरक्षा के लिये बन्दूक, तलवार आदि अस्त्रों को घर में छिपाकर रखते हैं और आततायी तथा हिंसक पशुओं से अपनी रक्षा करने के अवसर पर ही उनका प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार निश्चय करो---अपने अन्तःकरण में छिपा हुआ क्रोध भी एक घातक अस्त्र है, इसका प्रयोग भी अपने में छिपे हुए अवगुणों के लिये ही करना चाहिये।

१६७

विचार करो—अपनी आँख में लगा हुआ सुरमा दर्पण की सहायता के विना दिखलाई नहीं पड़ता। हाथ में दर्पण लेते ही स्पष्ट दिखाई देता है इसी प्रकार निश्चय करो---हृदय मन्दिर के निवासी भगवान, सद्‌गुरु-कृपा रूपी दर्पण के अवलम्ब से ही दिखाई देंगे।

१६८

विचार करो---किसी मकान के भीतर कमरे में यदि प्रकाश होरहा हो तो उसकी खिड़कियों के शीशों और दरवाजों से छन कर वह प्रकाश बाहर भी प्रतीत होगा। मकान के समीप खड़ा होने वाला व्यक्ति सहज ही अनुमान कर लेगा कि इसके भीतर प्रकाश होरहा है। इसी प्रकार निश्चय करो---जब मनुष्य के अन्तःकरण में भगवत्प्रेम की दिव्य ज्योति जगमगाने लगती है तो उसका चमत्कार शरीर की समस्त इन्द्रियों में भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकट होने लगता है और उसके निकट सम्पर्क में आने वाले भी उस छलकते हुये प्रेम की छटा में आनन्द का अनुभव करते हैं—

१६१

विचार करो—यात्रा में जाने से पहिले कोई यात्री, जैसे अपने सामान को सँभाल-सँभाल कर ट्रंक में रखता है। बिस्तर को सावधानी से बाँधता है, फिर सोचता है कि अब कोई वस्तु छूट तो नहीं गयी। इस प्रकार जब वह अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिये ट्रेन में सवार होता है तो मार्ग में उसे कोई कठिनाई नहीं होती और निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच कर अपने साथ लाये हुए सामान से उसे आराम मिलता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति असावधानी और लापरवाही से उलटा सीधा सामान ट्रंक में भर कर, जैसे तैसे यात्रा में जाता है तो उसे मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और वहाँ पहुँच कर जब किसी वस्तु के अभाव में कष्ट होता है तो वह पछताया करता है कि असावधानी के कारण अमुक-अमुक वस्तु छूट गई। ठीक इसी प्रकार निश्चय करो–जीवन रूपी यात्रा में यदि यह मानव-देहधारी जीव, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य रूपी सामान को सावधानी से रखकर परलोक की यात्रा करेगा तो उसे यहां और वहां दोनों जगह सुख और शान्ति की ही अनुभूति होगी; और यदि वह अपने पाथेय के प्रति उदासीन और असावधान रहा तो उसे इस लोक और परलोक, दोनों में कष्ट, अभाव और अशान्ति का ही सामना करना पड़ेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१७०

विचार करो—सर्पों का खेल दिखाने वाला, साँप के विष के दाँत निकाल कर अपनी पिटारी में रख लेता है। तमाशा देखने वाले सर्प को देख कर भयभीत होते हैं किन्तु सपेरा तो सर्पों को अपने गले में माला की भाँति पहन लेता है। निर्भय हो कर सर्प से वह मनमाना खेल खेलता है। सांप उसे कोई कष्ट नहीं पहुँचा पाता। इसी प्रकार निश्चय करो अपनी मन रूपी पिटारी से वासनाओं के सर्प को निर्विष कर देने से आप निर्भय होकर इस संसार में रहेंगे। व्यवहार के समस्त कार्य करते हुए भी यह संसार फिर दुखदायी नहीं रहेगा।

१७१

विचार करो—द्रुतगामिनी ट्रेन के ड्राइवर दूर से ही सामने की लाइन पर ध्यान रखते हैं। कुछ गड़बड़ देखते ही सावधानी से ब्रेक लगा देते हैं। ड्राइवर यदि असावधान हो और लाइन किसी ने उखाड़ दी हो तो उसके साथ-साथ सैकड़ों व्यक्तियों की जान पर आ बनती है। ठीक इसी प्रकार जो लोकोत्तर प्राणी हैं अथवा जिनके प्रति जनता की श्रद्धा और विश्वास है; वे संसार में अपना क़दम फूंक-फूंक कर रखते हैं। उनके द्वारा कोई ऐसा अनैतिक कार्य नहीं हो सकता जिससे सहस्त्रों हृदयों की श्रद्धा को ठेस लगे और प्रेममयी भावनायें घृणा में परिवर्तित होजावें।

१७२

विचार करो—ट्रेन का गार्ड, स्टेशन मास्टर से लाइन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्लीयर का संदेश पाकर तब ड्राइवर को हरी झंडी हिलाकर आगे चलने का संकेत करता है। गार्ड की सीटी और झंडी सुने और देखे बिना ड्राइवर कदापि ट्रेन को छोड़ नहीं सकता। यदि छोड़ दे तो उससे जवाब तलब हो सो अलग, वह तो नौकरी से भी बर्खास्त किया जा सकता है। इसी प्रकार भगवान् रूपी स्टेशन मास्टर की आज्ञाओं को शास्त्र और संत रूपी गार्ड सीटी तथा झंडी रूपी आदेश और उपदेश से, मनुष्यों को उनकी जीवन यात्रा रूपिणी ट्रेन को सावधानी से चलाने का संकेत करते रहते हैं। उन संकेतों पर जो चलते हैं वे ही सुखी रहते हैं, किन्तु जो उनकी परवाह नहीं करते उन्हें नाना प्रकार के दुखों को विवश होकर भोगना पड़ता है।

१७३

विचार करो—फोटो खिंचते समय जैसी आकृति होती है, वैसा ही चित्र खिंच जाता है। यदि आपकी मुखाकृति प्रसन्न और खिली हुई है तो देखने वाले यही कहेंगे कि यह फोटो बहुत सुन्दर आया और यदि उस समय आप की आकृति चिन्ता और दुख से मलीन रही तो सभी उस फोटो को देखकर आलोचना करेंगे। ठीक इसी प्रकार याद रक्खो एक अदृष्ट शक्ति सदैव ही आपके मन का फोटो खींचती रहती है। आप के मन में यदि कुसंकल्प और कुभावनाएँ बन गयीं तो निश्चय ही आप का भविष्य दुःखमय और अशान्त बन जायगा। शारीरिक क्रिया का नहीं वरन मानसिक भावनाओं का फल ही सुख अथवा दुःख के रूप में हमारे सामने आता रहता है। अतएव प्रतिक्षण अपने मन को शुभ संकल्पमय बनाते रहो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१७४

विचार करो—सहस्रों की संख्या में छपने वाली किसी पुस्तक का प्रूफ यदि सावधानी से नहीं देखा जाता है तो उस प्रूफ की अशुद्धियाँ सभी पुस्तकों में छप जाती हैं। ठीक इसी प्रकार विश्वास कीजिये, आपकी साधारण सी भूल का प्रभाव अनेकों पर अवश्य पड़ता है। इसलिये आप अपनी दिनचर्या और व्यवहार में अत्यन्त सावधानी रक्खें क्योंकि अनेक व्यक्तियों का जीवन शुद्ध और निर्मल बनाने अथवा बिगाड़ने के जिम्मेदार आप ही हैं।

१७५

विचार करो—बन्दर को पकड़ने वाले, किसी छोटे मुख वाले पात्र को, पृथ्वी में गाड़कर उसमें चने भर देते हैं और पात्र का मुख खुला रखते हैं। उस पात्र में भरे हुये चने को निकालने के लिये बन्दर अपने हाथ डालता है और मुट्ठी बाँधकर चने निकालने की चेष्टा में बेचारा स्वयं ही पकड़ा जाता है। यदि वह वर्त्तमान के सुख की ओर ध्यान न देकर मुट्ठी खोल देता तो बन्धन में नहीं पड़ता। ठीक इसी प्रकार अज्ञानी जीव वर्तमान के विषय-सुखों में लिप्त होकर माया के बन्धन में जकड़ जाता है। यदि वर्त्तमान के सुखों से मुख मोड़कर परिणाम के सुख को हम अपने जीवन का लक्ष्य बनालें तो निस्संदेह समस्त बन्धनों से मुक्त होकर वास्तविक आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं।

१७६

विचार करो—एक वेश्या को प्रसन्न रखना असंभव है और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यदि कोई उसे प्रसन्न कर भी ले तो वह उसे नर्क के द्वार के अतिरिक्त और क्या देगी? इसी प्रकार इस संसार में सबको प्रसन्न रखना बालू से तेल निकालने के समान असंभव है। यदि अधिक से अधिक लोगों को प्रसन्न कर भी लिया तो उसके बदले में आपको धन, मान और प्रतिष्ठा के अतिरिक्त और क्या मिलेगा? और यह सभी बातें तो एक साधक को पतन के गंभीर गर्त में ही गिरा देने वाली हैं।

१७७

विचार करो—एक छोटे केमरा के छोटे लेंस (शीशा) में कई आदमियों का फोटो ग्रुप खिंच जाता है किन्तु तम्बोली के बहुत बड़े शीशे के सामने खड़े होने पर उसमें एक व्यक्ति का भी चित्र नहीं खिंच पाता। इसका कारण है कि लैंस के पीछे रूप का प्रतिबिम्ब उतारने वाली प्लेट लगी है और तमोली का शीशा प्लेट रहित है। ठीक इसी प्रकार सांसारिक भोगों के प्राप्त होने पर भी यदि मन निर्लिप्त रहे तो जन्म-मरण की रीलें नहीं खिंच पावेंगी।

१७८

विचार करो—ट्रेन में जाने वाला मुसाफिर, पहिले से ही उसके छूटने का समय जान लेता है और समय से पूर्व ही स्टेशन पर पहुँचकर ट्रेन की प्रतीक्षा करता है। यदि वह समय पर स्टेशन नहीं पहुँचता तो ट्रेन छूट जाने पर उसे दुख होता है, फिर अपने गन्तव्य स्थान पर न पहुँचने का उसे पश्चात्ताप होता है। इसी प्रकार निश्चय करो हमारे जीवन की गाड़ी भी एक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दिन छूटने वाली है, अनन्त यात्रा की ट्रेन, देव-दुर्लभ मानव-शरीर रूपी जंकशन पर पहुँच चुकी है। श्वासों का सिगनल प्रतिक्षण सावधान कर रहा है। अभी से यदि तैयारी नहीं हुई तो एक दिन यह ट्रेन छूट जायगी और तब पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगेगा।

१७६

विचार करो—जिस प्रकार की सीन सीनरी के दृश्य, केमरा-मैन उतारता है वही दृश्य चल-चित्र (सिनेमा) के पर्दे पर दिखाई देते हैं। दर्शक उन्हें देखकर हो मनोरंजन और हर्ष एवं विषाद का अनुभव करते हैं। ठीक इसी प्रकार मनुष्य स्वयं अपने भावी जीवन का निर्माण करता है। यदि शुभ संकल्पों के अनुसार उसने अपनी दिनचर्या बनायी तब तो उसका भविष्य सुखमय बनेगा और यदि उसके विपरीत कुसंकल्पों के आधार पर चला तो निश्चय ही उसका जीवन दुःख और कष्टों से भर जायगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जीवन और जागृति का सन्देश देकर नव-स्फूर्ति का संचार करने वाली श्री दैवी सम्पद् मंडल द्वारा प्रकाशित अनुपम पुस्तकें—

रचयिता—पूज्य श्री स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज

१—सदाचार दोनों भाग ।)
२—दैवीजीवन सोपान ।)
३—ब्रह्मचर्य साधन ।)
४—भक्ति के नव साधन ।)
५—सुखद लोक यात्रा ।=)
६—साधन सुधा ।)
७—साधन प्रदीप ।)
८—नव महाव्रत ।।)
९—हम दिग्विजयी कैसे हों? १।)
१०—आदर्श गृहस्थाश्रम ।।।)
११—परमार्थ पथ ।।।=)
१२—परलोक की बातें दोनों भाग १)
१३—साधक पथ प्रदर्शक ।।।)
१४—रामराज्य की ओर ।।–)
१५—नित्य उपयोगी संग्रह =)।।
१६—योगासन, प्राणायाम और सूर्यनमस्कार ।।।)
१७—तुलसी वचनामृत ≡)
१८—परमार्थ चित्रावली १)
19—Sadhan Pradeep-/5/-
20—Nine Fundamentals of Spiritual Life 1/-/-
21—Towards Heaven 1/8/-
22—Spiritual Victory and How to win it 2/ /-
23—Road to the Divine-Goal 1/8/-
24—Science and Method of maintaining Brahmacharya -/7/-

रचयिता—पूज्य श्री स्वामी भजनानन्द जी महाराज

२५—परमार्थ मणिमाला (पाँचो भाग) १।)
२६—परमार्थ-बिन्दु "आनन्द" ।=)
२७—सुख-दर्शन— स्वामी प्रकाशानन्द जी महाराज, बिठूर १।)
२८—शान्ति-दर्शन " " " १।।)
२९—योग रसायन— स्वामी सनातनदेव जी महाराज १)

वाणी विशारद कीर्तन कलानिधि श्री 'मञ्जुल' जी की पुस्तकें

३०—समस्या सुमन दोनों भाग ।≡)
३१—संकीर्तन सुधा ।)
३२—प्रेमी प्रह्लाद =)
३३—भक्त भावना ।=)
३४—वामन बावनी ≡)
३५—भगवान् की ओर (सचित्र भक्त गाथायें) श्री रामस्वरूप जी गुप्त १।)

पुस्तकें मिलने का पता:—

प्रकाशन विभाग, पो० मुमुक्षु-आश्रम (शाहजहाँपुर)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दैवी सम्पद् मंडल द्वारा प्रकाशित अनुपम पुस्तकें—

रचयिता—पूज्य श्री स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज

१—सदाचार दोनों भाग ।)
२—दैवी जीवन सोपान ।)
३—ब्रह्मचर्य साधन ।―)
४—भक्ति के नव साधन ।)
५—सुखद लोक यात्रा ।=)
६—साधन सुधा ।)
७—साधन प्रदीप ।)
८—नव महाव्रत (नवीन सं०) ॥)
९—हम दिग्विजयी कैसे हों? १।)
१०—आदर्श गृहस्थाश्रम ॥।)
११—परमार्थ पथ ॥।=)
१२—परलोक की बातें २ भाग १।)
१३—साधक पथ प्रदर्शक ॥।)
१४—सदाचार शिक्षा ।=)
१५—रामराज्य की ओर ॥―)
१६—नित्य उपयोगी संग्रह =)॥
१७—योगासन, प्राणायाम और सूर्य नमस्कार ॥।)
१८—तुलसी वचनामृत ≡)
19—Yoga asan 1/4/-
20—Sadhan Pradeep -/5/-
21—Nine Fundamentals of Spiritual Life 1/-/-
22—Towards Heaven 1/8/-
23—Spritual Victory and How to win it 2/-/
24—Road to the Divine Goal 1/8/-
25—Science and Method of maintaining Brahmacharya -/7/-

२६—परमार्थ मणिमाला (पाँचों भाग) *पूज्य श्री स्वामी भजनानन्द जी* १।)
२७—परमार्थ-बिन्दु (दोनों भाग) "आनन्द" सजिल्द १।)
२८—सुख-दर्शन—*स्वामी प्रकाशानन्द जी महाराज, बिठूर* १।)
२९—शान्ति-दर्शन ” ” ” १॥)
३०—भक्ति-दर्शन ” ” ” १)
३१—योग रसायन—*स्वामी सनातनदेव जी महाराज* १)

वाणी विशारद कीर्तन कलानिधि श्री 'मञ्जुल' जी की पुस्तकें

३२—समस्या सुमन दोनों भाग ।≡)
३३—संकीर्तन सुधा ।)
३४—प्रेमी प्रह्लाद =)
३५—भक्त भावना ।=)
३६—वामन बावनी ≡)
३७—भगवान् की ओर (सचित्र भक्त गाथायें *श्री रामस्वरूप जी गुप्त* १।)
३८—काव्य मणिमाला (कविता) १) ३९—मधुर माधुरी दोनों भाग २)

मिलने का पता:—प्रकाशन विभाग, पो० मुमुक्षु-आश्रम (शाहजहाँपुर)
तथा—परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश (हिमालय)

मुद्रक व प्रकाशक—श्री स्वामी सदानन्द जी, परमार्थ प्रेस, शाहजहाँपुर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri